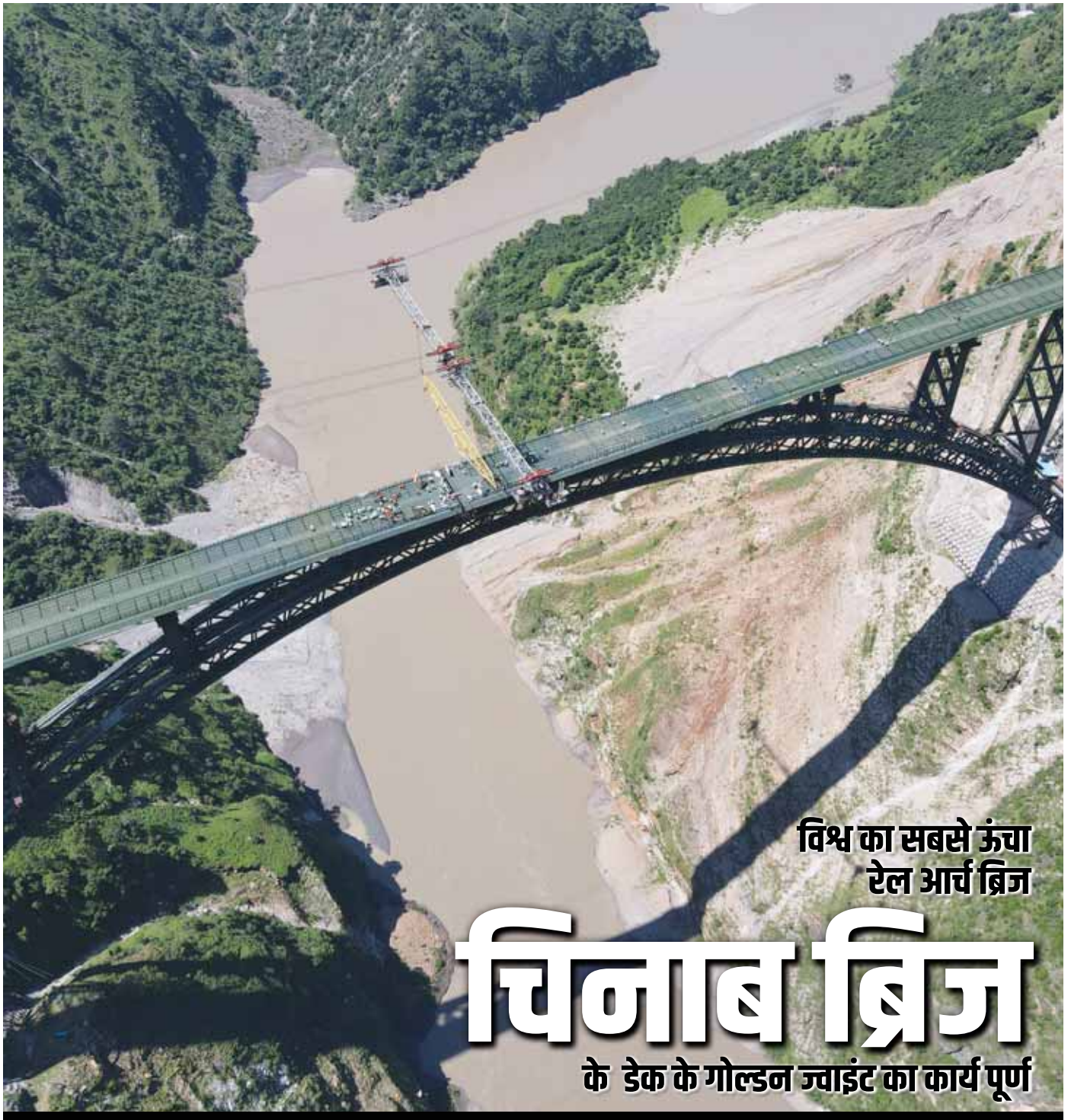
भारतीय रेल

सितम्बर 2022

मूल्य ₹20



विश्व का सबसे ऊंचा रेल आर्च ब्रिज

चिनाब ब्रिज

के डेक के गोल्डन ज्वाइंट का कार्य पूर्ण



CWG 2022 के हमारे पदक विजेताओं से मुलाकात



जिरिबाम-इम्फाल परियोजना



तिरंगे के रंगों से रौशन रेल भवन

AAL®

Autometers Alliance Ltd

Energy & Efficiency / Safety & Reliability



POWERING THE **RAIL TRANSPORT** EFFICIENTLY AND INTELLIGENTLY

DATA ACQUISITION & CONTROL DEVICE

Onboard Measurement Devices



Tachograph System for Electric, Diesel Locomotives, EMU, MEMU & DMU



Active Speed Sensor for Electric Locomotives



Opto Electronic Pulse Generator for Electric, Diesel Locomotives, EMU, MEMU & DMU



Hotel Load Current Sensor for Electric Locomotives



Primary Current Sensor for Electric Locomotives



Aspiration Smoke Detector for Coaches

Onboard Control Devices



Driver Display Unit LCD Displays for Electric Locomotives



Vigilance Control Device for Electric Locomotives



Fire Detector Equipment for Electric Locomotives



Diagnostics Terminal LCD Displays for Electric Locomotives



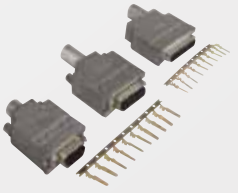
Event Recorder for Electric, Diesel Locomotives & EMUs

Electrical Connectors





Circular Connectors for Onboard & Stationary Traction



D Type Connectors for Onboard & Stationary Traction

mktre@autometers.com | C-63, Sector-57, Noida - 201 307 (U.P.) India

ISO 9001:2015 I ISO 14001:2015 I ISO 45001:2018

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

आरंभ : 1960 | वर्ष : 63 | अंक : 02 | राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित पत्रिका | सितम्बर-2022 | मूल्य : ₹20

संपादक मंडल

श्री विनय कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

श्री मोहित सिन्हा
सदस्य (वित्त), रेलवे बोर्ड

श्री आर.एन. सिंह
सचिव, रेलवे बोर्ड

श्री अमिताभ शर्मा
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार

संपादक
योगेश अवस्थी

संपादकीय कार्यालय

संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क

व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
टेलीफोन: 011-47845378, 47845089
bmpr310rb@gmail.com

संपादन सहयोग

रणमत सिंह

आवरण

चिनाब ब्रिज के डेक के गोल्डन ज्वाइंट के समय का एक दृश्य

फॉलो करें

Twitter : @bhartiyarailrb

वार्षिक सदस्यता शुल्क (ऑफलाइन)

सर्वसाधारण -₹250
रेलकर्मियों के लिए -₹200

विदेश में

सी-मेल द्वारा -₹1,250
एयर-मेल द्वारा -₹2,500

एक प्रति-₹20
वार्षिक विशेषांक-₹70

इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।

© भारतीय रेल

5 **रेल मंत्री द्वारा**
बिजनौर रेलवे स्टेशन का दौरा

6 **रेल मंत्री ने किया**
नवीनतम वंदे भारत एक्सप्रेस रैक का निरीक्षण

8 **रेल मंत्री ने दीं मेवाड़ व विंध्य क्षेत्र को कई सौगात**

9 **कर्नाटक के राज्यपाल से महाप्रबंधक दक्षिण पश्चिम रेलवे की भेंट**

9 **संसदीय रेलवे स्थायी समिति ने मैसूरु तथा बेंगलूरु**
मंडलों के विकास कार्यों की समीक्षा की

10 **मणिपुर के मुख्यमंत्री और रेल राज्य मंत्री द्वारा**
जिरिबाम-इम्फाल नई लाइन परियोजना की समीक्षा

11 **रेल राज्य मंत्री व स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री**
द्वारा विभिन्न स्टेशनों पर ट्रेनों के ठहराव का शुभारंभ

11 **रेल राज्य मंत्री ने**
जालना स्टेशन पर फहराया विशाल राष्ट्रीय ध्वज

12 **केन्द्रीय मंत्रियों ने किया दक्षिणेश्वर और सियालदह**
मेट्रो स्टेशनों का निरीक्षण

12 **चेन्नई-मैंगलोर एक्सप्रेस के आवडी पर स्टॉपेज का राज्य मंत्रियों**
ने हरी झंडी दिखाकर किया शुभारंभ

13 **अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने की**
पश्चिम मध्य रेलवे की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता

14 **अपर सदस्य, ट्रैक्शन, रेलवे बोर्ड ने किया**
बनारस रेल इंजन कारखाने का निरीक्षण

14 **उप नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (रेलवे)**
का पूर्वोत्तर रेलवे का दौरा

15 **राष्ट्रपति द्वारा रेलवे सुरक्षा बल/रेलवे सुरक्षा विशेष बल कर्मियों**
को विशिष्ट एवं सराहनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक से अलंकृत करने की घोषणा

16 **रेल मंत्री ने आरपीएफ की अखिल भारतीय**
मोटरसाइकिल रैली का झंडी दिखाकर स्वागत किया

18 **भारतीय रेल ने धूमधाम से मनाया 76वां स्वतंत्रता दिवस**

24 **तिरंगे के रंगों से सराबोर हुई भारतीय रेल**

27 **संसद में भारतीय रेल**

33 **चिनाब ब्रिज के डेक के**
गोल्डन ज्वाइंट का कार्य पूर्ण

40 **कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में भारतीय रेल के**
खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन

46 **पुनर्विकसित रेलवे स्टेशन की प्रस्तावित डिजाइन**

50 **रेलों के अंचल से**

58 **मिशन रेल कर्मयोगी** — श्रीमती चंद्रलेखा मुखर्जी

62 **सशस्त्र सीमा बल** — श्री मनीष बाजपेई

64 **माथे पर बिंदी** — सुश्री विनीता आर्या

66 **गुवाहाटी का सुनहरा अतीत** — श्री दिनकर कुमार

70 **दो आँखें बारह हाथ** — श्री अजय कुमार शर्मा

सम्पादकीय



तिरंगे के रंग में सराबोर हुई भारतीय रेल

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मनाने में भारतीय रेल किसी भी मायने में पीछे नहीं रही। 'आज़ादी की रेलगाड़ी और स्टेशन' कार्यक्रम के सफल आयोजन के पश्चात् 'हर घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों, रेलवे पुलों, रेलवे कार्यालयों, भवनों और कॉलोनियों को राष्ट्रीय ध्वज और तिरंगे की रौशनी से सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया था जो लोगों में काफी आकर्षण का केन्द्र रहे।

भारतीय रेल द्वारा लगभग 11.5 लाख से भी अधिक रेल कर्मियों को राष्ट्रीय ध्वज वितरित किए गए। रेल भवन में रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश द्वारा तिरंगा यात्रा निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में रेल अधिकारीगण जुड़े। 43.05 प्रतिशत से भी अधिक रेल कर्मचारियों ने 'हर घर तिरंगा' की आधिकारिक वेबसाइट पर अपनी सेल्फी या पिन की गई लोकेशन अपलोड की। भारतीय रेल ने 653 रेलवे स्टेशनों पर 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' पर प्रदर्शनी जैसे विभिन्न कार्यक्रम भी आयोजित किए थे।

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत देशभर से 75 मोटरसाइकिलों वाली आरपीएफ मोटरसाइकिल रैली निकाली गई थी। 13 अगस्त, 2022 को इस रैली का समापन कार्यक्रम दिल्ली के लाल किले के प्रांगण में आयोजित किया गया, जिसमें रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 'फ्लैग इन (झंडी दिखाकर स्वागत)' किया। इसी समारोह में देश के विभिन्न हिस्सों से आए स्वतंत्रता संग्राम के 6 अमर शहीदों - महाराष्ट्र से शहीद श्री शिवराम हरि राजगुरु, पश्चिम बंगाल से शहीद श्री खुदीराम बोस, आंध्र प्रदेश से शहीद श्री अल्लूरी सीताराम राजू, असम से शहीद श्री कुशल कोंवर, ओडिशा से शहीद श्री लक्ष्मण नायक और तेलंगाना से शहीद श्री कोमाराम भीम आदि के परिवार के सदस्यों को सम्मानित किया गया।

हाल ही में आयोजित कॉमनवेल्थ-2022 खेलों में भी हमारे खिलाड़ियों ने अपना शानदार प्रदर्शन कर देश का नाम रौशन किया। इस प्रतियोगिता में भारतीय रेल परिवार के 46 खिलाड़ियों ने अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन किया, जिनमें से 29 खिलाड़ी मेडल प्राप्त करने में सफल हुए। कुश्ती में श्री बजरंग पूनिया, सुश्री विनेश फौगाट तथा सुश्री साक्षी मलिक ने स्वर्ण पदक जीते। महिला हॉकी टीम में अधिकतर भारतीय खिलाड़ी भारतीय रेल से थीं, जिन्होंने कांस्य पदक हासिल किया। भारतीय रेल के आठ कोच तथा फिजियो ने अपने अथक प्रयासों से भारतीय खिलाड़ियों को पदक जितवाने में पूरी मदद की। रेल मंत्री तथा रेल राज्यमंत्री ने इन खिलाड़ियों की अभूतपूर्व सफलता पर उन्हें बधाई दी।

भारतीय रेल अपने स्टेशनों को अत्याधुनिक बनाने की कई योजनाओं में प्रयासरत् है। उसकी कुछ झलक हम इस अंक में प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि आपको हमारा यह अंक जरूर पसंद आएगा।





दिनांक 18 अगस्त, 2022 को राष्ट्रपति भवन में देश की नवनिर्वाचित माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से केन्द्रीय रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, रेल कोयला और खान राज्य मंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे तथा रेल और कपड़ा राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना दरदोश ने शुभेच्छा मुलाकात की और उन्हें वंदे भारत एक्सप्रेस का मॉडल भेंट कर उनका अभिवादन किया।

रेल मंत्री द्वारा बिजनौर रेलवे स्टेशन का दौरा

रेल, संचार व इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने उत्तर रेलवे के बिजनौर रेलवे स्टेशन का दौरा किया। दिल्ली सफदरजंग से निरीक्षण यान से उन्होंने दिल्ली–सफदरजंग–गाजियाबाद–बिजनौर रेलवे लाइन का विंडो निरीक्षण किया। रेल मंत्री के साथ उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री आशुतोष गंगल, अपर मंडल रेल प्रबंधक, मुरादाबाद श्री एन.एन. सिंह और उत्तर रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

इस दौरान रेल मंत्री को उत्तर रेलवे के मुरादाबाद मंडल में चल रही विकासात्मक योजनाओं से अवगत कराया गया। मार्ग में निरीक्षण यान गजरौला रेलवे स्टेशन पर रुका। यहां रेल मंत्री ने उपस्थित जन प्रतिनिधियों से बातचीत की। बिजनौर स्टेशन पहुँचने पर उन्होंने प्लेटफॉर्मों, सर्कुलेटिंग एरिया और वहां मौजूद यात्री सुविधाओं का निरीक्षण किया।



विकासात्मक परियोजनाओं की जानकारी लेते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

रेल मंत्री रेलयात्रियों की सुविधा के लिए प्लेटफॉर्मों पर खानपान सुविधाएँ उपलब्ध कराने के भी निर्देश दिए। चल रहे यात्री सुविधा कार्यों की प्रगति पर संतोष प्रकट करते हुए रेल मंत्री ने परामर्श दिया कि इन परियोजनाओं को निर्धारित समयावधि में पूरा कर लिया जाना चाहिए। उन्होंने रेलगाड़ियों के सुरक्षित और समयबद्ध परिचालन पर बल दिया।

रेल मंत्री ने किया
नवीनतम वंदे भारत एक्सप्रेस रैक का निरीक्षण



नवीनतम वंदे भारत एक्सप्रेस के ड्राइवर कैब का निरीक्षण करते हुए रेल, संचार व इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

रेल, संचार व इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 12 अगस्त, 2022 को सवारी डिब्बा कारखाना का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने सवारी डिब्बा कारखाना में विनिर्मित होने वाले वंदे भारत रैक का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उनके साथ सवारी डिब्बा कारखाना के महाप्रबंधक श्री अतुल कुमार अग्रवाल, दक्षिण रेलवे के महाप्रबंधक श्री बी.जी. माल्या और सवारी डिब्बा कारखाना के प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री एस. श्रीनिवास, प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर श्री डी.पी. दाश तथा अन्य उच्च अधिकारी भी उपस्थित थे।

रेल मंत्री ने वंदे भारत एक्सप्रेस के नवीनतम रैक का निरीक्षण किया। उन्होंने ड्राइवर कैब तथा कोचों के अन्य इंटीरियर्स का भी निरीक्षण किया। यही नहीं, उन्होंने ड्राइवर कैब में सवारी डिब्बा कारखाना के अधिकारियों के साथ बैठकर चलती ट्रेन का भी निरीक्षण किया।

इस अवसर पर मीडिया के साथ बातचीत के दौरान श्री अश्विनी वैष्णव ने इस अद्भुत ट्रेनसेट के उत्पादन के लिए सवारी डिब्बा कारखाना टीम को बधाई दी। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के विजन के अनुसार 75 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें देश के सभी हिस्सों को जोड़ेंगी। उन्होंने कहा कि इस ट्रेनसेट को अब 15,000 किमी वाले परीक्षण के लिए भेजा जाएगा। इसके अलावा इसके अन्य सारे परीक्षण यथा-स्टेटिक, डॉयनमिक, आसिलेशन आदि भी किए जाएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि सवारी डिब्बा कारखाना इस प्रकार की और भी कई ट्रेनों का उत्पादन करेगा। उन्होंने वंदे भारत एक्सप्रेस की विभिन्न तकनीकी विशेषताओं की भी भूरि-भूरि प्रशंसा की जो इस ट्रेन को विश्वस्तरीय बनाती हैं। उन्होंने कहा कि जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री जी का कहना है, तमिल भाषा दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा है। मुझे तमिल संस्कृति और तमिल लोगों के आतिथ्य पर बहुत गर्व है। उन्होंने उपस्थित लोगों से कहा - 'रोम्ब रोम्ब नन्ड्री', जिसका अर्थ है - आप लोगों का बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अश्विनी वैष्णव ने सवारी डिब्बा कारखाना के कर्मचारियों के कौशल और समर्पण की सराहना करते हुए उनके लिए ₹10 लाख के नकद पुरस्कार की भी घोषणा की।

इसके बाद उन्होंने सवारी डिब्बा कारखाना परिसर में स्थित आईसीएफ सिल्वर जुबली स्कूल का दौरा किया और राष्ट्रीय ध्वज फहराया। फिर वे राष्ट्रीय ध्वज लेकर स्कूल के बच्चों और सडिका नॉर्थ कॉलोनी के निवासियों के साथ कॉलोनी में गए और 'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम के प्रति उन्होंने जागरूकता पैदा की।

नवीनतम वंदे भारत एक्सप्रेस की विशेषताएं

- गति को तुरंत बढ़ाने/घटाने हेतु ईएमयू रैक की तरह इस रैक में भी बीच में नॉन-ड्राइविंग ट्रेलर कोच का इंडिविजुअल यूनिट लगाकर फॉर्मेशन में बदलाव किया गया है।
- 160 किमी प्रति घंटे की गति तक पहुँचने में पहले ट्रेन को 145 सेकंड का समय लगता था। अब यह 140 सेकंड में पहुँच जाएगी।
- बिजली के सारे कनेक्शन विफल होने की स्थिति में लाइटिंग की व्यवस्था हेतु प्रत्येक कोच में चार इमर्जेंसी लाइट्स लगाई गई हैं। पहले रैक में एक भी नहीं थी।
- 4 कोच के बाहर पहले के 2 की तुलना में 4 प्लेटफॉर्म साइड कैमरे लगाए गए हैं, जिनमें रियर व्यू कैमरे भी शामिल हैं।
- रोगाणुमुक्त हवा की आपूर्ति के लिए यूवी लैंपयुक्त उच्च दक्षता वाले कंप्रेसर का उपयोग करके हीट वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग का बेहतर नियंत्रण किया जाता है। यह व्यवस्था पहले के वर्शन में नहीं थी।
- वर्तमान कोचों को बेहतर ट्रेन नियंत्रण प्रबंधन का लेवल-II सुरक्षा इंटीग्रेशन प्रमाणन प्राप्त है।
- साइड वॉल पर वेंटिलेशन डक्ट अलग से है। यह पहले ट्रैक्शन मोटर का एक भाग था।
- वे-साइड स्टेशनों के साथ सिग्नल के आदान-प्रदान हेतु कोच में 2 सिग्नल एक्सचेंज लाइट्स हैं।
- सभी कोचों में एरोसोल फायर सप्रेशन सिस्टम पर आधारित फायर डिटेक्शन सिस्टम है। इससे अग्नि संरक्षा प्रणाली में बेहतर सुधार हुआ। पहले के कोचों में केवल स्मोक डिटेक्शन सिस्टम था।
- प्रत्येक कोच में पहले के 24 इंच की बजाय 32 इंच का बड़ा यात्री सूचना और इंफोटेनमेंट सिस्टम है।
- जीएसएम/जीपीआरएस के माध्यम से एयर कंडीशनिंग, संचार, नियंत्रण केंद्र/रखरखाव कर्मचारियों को फीडबैक आदि की निगरानी करने हेतु बेहतर कोच नियंत्रण प्रबंधन प्रणाली है।
- यात्रियों के लिए 3.5 राइडिंग इंडेक्स की बेहतर, आरामदायक और सुविधापूर्ण यात्रा।
- प्रत्येक कोच में 4 आपातकालीन खिड़कियां जोड़ी गई हैं।
- 160 किमी प्रति घंटे पर रेसिडुअल एक्सलरेशन पहले 0.1 मीटर/सेकंड था, जो अब 0.05 मीटर/सेकंड है।
- अंडर-स्लंग बिजली के उपकरणों की फ्लड प्रूफिंग में काफी सुधार किया गया है। इससे पहले की 400 मिमी की तुलना में अब 650 मिमी की ऊंचाई तक की बाढ़ में भी ये उपकरण चालू रहेंगे।
- इलेक्ट्रिकल सेफ्टी हेतु पहले के क्लॉस 2 और 3 सर्ज अरेस्टर्स के बदले क्लॉस 3 और 4 सर्ज अरेस्टर्स लगाए गए हैं।
- इस रैक में वॉयस रिकॉर्डिंग सुविधा युक्त ड्राइवर-गार्ड संचार प्रणाली है।
- इस रैक में 'कवच' (ट्रेन टक्कर बचाव प्रणाली) लगाया गया है।
- दृष्टिबाधित यात्रियों के सहायतार्थ सीटों के हैंडल में ब्रेल अक्षरों में सीट संख्या अंकित की गई है।



रेल मंत्री ने दीं मेवाड़ व विंध्य क्षेत्र को कई सौगात



रीवा-उदयपुर सिटी-रीवा साप्ताहिक सुपरफास्ट रेल सेवा का हरी झंडी दिखाकर शुभारम्भ करते हुए केंद्रीय रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव एवं अन्य गणमान्य अतिथिगण

श्री अश्विनी वैष्णव, रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री की उपस्थिति में समारोह में उपस्थित सम्माननीय महिलाओं ने दिनांक 31 जुलाई, 2022 को बड़ी सादड़ी रेलवे स्टेशन पर बड़ी सादड़ी-मावली रेलखण्ड के आमान परिवर्तन का लोकार्पण किया तथा इस आमान परिवर्तित रेल लाइन पर प्रथम रेलसेवा बड़ी सादड़ी-उदयपुर सिटी उद्घाटन स्पेशल तथा वीडियो लिंक के माध्यम से रीवा-उदयपुर सिटी स्पेशल व पश्चिम बंगाल के सिउड़ी-सियालदह-सिउड़ी मेमू ट्रेन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर बडी सादडी स्टेशन पर नेता प्रतिपक्ष, राजस्थान विधानसभा, श्री गुलाबचंद कटारिया, सांसद श्री चन्द्र प्रकाश जोशी, पूर्व सांसद श्री श्रीचंद कृपलानी, विधायक श्री ललित कुमार ओस्तवाल एवं श्री फूल सिंह मीणा सहित गणमान्य अतिथिगण उपस्थित थे। रीवा रेलवे स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में सांसद-रीवा, श्री जनार्दन मिश्र, विधायक-रीवा श्री राजेंद्र शुक्ल तथा सिउड़ी स्टेशन पर नेता प्रतिपक्ष पश्चिम बंगाल विधानसभा, श्री शुभेंदु अधिकारी उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री जी नेतृत्व में भारत में स्वदेशी तकनीक से बनी वन्दे भारत दुनिया में जापान की सबसे अच्छी बुलेट ट्रेन से बेहतरीन है। श्री अश्विनी वैष्णव ने इस अवसर पर चित्तौडगढ़ स्टेशन को वर्ल्ड क्लास स्टेशन बनाने की घोषणा की। रेलमंत्री ने जनप्रतिनिधियों की बडी सादड़ी-उदयपुर रेलसेवा के दिन में 2 फेरों की मांग पर तुरंत कार्रवाई करते हुए इसके प्रतिदिन 2 फेरे करने की घोषणा की।

समारोह में उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विजय शर्मा ने कहा कि इस रेलखण्ड के ब्रॉडगेज में स्थापित हो जाने के बाद इस क्षेत्र का भारत के अन्य क्षेत्रों से सीधा रेल परिवहन सम्पर्क स्थापित होगा।

इस समारोह में पश्चिम मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री सुधीर कुमार गुप्ता, अपर महाप्रबंधक श्री शोभन चौधुरी तथा अन्य प्रमुख मुख्य विभागाध्यक्ष भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े रहे।

मावली-बडी सादड़ी आमान परिवर्तन एक नजर में

- स्वीकृत वर्ष : 2013-14
- रेलखण्ड की लम्बाई : 82.01 किमी
- परियोजना की कुल अनुमानित लागत : ₹420.18 करोड़
- स्टेशन : 07 मावली जंक्शन व बडी सादड़ी (टर्मिनल स्टेशन) तथा अन्य 05 हाल्ट स्टेशन (बान्सी बोहेडा, कानोर, भडिंर, खेरोदा, वल्लभनगर)
- पुलों की संख्या : 3 बड़े व 125 छोटे पुल
- रोड अण्डर ब्रिज/रोड ओवर ब्रिज : 90

रेलसेवाओं के प्रारम्भ होने से लाभ

- बडी सादड़ी से मावली के मध्य स्थित क्षेत्रों से बड़ी लाइन के साथ सीधा सम्पर्क
- उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा से अजमेर के लिए सीधा ब्रॉडगेज मार्ग
- रोजगार व अन्य कार्यों के लिए प्रतिदिन आवागमन करने वालों के लिये रेल सुविधा
- ब्रॉडगेज लाइन स्थापित होने से देश के ब्रॉडगेज नेटवर्क से जुड़ाव
- राजस्थान और मध्यप्रदेश के बीच बेहतर सम्पर्क व सुगम और किफायती यात्रा
- मध्यप्रदेश के रीवा क्षेत्र का राजस्थान में झीलों की नगरी उदयपुर से सम्पर्क स्थापित होने से पर्यटन को बढ़ावा

कर्नाटक के राज्यपाल से महाप्रबंधक दक्षिण पश्चिम रेलवे की भेंट

दिनांक 23 अगस्त, 2022 को राजभवन, बेंगलुरु में श्री संजीव किशोर, महाप्रबंधक ने कर्नाटक राज्य के राज्यपाल श्री थावर चंद गहलोत से भेंट की।

कर्नाटक में रेल के आधारभूत अवसंरचना में सुधार, प्रमुख विकास पहल परियोजनाओं तथा दक्षिण पश्चिम रेलवे के प्रोफाइल, इतिवृत्त पर श्री किशोर ने राज्यपाल महोदय को संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

दक्षिण पश्चिम रेलवे के श्री हरि शंकर वर्मा प्रधान मुख्य परिचालन प्रबंधक, श्री एन रमेश, मुख्य दावा अधिकारी और श्री श्याम सिंह, मंडल रेल प्रबंधक, बेंगलुरु एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण इस अवसर पर उपस्थित थे।



कर्नाटक राज्य के राज्यपाल श्री थावर चंद गहलोत से भेंट करते हुए महाप्रबंधक दक्षिण पश्चिम रेलवे श्री संजीव किशोर, एवं अन्य रेलवे अधिकारी

संसदीय रेलवे स्थायी समिति ने मैसूरु तथा बेंगलूरु मंडलों के विकास कार्यों की समीक्षा की



दिनांक 22 अगस्त, 2022 को रेलवे संसदीय स्थायी समिति ने अध्यक्ष श्री राधा मोहन सिंह के नेतृत्व में मैसूरु तथा बेंगलुरु मंडलों पर दौरा किया तथा दक्षिण पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ रेल परियोजनाओं पर चर्चा की।

मैसूरु में आयोजित बैठक में दक्षिण पश्चिम रेलवे की विभिन्न रेलवे परियोजनाओं की प्रगति, नई लाइन, रेल पटरियों का दोहरीकरण और विद्युतीकरण, यात्री सुख-सुविधाओं का प्रावधान, ट्रेनों के विराम, रोड ओवर ब्रिज/रोड अंडर ब्रिज, स्टेशनों का निर्माण, नवीकरण एवं विकास जैसे विभिन्न कार्यों आदि पर चर्चा की गई।

दक्षिण पश्चिम रेलवे जोन में वर्तमान में निष्पादित उपलब्धियों और संरचना के विकास पर श्री संजीव किशोर, महाप्रबंधक, दक्षिण पश्चिम रेलवे ने प्रकाश डाला।

महाप्रबंधक ने सांसदों को आश्वासन दिया कि उनकी सलाह और सुझावों को लागू करने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी और सर्वोत्तम प्रयास किए जाएंगे।

संसद सदस्यों ने केएसआर बेंगलुरु तथा सर. एम. विश्वेश्वरैया रेलवे टर्मिनलों का भी दौरा किया। सर. एम. विश्वेश्वरैया रेलवे टर्मिनल की निरीक्षण समिति ने भारत की जनता के लिए हवाई अड्डा जैसा पहला विश्व स्तरीय रेलवे टर्मिनल प्रदान करने में दक्षिण पश्चिम रेलवे के प्रयासों की सराहना की। समिति ने केएसआर बेंगलुरु स्टेशन पर चल रहे कार्यों और यात्री सुविधाओं का भी जायजा लिया।

श्री श्याम सिंह, मंडल रेल प्रबंधक, बेंगलुरु, श्री राहुल अग्रवाल, मंडल रेल प्रबंधक, मैसूरु, श्री रंग लाल मीणा, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, निर्माण संगठन, श्री हरि शंकर वर्मा, प्रधान मुख्य परिचालन प्रबंधक, श्री आशीष पांडे, उप महाप्रबंधक, दक्षिण पश्चिम रेलवे के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मणिपुर के मुख्यमंत्री और रेल राज्य मंत्री द्वारा
जिरिबाम-इम्फाल नई लाइन परियोजना की समीक्षा

26 अगस्त, 2022 को मणिपुर के मुख्यमंत्री श्री एन. बीरेन सिंह और केंद्रीय रेल और कपड़ा राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने इम्फाल में जिरिबाम-इम्फाल नई रेलवे लाइन परियोजना की प्रगति की समीक्षा के लिए एक बैठक की सह-अध्यक्षता की। इस समीक्षा बैठक के दौरान यह निर्णय लिया गया कि इस कार्य को पूरी गति से जारी रखा जाए ताकि राज्य सरकार के साथ सहयोग से इस काम को निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूरा किया जा सके। नोनी जिले में रेलवे परियोजना के पास हुए दुर्भाग्यपूर्ण भू-स्खलन और कई अन्य चुनौतियों के बावजूद जिरिबाम- इम्फाल रेलवे लाइन को पूरा करने में तेजी लाने के लिए समस्त रेलवे कार्य बल अथक प्रयास कर रहा है। इस समीक्षा बैठक में श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक, एन.एफ. रेलवे और अन्य वरिष्ठ रेलवे अधिकारी और राज्य सरकार के अधिकारी भी मौजूद रहे।

इससे पहले 24 अगस्त, 2022 को रेल और कपड़ा राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक, एन.एफ. रेलवे और अन्य वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों के साथ विभिन्न निर्माण स्थलों का निरीक्षण किया।

यह जिरिबाम-इम्फाल परियोजना 110 किमी लंबी है। इस परियोजना को चार चरणों में चालू करने की योजना बनाई गई



इंफाल में जिरिबाम-इम्फाल नई रेलवे लाइन परियोजना की प्रगति की समीक्षा करते हुए मणिपुर के मुख्यमंत्री श्री एन.बीरेन सिंह एवं रेल और कपड़ा राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश

है। चरण-I के तहत जिरिबाम से वांगईचुंगपाओ (12 किमी) का खंड मार्च, 2017 में पहले ही चालू हो चुका है। चरण-II के तहत वांगईचुंगपाओ से खोंगसांग (44 किमी) का काम भी पहले ही पूरा हो चुका है। चरण-III और चरण-IV, खोंगसांग से टुपुल (29 किमी) और टुपुल से इम्फाल (26 किमी) को क्रमशः मार्च, 2023 और दिसंबर, 2023 तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस पूरी परियोजना की अनुमानित लागत लगभग ₹14,322 करोड़ है। चालू वित्त वर्ष में ₹1,300 करोड़ के निवेश की योजना है।

यह जिरिबाम-इम्फाल परियोजना मणिपुर के सभी प्रमुख जिलों, जैसे कि जिरिबाम, टामेंगलोंग, नोनी, कांगपोकपी, इम्फाल पश्चिम को कवर करेगी। इसमें 11 बड़े पुल और 129 छोटे पुल निर्मित किए जाएंगे और इस परियोजना के तहत मार्ग में 11 स्टेशन शामिल होंगे। वर्तमान में जिरिबाम से इम्फाल तक की यात्रा में सड़क मार्ग से लगभग 10-12 घंटे लगते हैं। इस रेलवे परियोजना के पूरा होने के बाद यह दूरी मात्र 2 घंटे से भी कम समय में तय की जाएगी। यह परियोजना राज्य द्वारा आवश्यक वस्तुओं को तेजी से प्राप्त करने में भी मदद करेगी और राज्य के स्थानीय उत्पादकों को अपने उत्पादों को राज्य के बाहर तेजी से निर्यात करने में भी मदद करेगी।

पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की राजधानियों को रेलवे के माध्यम से जोड़ने के एक हिस्से के रूप में इस जिरिबाम-इम्फाल नई बीजी लाइन परियोजना का निर्माण कार्य चल रहा है। यह परियोजना मणिपुर की राजधानी इम्फाल को जोड़ेगी। पूर्वोत्तर में रेल संपर्क का विस्तार करना वर्तमान केंद्र सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। उल्लेखनीय है कि पिछले आठ वर्षों (2014-22) की अवधि में पूर्वोत्तर राज्यों में रेल संपर्क के लिए निधि आवंटन में 254% की वृद्धि की गई है। यह परियोजना कनेक्टिविटी में सुधार के साथ-साथ उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को आर्थिक परिवर्तन के लिए एक लॉजिस्टिक हब बनने में सहायता करेगी।



महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे श्री अंशुल गुप्ता, और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ जिरिबाम-इम्फाल परियोजना स्थल का निरीक्षण करती हुई केंद्रीय रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश

रेल राज्य मंत्री व स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री
द्वारा विभिन्न स्टेशनों पर ट्रेनों के ठहराव का शुभारंभ

श्री रावसाहेब पाटिल दानवे, रेल, कोयला और खान राज्य मंत्री और डॉ. भारती प्रवीण पवार, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री ने नांदगांव से (वीडियो लिंक के माध्यम से) 14 अगस्त, 2022 को 15017 एलटीटी-गोरखपुर काशी एक्सप्रेस के हॉल्ट पर ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर श्री अनिल कुमार लाहोटी, महाप्रबंधक, मध्य रेल मुंबई से वीडियो लिंक के माध्यम से उपस्थित थे।

निम्नलिखित तीन ट्रेनों को 14 अगस्त, 2022 से प्रायोगिक आधार पर 6 महीने की अवधि के लिए हॉल्ट प्रदान किया गया है।

- 15017 एलटीटी-गोरखपुर एक्सप्रेस 11:29 बजे नांदगांव पहुंचेगी व 11:30 बजे प्रस्थान करेगी।
- 15018 गोरखपुर-एलटीटी एक्सप्रेस 11:39 बजे नांदगांव पहुंचेगी और 11:40 बजे प्रस्थान करेगी।
- 22177 सीएसएमटी-वाराणसी महानगरी एक्सप्रेस 05:04 बजे नांदगांव पहुंचेगी और 05:05 बजे प्रस्थान करेगी।
- 22178 वाराणसी-सीएसएमटी महानगरी एक्सप्रेस 05:39 बजे नांदगांव पहुंचेगी और 05:40 बजे प्रस्थान करेगी।



एलटीटी-गोरखपुर काशी एक्सप्रेस के हॉल्ट से ट्रेन को हरी झंडी दिखाते हुए रेल राज्य मंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री सुश्री भारती प्रवीण पवार

- 1071 एलटीटी-बनारस कामायनी एक्सप्रेस 17:37 बजे लासलगांव पहुंचेगी और 17:38 बजे प्रस्थान करेगी।
- 11072 बनारस-एलटीटी कामायनी एक्सप्रेस 17:59 बजे लासलगांव पहुंचेगी और 18:00 बजे निकलेगी।

रेल राज्य मंत्री ने
जालना स्टेशन पर फहराया विशाल राष्ट्रीय ध्वज



जालना रेलवे स्टेशन पर 100 फीट ऊंचे राष्ट्रीय ध्वज को फहराने के पश्चात् उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए रेल, कोयला और खान राज्य मंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे

श्री रावसाहेब पाटिल दानवे, रेल, कोयला और खान राज्य मंत्री ने जालना रेलवे स्टेशन पर 100 फीट ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज फहराया। श्री नारायण कुचे, एमएलए, बदनापुर और श्री अर्जुन खोटकर, पूर्व मंत्री, महाराष्ट्र राज्य भी इस अवसर पर उपस्थित थे। श्री शरत चंद्रायन, मंडल रेल प्रबंधक, हैदराबाद मंडल और अन्य वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों ने भी इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। रेल यात्रियों के बीच राष्ट्रीयता की भावना के पुनर्जागरण और गौरवपूर्ण एहसास को जगाने के लिए रेलवे स्टेशन पर यह विशाल तिरंगा फहराया गया। इस तिरंगे का मस्तूल 100 फीट लंबा, आकार 30X20 फीट है और यह झंडा मोटर-संचालित है। इस अवसर पर श्री दानवे ने कहा कि यह तिरंगा झंडा हमारे लिए गौरव का प्रतीक है जो किसी भी जाति, धर्म और संप्रदाय के बिना प्रत्येक भारतीय को एकजुट करता है। उन्होंने आगे कहा कि 'हर घर तिरंगा' भारत सरकार की एक शानदार पहल है जो स्वतंत्रता संग्राम की याद दिलाती है और हम सभी देशवासियों में देशभक्ति की भावना का संचार करती है। रेल राज्य मंत्री ने यह भी कहा कि पूर्व में राष्ट्रीय ध्वज केवल कुछ स्थानों पर ही फहराया जाता था, लेकिन प्रधानमंत्री की इस विशेष पहल के साथ प्रत्येक घर ने राष्ट्र-निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता के प्रतीक के रूप में अपने घर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

केन्द्रीय मंत्रियों ने किया दक्षिणेश्वर और सियालदह मेट्रो स्टेशनों का निरीक्षण



मेट्रो रेल परियोजनाओं की जानकारी लेते हुए केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री, श्री धर्मेंद्र प्रधान (बाएं) एवं दक्षिणेश्वर मेट्रो स्टेशन के निरीक्षण के दौरान यात्रियों से बातचीत करते हुए केंद्रीय नागरिक उड्डयन एवं इस्पात मंत्री श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया (दाएं)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया, केंद्रीय नागरिक उड्डयन एवं इस्पात मंत्री और श्री धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री ने 23 जुलाई, 2022 को क्रमशः दक्षिणेश्वर और सियालदह मेट्रो स्टेशनों का निरीक्षण किया। सियालदह मेट्रो स्टेशन पर मीडिया से बातचीत करते हुए श्री प्रधान ने कहा कि 1972 से 2014 तक मेट्रो का निर्माण कार्य प्रारंभ होने के बाद से कोलकाता मेट्रो रेलवे की सभी परियोजनाओं पर कुल खर्च केवल ₹6,914 करोड़ है जबकि पिछले 8 वर्षों के दौरान कोलकाता मेट्रो परियोजनाओं के लिए ₹12,776 करोड़ खर्च किए गए हैं, जिससे कुल परिव्यय में भारी वृद्धि दर्ज की गई है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि कोलकाता मेट्रो (1972-2014) के इतिहास के पहले 42 वर्षों के दौरान केवल 27 किमी मेट्रो नेटवर्क चालू किया जा सका जबकि पिछले 8 वर्षों में मेट्रो ने अपने नेटवर्क को लगभग दोगुना कर दिया है क्योंकि यह 2022 के अंत तक कुल 54 किमी का नेटवर्क पूरा कर लेगा। उन्होंने बताया कि ईस्ट-वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर पूरी तरह से केंद्र सरकार द्वारा वित्त पोषित परियोजना है जिस पर कुल ₹8,575 करोड़ खर्च किए गए हैं और हावड़ा मैदान से सॉल्ट लेक सेक्टर-5 तक का खंड अगले वर्ष तक पूरा हो जाएगा। दोनों मंत्रियों ने मेट्रो की सवारी का आनंद भी उठाया

चेन्नई-मैंगलोर एक्सप्रेस के आवडी पर स्टॉपेज का राज्य मंत्रियों ने हरी झंडी दिखाकर किया शुभारंभ

रेलवे बोर्ड ने 21 अगस्त 2022 से प्रायोगिक आधार पर आवडी रेलवे स्टेशन पर रेलगाड़ी संख्या 12685/12686 डॉ एमजीआर चेन्नई सेंट्रल - मैंगलोर सेंट्रल - डॉ. एमजीआर चेन्नई सेंट्रल सुपरफास्ट एक्सप्रेस के ठहराव (स्टॉपेज) को मंजूरी दे दी।

इन रेलगाड़ियों के आवडी रेलवे स्टेशन पर स्टॉपेज की शुरुआत के लिए एक समारोह आयोजित किया गया था। समारोह में रेलगाड़ी संख्या 12686 मैंगलोर-डॉ. एमजीआर चेन्नई सेंट्रल सुपरफास्ट एक्सप्रेस को 06:58 बजे रोका गया और 07:00 बजे श्री वी. मुरलीधरन, विदेश और संसदीय मामलों के राज्य मंत्री और डॉ. एल मुरुगन, सूचना और प्रसारण, मत्स्य पालन और पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री, श्री दुरई चंद्रशेखरन, विधायक, पोन्नेरी द्वारा श्री गणेश, मंडल रेल प्रबंधक, चेन्नई मंडल, अन्य आमंत्रित अतिथियों, रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों और रेल यात्रियों की उपस्थिति में हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।



आवडी स्टेशन से मैंगलोर-डॉ. एमजीआर चेन्नई सेंट्रल सुपरफास्ट एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए विदेश एवं संसदीय मामलों के राज्य मंत्री श्री वी. मुरलीधरन, और सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने की पश्चिम मध्य रेलवे की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता

श्री विनय कुमार त्रिपाठी, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड की अध्यक्षता में 30 जुलाई को मंडल रेल प्रबंधक के बैठक कक्ष, कोटा कार्यालय में पश्चिम मध्य रेलवे की प्रदर्शन समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस समीक्षा बैठक के दौरान विभिन्न जारी परियोजनाओं और यात्री सुविधाओं से संबंधित विकास कार्यों के बारे में सूचना पॉवर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रदान की गई।



समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री विनय कुमार त्रिपाठी, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

- श्री त्रिपाठी ने प्रमुख प्रदर्शन सूचकांक और व्यय नियंत्रण के बारे में चर्चा की।
- आधारभूत संरचना, गतिशीलता में सुधार, सुरक्षा प्रदर्शन, श्रम शक्ति योजना और व्यय नियंत्रण आदि सहित कई महत्त्वपूर्ण पहलुओं के प्रदर्शन की समीक्षा की।
- कोटा और डकनिया तलाव के विकास और कार्य योजना पर गंभीरतापूर्वक चर्चा की और स्टेशन के विकास कार्य को निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूरा करने के साथ ही गुणवत्तापूर्ण कार्य करने के लिए भी निर्देश दिए।
- रेलवे के गोदामों को चौबीसों घंटे काम करने, गोदामों के उन्नयन के साथ-साथ गोदामों में काम करने वाले श्रमिकों के लिए उपलब्ध सुविधाओं को और बढ़ाने के लिए भी निर्देश दिए
- बैठक के दौरान पश्चिम मध्य रेलवे के महाप्रबंधक, श्री सुधीर कुमार गुप्ता, रेलवे बोर्ड के अधिकारी और पश्चिम मध्य रेलवे सहित कोटा के डीआरएमस के उच्च अधिकारी भी उपस्थित थे।
- अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी मंडल कार्यालय में विभिन्न रेलवे यूनियनों के प्रतिनिधियों और एसोसिएशन के अधिकारियों से भी मिले और कर्मचारियों की विभिन्न समस्याओं के बारे में चर्चा की।

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड द्वारा वैगन रिपेयर शॉप, कोटा का निरीक्षण



वैगन रिपेयर शॉप, कोटा का निरीक्षण करते हुए श्री विनय कुमार त्रिपाठी

दिनांक 30 जुलाई, 2022 को श्री विनय कुमार त्रिपाठी, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड के द्वारा वैगन रिपेयर शॉप, कोटा का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक पश्चिम मध्य रेल, श्री सुधीर कुमार गुप्ता, मंडल रेल प्रबन्धक कोटा श्री पंकज कुमार शर्मा एवं मुख्य कारखाना इंजीनियर श्री नीरज कुमार भी उपस्थित थे। इस दौरान श्री त्रिपाठी ने नई एलपीजी शॉप में बोगी माउंटेड ब्रेक सिस्टम प्रणाली की पूरी कार्य प्रणाली का गहन निरीक्षण किया गया। मुख्य कारखाना प्रबन्धक सुधीर सरवरिया ने वैगनों की बोगी पर लगाई गई बोगी माउंटेड ब्रेक सिस्टम प्रणाली की जानकारी देते हुए ओवरहॉल बोगी पर स्थापित बोगी माउंटेड ब्रेक सिलेंडर के ऑपरेशन एवं इसके बाद सजीव कट मॉडल, एक्सप्लोडेड व्यू एवं चित्रों के माध्यम से पूरी तकनीक को विस्तृत रूप से प्रदर्शित किया गया। इसके बाद वैगनों में इस प्रणाली के अलग-अलग कम्पनियों के द्वारा लगाए गए ब्रेक सिलेण्डरों की वर्किंग की जाँच एवं वैगनों में ब्रेक लगाने हेतु निर्धारित, ब्रेक ब्लॉक पर लगने वाले ब्रेकिंग फोर्स की जाँच की।

इस अवसर पर अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं महाप्रबंधक ने विरासत पार्क में पौधारोपण किया और उसके बाद गत वर्ष कारखाने में प्रत्येक माह उत्कृष्ट कार्य करने वाले 'माह के सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी' के रूप में चयनित कर्मचारियों को ग्रीन सेफ्टी हेलमेट देकर सम्मानित किया। उन्होंने रेलवे की मान्यता प्राप्त यूनियनों के पदाधिकारियों से भी भेंट की।

अपर सदस्य, ट्रैक्शन, रेलवे बोर्ड ने किया
बनारस रेल इंजन कारखाने का निरीक्षण

दिनांक 16 जुलाई को बनारस रेल इंजन कारखाना में अपर सदस्य, ट्रैक्शन, रेलवे बोर्ड, श्री राधे रमण ने निरीक्षण किया। श्री राधे रमण बरेका कारखाना के विभिन्न कार्यशालाओं, जैसे न्यू लोको असेम्ब्ली शॉप, लोको फ्रेम शॉप, लोको टेस्ट शॉप, न्यू ब्लॉक शॉप पहुँच कर रेल इंजनों के उत्पादन से संबंधित कार्यों का अवलोकन किया। निरीक्षण में प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर श्री राजेश कुमार राय, प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री अमिताभ, मुख्य विद्युत इंजीनियर लोको श्री एम. के. गुप्ता, मुख्य अभिकल्प इंजीनियर, विद्युत लोकोमोटिव श्री पी. पी. राजू, मुख्य विद्युत इंजीनियर, निरीक्षण, श्री अनंत सदाशिव, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री विजय, उप मुख्य विद्युत इंजीनियर, लोको, श्री अरुण कुमार शर्मा एवं अन्य अधिकारीगण मौजूद रहें।



इस अवसर पर अपर सदस्य/ ट्रैक्शन, रेलवे बोर्ड श्री राधे रमण ने बरेका कर्मचारी परिषद के संयुक्त सचिव श्री धर्मेंद्र कुमार सिंह के नेतृत्व में सदस्यों सर्वश्री बी.डी. दूबे, नवीन सिन्हा, सुशील कुमार सिंह, आलोक वर्मा एवं विनोद सिंह ने मुलाकात कर कर्मचारियों से संबंधित मुद्दों पर वार्ता की, वहीं अन्य पिछड़ा वर्ग के महासचिव श्री हरिशंकर यादव ने पदाधिकारियों के साथ मिलकर कर्मचारियों के हित से संबंधित मुद्दों पर ज्ञापन सौपा।

उप नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (रेलवे)
का पूर्वोत्तर रेलवे का दौरा



भारत की उप नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (रेलवे) सुश्री इला सिंह पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर आईं। उन्होंने महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार मिश्र, प्रमुख विभागाध्यक्षों एवं वरिष्ठ रेल अधिकारियों के साथ लेखापरीक्षा कार्यों से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर 08 अगस्त, 2022 को आयोजित बैठक में विस्तृत विचार-विमर्श किया। बैठक में महानिदेशक लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

बैठक को सम्बोधित करते हुए सुश्री इला सिंह ने कहा कि लेखापरीक्षा से जो भी सम्बन्धित मामले हैं, उन्हें सम्बन्धित अधिकारियों के संज्ञान में बेहिचक लाया जाना चाहिए। इसके साथ ही रेल के विभिन्न विभागों की लेखापरीक्षा विभाग से जो भी अपेक्षाएं हैं, उनसे भी लेखापरीक्षा विभाग को अवगत कराया जाना प्रशासनिक हित में अपेक्षित है। सुश्री इला सिंह ने कहा कि ऑडिट का मूल उद्देश्य सरकारी गतिविधियों को सहज और पारदर्शी बनाना है। उन्होंने कहा कि उनके गोरखपुर दौरे का मुख्य उद्देश्य रेल प्रशासन एवं लेखापरीक्षा विभाग को एक-दूसरे के निकट लाना है, जिससे कार्यकुशलता एवं कार्य संस्कृति को और सकारात्मक रूप प्रदान किया जा सके। पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार मिश्र ने अपने स्वागत सम्बोधन में कहा कि ऑडिट बहुत ही महत्त्वपूर्ण गतिविधि है तथा इसे रेलवे की अन्य गतिविधियों के समान ही समझा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि थीम बेस्ड ऑडिट का प्रदर्शन को बेहतर बनाने में बहुत ही सकारात्मक प्रभाव होता है।

राष्ट्रपति द्वारा रेलवे सुरक्षा बल/रेलवे सुरक्षा विशेष बल कर्मियों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक और सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक से अलंकृत करने की घोषणा

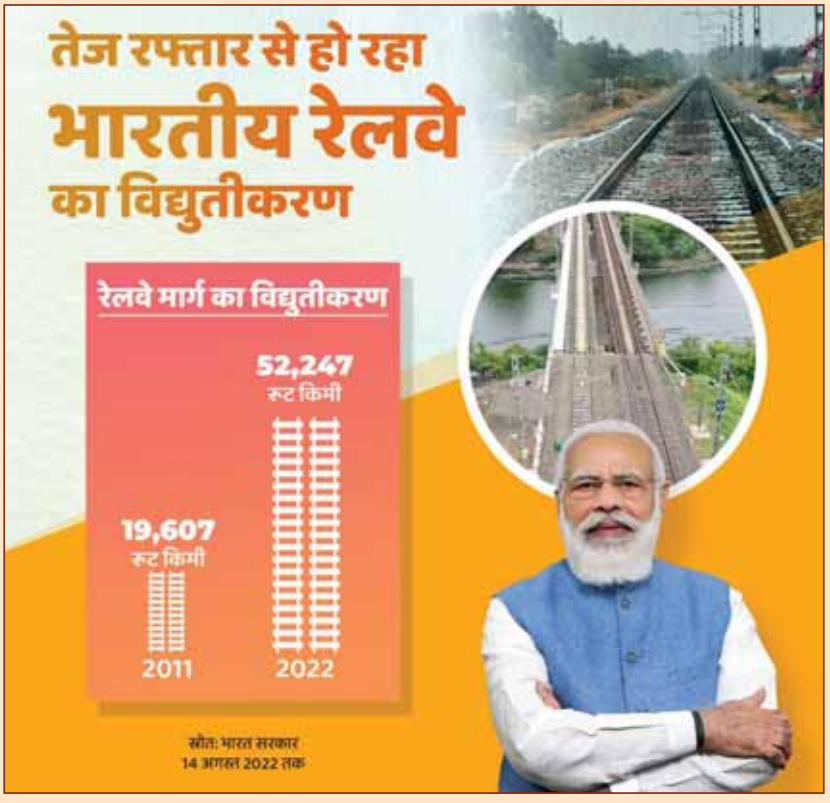
विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



श्री प्रवीण चंद्र सिन्हा
प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त,
पश्चिम रेलवे

सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक

- श्री शमसुल अरफिन, सहायक सुरक्षा
- श्री राजीव सिंह सलारिया, निरीक्षक, पश्चिम रेलवे
- श्रीमती सय्यदा तहसीन, उप निरीक्षक, दक्षिण मध्य रेलवे
- कुमारी जयश्री पुरुषोत्तम पाटील, उप निरीक्षक, मध्य रेल
- श्री प्रदीप कुमार, उप निरीक्षक, रेलवे बोर्ड
- श्री नसीर अहमद भट, उप निरीक्षक, छठी वाहिनी, रेलवे सुरक्षा विशेष बल
- श्री एन सुब्बाराव, उप निरीक्षक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
- श्री तिरिपाल गोट्टेमुक्कला, सहायक उप-निरीक्षक, दक्षिण पश्चिम रेलवे
- श्री एन सुब्बाराव नाटकम, सहायक उप-निरीक्षक, प्रशिक्षण केंद्र-मौला अली
- श्री राघवेंद्र करियप्पा शिरागेरी, सहायक उप-निरीक्षक, दक्षिण पश्चिम रेलवे
- श्री सुनील भागवत चौधरी, सहायक उप निरीक्षक, मध्य रेल
- श्री कंवरपाल यादव, हेड कांस्टेबल, पश्चिम रेलवे
- श्री विजया सारधि बंदी, हेड कांस्टेबल, प्रशिक्षण केंद्र-मौला अली
- श्री राजेंद्र सिंह, कांस्टेबल, जगजीवनराम रे.सु.ब. अकादमी, लखनऊ
- श्री सतपाल, कांस्टेबल, सफाई कर्मचारी, तीसरी वाहिनी, रेलवे सुरक्षा विशेष बल



रेल मंत्री ने आरपीएफ की अखिल भारतीय मोटरसाइकिल रैली का झंडी दिखाकर स्वागत किया

रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीदों के परिवारजनों को सम्मानित किया



रेलवे सुरक्षा बल की अखिल भारतीय मोटरसाइकिल रैली का 'फ्लैग इन' (झंडी दिखाकर स्वागत) करते हुए रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, साथ में हैं रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री विनय कुमार त्रिपाठी तथा आरपीएफ के महानिदेशक श्री संजय चंदर

दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले के प्रांगण में 13 अगस्त, 2022 को एक भव्य कार्यक्रम 'आज़ादी के अमर शहीदों का सम्मान' के साथ ही रेलवे सुरक्षा बल की अखिल भारतीय मोटरसाइकिल रैली के लिए 'फ्लैग इन (झंडी दिखाकर स्वागत), समारोह का आयोजन किया गया। संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी और रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने मुख्य अतिथि के रूप में इस समारोह की अध्यक्षता की तथा देश के सभी हिस्सों से आए स्वतंत्रता संग्राम के 6 अमर शहीदों – महाराष्ट्र से शहीद श्री शिवराम हरि राजगुरु, पश्चिम बंगाल से शहीद श्री खुदीराम बोस, आंध्र प्रदेश से शहीद श्री अल्लूरी सीताराम राजू, असम से शहीद श्री कुशल कोंवर, ओडिशा से शहीद श्री लक्ष्मण नायक और तेलंगाना से शहीद श्री कोमाराम भीम आदि के परिवार के सदस्यों को सम्मानित किया। रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश और कई अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।



अखिल भारतीय मोटरसाइकिल रैली का एक दृश्य

इसके अलावा रेल मंत्री ने प्रतिष्ठित लाल किले के परिसर में रेलवे सुरक्षा बल द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में 75 मोटरसाइकिलों वाली आरपीएफ मोटरसाइकिल रैली का झंडी दिखाकर स्वागत किया। लाल किला हमारे देश को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्षों और बलिदान का गवाह है।

इस अवसर पर अपने संबोधन में रेल मंत्री श्री वैष्णव ने स्वतंत्रता सेनानियों के परिवार के सदस्यों को सम्मानित किया। उन्होंने आरपीएफ के बाइक चालकों और पीछे बैठने वाले सवारों के लिए ₹5 लाख का इनाम भी मंजूर किया।

भारत की आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित करने पर जोर देते हुए श्री वैष्णव ने कहा कि शहीदों ने आज़ादी के

लिए जितना दर्द और कठिनाइयां झेली हैं, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। उनके नि:स्वार्थ बलिदान और कड़ी मेहनत के लिए हम उनके ऋणी हैं। इस समारोह में मौजूद शहीदों के परिवारों ने हम सभी को गौरवान्वित किया है।

श्री वैष्णव ने आगे आने वाली पीढ़ियों की जिम्मेदारी लेने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमें अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए बेहतर भविष्य बनाने की जरूरत है। हमें भारत के भविष्य के गौरव की नींव रखने और अमृत काल के अंत तक, जब हम भारत की स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ मना रहे होंगे, अपने देश को उसके गौरव के शिखर पर ले जाने के लिए उस पर काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं को आगे आने और प्रधानमंत्री द्वारा परिकल्पित लक्ष्य की दिशा में काम करने तथा देश को विश्व का नेता बनाने का आह्वान किया।

आरपीएफ की यह बाइक रैली देश के नागरिकों के मनोबल को बढ़ावा देगी और उन्हें जाति, पंथ, वर्ग तथा समुदाय की बाधाओं को पार करके राष्ट्र निर्माण की दिशा में सामूहिक प्रयास में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करेगी। यह समारोह आरपीएफ के पुरुषों और महिलाओं को राष्ट्र की सेवा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने और सेवा ही संकल्प की अपनी प्रतिज्ञा को साकार करने के लिए भी प्रेरित करेगा।

इस अवसर पर अपने संबोधन में रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने कहा कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत बहुत आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में केवल पुरुषों की ही भागीदारी नहीं थी बल्कि हमारे पास रानी लक्ष्मीबाई जैसी महिलाओं के कई उदाहरण हैं, जिन्होंने हमारे देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। इसके अलावा उन्होंने बताया कि आरपीएफ की महिला कर्मचारियों ने महिला यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने में अद्भुत काम किया है।

हमारे देश की आज़ादी के 75 गौरवशाली वर्षों का जश्न मनाने के लिए 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के हिस्से के रूप में रेलवे सुरक्षा बल ने देश भर में 75 दिनों तक चलने वाले बड़े पैमाने पर जनसंपर्क कार्यक्रम शुरू किया। अपनी अखिल भारतीय पहुंच और एक मजबूत एकात्मक कमान एवं पर्यवेक्षण का लाभ उठाते हुए आरपीएफ ने देश के दूरदराज के हिस्सों में देशभक्ति और राष्ट्रवाद के संदेश को फैलाने के लिए युवाओं से इस साल से शुरू हो रहे आगामी 25 वर्षों के अमृत काल में राष्ट्र निर्माण के लिए एक साथ आने की अपील के साथ कई पहलें शुरू कीं। वर्ष 2047 में हमारी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। जनसंपर्क कार्यक्रम जून, 2022 में शुरू हुआ और 13 अगस्त, 2022 को लाल किले में आयोजित भव्य समारोह के साथ ही संपन्न हुआ।

इससे पहले अपने स्वागत भाषण में आरपीएफ के महानिदेशक श्री संजय चंदर ने 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के तहत आरपीएफ द्वारा की गई कुछ गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया।

उन्होंने बताया कि इसके तहत 7.5 लाख पौधे लगाने के उद्देश्य से एक राष्ट्रव्यापी वृक्षारोपण कार्यक्रम शुरू किया गया था। 12 अगस्त, 2022 तक हम लगभग 6 लाख पौधे लगा चुके हैं, और हमारी जिम्मेदारी यहीं खत्म नहीं होती है। हम उनकी देखभाल तब तक करते रहेंगे जब तक वे अपना भरण-पोषण नहीं कर सकते।

भीषण गर्मी में आरपीएफ के जवानों ने प्यासों को पीने का पानी उपलब्ध कराने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। ऑपरेशन जल सेवा अब तक 7,189 से अधिक स्थानों पर किया जा चुका है।

जनता तक पहुंचने के लिए एक नई पहल के रूप में, वीडियो वॉल से लैस ट्रकों को स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान, राष्ट्र निर्माण में किए जा रहे प्रयासों और विभिन्न सामाजिक एवं सुरक्षा मुद्दों के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए चलाया गया था। जन जागरूकता के लिए अब तक देश भर में 1,149 से अधिक स्थानों पर मोबाइल वीडियो वॉल के प्रदर्शन का आयोजन किया जा चुका है। इन 1,149 स्थानों में से 736 से अधिक स्थानों पर आरपीएफ बैंड प्रदर्शित किया गया, जिसमें आरपीएफ बैंड ने जनता को मंत्रमुग्ध करने के लिए देशभक्ति की धुनें बजाईं।

समारोह के दौरान देश के विभिन्न हिस्सों में 800 से अधिक स्वतंत्रता सेनानियों या उनके परिजनों को स्कूलों या पंचायत भवन, स्थानीय पुस्तकालय आदि जैसे सार्वजनिक भवनों में साधारण समारोह आयोजित करके सम्मानित किया गया।

आरपीएफ कर्मियों ने विभिन्न स्थानों पर 'रन फॉर यूनिटी' में भाग लिया और एकता एवं अखंडता का संदेश फैलाते हुए 3 लाख किमी से अधिक की दूरी तय की।

महात्मा गांधी हमेशा स्वच्छता पर जोर दिया करते थे। देश भर में 6,300 से अधिक स्थानों पर आरपीएफ कर्मियों के श्रमदान के माध्यम से 'स्वच्छता अभियान' का आयोजन किया गया, जिसमें आरपीएफ कर्मियों ने जनता के बीच 'स्वच्छ भारत' के संदेश को फैलाने में भाग लिया।

आरपीएफ कर्मियों की मोटरसाइकिल रैली को 1 जुलाई को देश भर के 75 स्थानों से झंडी दिखाकर रवाना किया गया था। वे आगे 4 प्रतिष्ठित स्थानों अर्थात बापूधाम, मोतिहारी (बिहार), जलियाँवाला बाग (पंजाब), साबरमती आश्रम (गुजरात) और हुसैन सागर झील, हैदराबाद (तेलंगाना) पर एकत्र हुए, जिनका हमारे स्वतंत्रता संग्राम या देश के एकीकरण के इतिहास में काफी महत्त्व है। वहां से रास्ते में अत्यधिक उत्साह और ऊर्जा का प्रसार करते हुए वे राजधानी दिल्ली की ओर चल पड़े। देश भर में एक लाख किमी से अधिक की यात्रा करने के बाद 13 अगस्त को रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश और अन्य गणमान्य हस्तियों की उपस्थिति में एक 'फ्लैग-इन' समारोह में उनका स्वागत किया। रास्ते में आरपीएफ बाइकर्स ने शांति, भाईचारे, राष्ट्रवाद और राष्ट्र निर्माण की दिशा में सामूहिक प्रयास का संदेश दिया। उनके पड़ाव की जगहों को मोबाइल वीडियो वॉल और बैंड शो के साथ उत्सव स्थल में बदल दिया गया था। यह मोटरसाइकिल रैली देश के 1,650 ब्लॉक और 550 जिलों में रहने वाले लोगों तक पहुंचने का एक अनूठा प्रयास रही।

भारतीय रेल ने धूमधाम से मनाया 76वां स्वतंत्रता दिवस

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के मुख्य पर्व के रूप में 15 अगस्त, 2022 को संपूर्ण भारतीय रेल पर स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। यहां प्रस्तुत हैं स्वतंत्रता दिवस समारोह की कुछ झलकियाँ:



76वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने आवास पर राष्ट्रीय ध्वज को फहराने के बाद उसे सलामी देते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव



राष्ट्रीय ध्वज को फहराने के बाद उसे सलामी देते हुए रेल राज्य मंत्री श्री रावसाहेब पाटील दानवे



राष्ट्रीय ध्वज को फहराने के पश्चात् ध्वज वंदन करतीं रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश



रेल भवन में 12 अगस्त, 2022 को 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के तहत रेलवे बोर्ड से सेवानिवृत्त हो चुके और 75 वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके रेलकर्मियों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के एवज में स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित करते हुए अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी निदेशक, रेलवे बोर्ड श्री विनय कुमार त्रिपाठी

मध्य रेल



भारत के 76वें स्वतंत्रता दिवस के उत्सव के अवसर पर महाप्रबंधक, मध्य रेल श्री अनिल कुमार लाहोटी ने सलामी ली और सभी रेलवे कर्मचारियों और उनके परिवारों सहित अपने करोड़ों प्रतिष्ठित रेल ग्राहकों को हार्दिक बधाई दी।

पूर्व तट रेलवे



श्री शरद कुमार श्रीवास्तव, महाप्रबंधक, पूर्व तट रेलवे ने भारत के 76वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया और रेलवे सुरक्षा बल द्वारा आयोजित भव्य परेड की सलामी ली।

उत्तर मध्य रेलवे

15 अगस्त, 2022 को स्वतंत्रता दिवस समारोह बड़ी धूमधाम और जोश के साथ मनाया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक, श्री प्रमोद कुमार ने झंडा फहराया और रेलवे सुरक्षा बल, भारत स्काउट एवं गाइड्स और सेंट जॉन एम्बुलेंस ब्रिगेड द्वारा आयोजित परेड का निरीक्षण किया।



पूर्वोत्तर रेलवे



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सैयद मोदी रेलवे स्टेडियम, गोरखपुर में आयोजित एक समारोह में महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे श्री अशोक कुमार मिश्रा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और रेलवे सुरक्षा बल के जवानों की टुकड़ी, नागरिक सुरक्षा संगठन के सदस्यों, उत्तर पूर्व रेलवे भारत स्काउट्स/गाइड्स सहित रेलवे स्कूलों के छात्रों द्वारा आयोजित परेड का निरीक्षण किया।

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे पर स्वतंत्रता दिवस पर मुख्य समारोह 15 अगस्त, 2022 को एनएफआरएसए परिसर, मालीगांव में आयोजित किया गया, जहां श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और डॉग स्क्वाड तथा भारत स्काउट्स एंड गाइड्स सहित आरपीएफ की टुकड़ियों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रभावशाली गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण किया।



उत्तर रेलवे



उत्तर रेलवे पर स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह का आयोजन मुख्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली में किया गया। श्री आशुतोष गंगल, महाप्रबंधक ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और 75 बसंत पार कर चुके कुछ रेलकर्मियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए। इस अवसर पर उत्तर रेलवे के सभी प्रमुख विभागाध्यक्ष और वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

दक्षिण पूर्व रेलवे

76वें स्वतंत्रता दिवसर के अवसर पर सुश्री अर्चना जोशी, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और समारोह में रेलवे सुरक्षा बल की टुकड़ी, नागरिक सुरक्षा, सेंट जॉन एम्बुलेंस ब्रिगेड और भारत स्काउट्स एंड गाइड्स की टुकड़ियों द्वारा आयोजित परेड की सलामी ली।



दक्षिण रेलवे



भारतीय स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री बी. जी. माल्या, महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। समारोह में दक्षिण रेलवे के प्रमुख विभागाध्यक्ष, दक्षिण रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्ष श्रीमती रेणुका माल्या, अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्यों के साथ श्रमिक संघों और संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

पश्चिम मध्य रेलवे



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे श्री सुधीर कुमार गुप्ता ने रेलवे स्टेडियम में आयोजित समारोह में राष्ट्रीय ध्वज फहराया और रेलवे सुरक्षा बल से सलामी ली। इस अवसर पर रेलवे परिसर में देशभक्ति के गीत गूंज उठे। इस अवसर पर 75 वर्ष की आयु पूरी कर चुके पूर्व-रेलवे कर्मचारियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए।

दक्षिण पश्चिम रेलवे



आज़ादी का अमृत महोत्सव के तहत महाप्रबंधक, दक्षिण पश्चिम रेलवे श्री संजीव किशोर ने भारतीय पुलिस पदक विजेताओं के साथ स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित किया और सिकंदराबाद के रास्ते से नई दिल्ली तक आरपीएफ मोटरसाइकिल रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

कोंकण रेलवे



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री संजय गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक/ केआरसीएल ने कोंकण रेल विहार - नेरुल, नवी मुंबई में राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जिसके बाद रेलवे सुरक्षा बल/ कोंकण रेलवे द्वारा परेड का आयोजन किया गया।

रेल पहिया कारखाना



स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर महाप्रबंधक, रेल पहिया कारखाना, श्री पी. एन. झा ने राष्ट्रीय झंडा फहराया और उपस्थित जन-समूह को संबोधित किया। श्रीमती अर्चना झा, अध्यक्ष, आरडब्ल्यूएफ महिला कल्याण संगठन एवं अन्य सदस्य, आरडब्ल्यूएफ के अधिकारी एवं कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य भी इस अवसर पर मौजूद थे।

चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स

चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना में 76वां स्वतंत्रता दिवस देशभक्ति एवं जोश के साथ मनाया गया। महाप्रबंधक श्री सतीश कुमार कश्यप ने ओवल ग्राउंड मे हुए मुख्य समारोह में राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जिसके बाद चिरेका सांस्कृतिक संघ ने राष्ट्रगान प्रस्तुत किया।



बनारस रेल इंजन कारखाना

76वां स्वतंत्रता दिवस समारोह दिनांक 15 अगस्त, 2022 को बनारस रेल इंजन कारखाना स्टेडियम में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महाप्रबंधक सुश्री अंजलि गोयल द्वारा ध्वजारोहण के बाद राष्ट्रगान से हुआ। तत्पश्चात् महाप्रबंधक ने रेलवे सुरक्षा बल, सेंट जॉन्स एम्बुलेंस ब्रिगेड एवं नागरिक सुरक्षा दल की इकाइयों की परेड का निरीक्षण किया।



पश्चिम रेलवे



15 अगस्त, 2022 को पश्चिम रेलवे मुख्यालय, चर्चगेट, मुंबई में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक (प्रभारी) श्री प्रकाश बुटानी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर श्री बुटानी ने पश्चिम रेलवे के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को विशेष पदक प्रदान किए।

मेट्रो आरपीएफ द्वारा 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन

स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष के उपलक्ष्य में बेलगछिया आरपीएफ पोस्ट पर मेट्रो रेलवे के रेलवे सुरक्षा बल द्वारा 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मनाने के एक भाग के रूप में 01 अगस्त, 2022 की सुबह एक 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन किया गया। यह दौड़ आरपीएफ पोस्ट से शुरू हुई और करीब दो किमी की दूरी तय करने के बाद समाप्त हुई।

मेट्रो आरपीएफ द्वारा 08 अगस्त, 2022 को मेट्रो रेल भवन, पार्क स्ट्रीट से एक और 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन किया गया जो लगभग दो किमी की दूरी तय करते हुए समाप्त हुई। इस दौड़ में रेलवे सुरक्षा बल के वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। इस दौड़ का आयोजन लोगों में एकजुटता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए किया गया। यह पहल इस महान राष्ट्र के हर एक व्यक्ति को एकजुट करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगी।

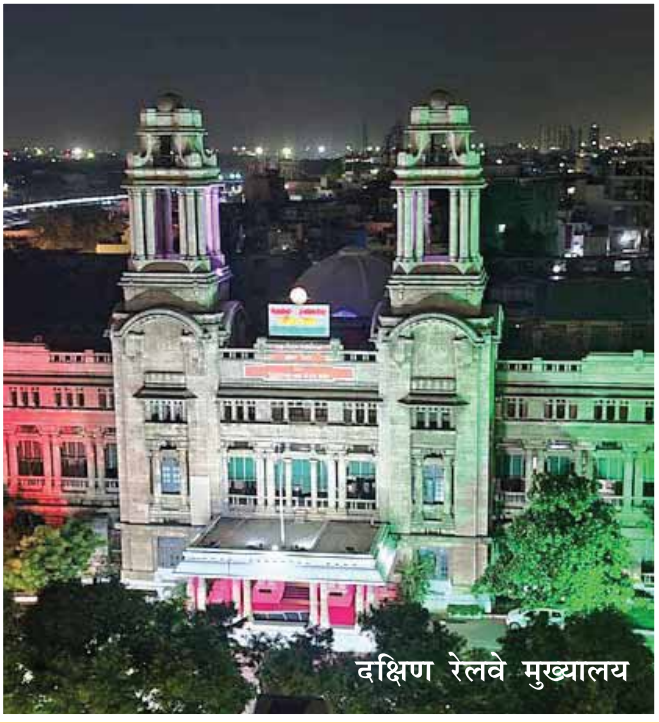


आज़ादी का अमृत महोत्सव

तिरंगे के रंगों से सराबोर हुई भारतीय रेल



रेल भवन
नई दिल्ली



दक्षिण रेलवे मुख्यालय



वाराणसी सिटी रेलवे स्टेशन



कामाख्या रेलवे स्टेशन

अहमदाबाद रेलवे स्टेशन



अगरतला रेलवे स्टेशन



डॉ. एम.जी.आर. चेन्नई रेलवे स्टेशन



जबलपुर रेलवे स्टेशन



अहमदनगर रेलवे स्टेशन



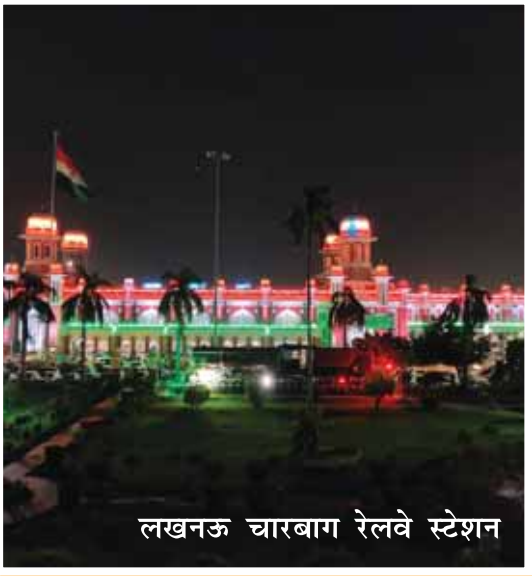
शिमला रेलवे स्टेशन



वडोदरा रेलवे स्टेशन



लखनऊ चारबाग रेलवे स्टेशन



आज़ादी का अमृत महोत्सव


भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी, वडोदरा


केंद्रीय रेलवे विद्युतीकरण संगठन, प्रयागराज


वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी रेलवे स्टेशन


पश्चिम रेलवे मुख्यालय, चर्च गेट



एकता नगर रेलवे स्टेशन


वाराणसी रेलवे स्टेशन


गांधीनगर रेलवे स्टेशन

संसद में भारतीय रेल

संसद सत्र के दौरान सांसदों द्वारा भारतीय रेल के संबंध में पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर में रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने निम्नलिखित जानकारियाँ दीं

(प्रस्तुत हैं, संकलित अंश)

रेलवे स्टेशनों पर डिजिटल भुगतान





रेलवे स्टेशनों पर नकद में भोज्य पदार्थों की बिक्री बंद करने की कोई योजना नहीं है। बहरहाल, रेलवे स्टेशनों पर खानपान इकाइयों के माध्यम से भोज्य पदार्थों की खरीद के लिए डिजिटल पद्धति द्वारा लेन-देन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य यात्रियों को भुगतान के अतिरिक्त विकल्पों की सुविधा उपलब्ध करवाना है। 2017 के वाणिज्यिक परिपत्र 20 के तहत जारी मौजूदा खानपान नीति के अनुसार, सभी स्थैतिक इकाइयों में कैशलेस लेन-देन, जैसे पीओएस/स्वाइप मशीन आदि की सुविधा अनिवार्य रूप से उपलब्ध होगी।

रेलवे स्टेशन पर सीसीटीवी कैमरे



रेल मंत्रालय ने हॉल्ट स्टेशनों को छोड़कर सभी स्टेशनों पर क्लोज्ड सर्किट टेलीविजन (सीसीटीवी) के प्रावधान के लिए कार्यों को अनुमोदित कर दिया है। अब तक 861 स्टेशनों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। जोन-वार सूची सारणी में दी गई है। शेष स्टेशनों के लिए कार्य प्रक्रियाधीन है।

क्र. सं.	रेलवे	स्टेशनों की संख्या
1	मध्य	113
2	पूर्व तट	19
3	पूर्व मध्य	56
4	पूर्व	27
5	कोंकण	67
5	मेट्रो	33
6	उत्तर मध्य	30
7	पूर्वोत्तर	25
8	पूर्वोत्तर सीमा	41
9	उत्तर	106
10	उत्तर पश्चिम	34
11	दक्षिण मध्य	58
12	दक्षिण पूर्व मध्य	26
13	दक्षिण पूर्व	53
14	दक्षिण	58
15	दक्षिण पश्चिम	24
16	पश्चिम मध्य	26
17	पश्चिम	65
	कुल योग	**861**

दिव्यांगजनों के लिए एलएचबी कोच



भारतीय रेल द्वारा दिव्यांग व्यक्तियों (दिव्यांगजनों) का कल्याण सुनिश्चित करने के लिए दिव्यांग व्यक्तियों की चार कोटियों को रियायती किराए की सुविधा प्रदान करना, ऑनलाइन आरक्षित रियायती टिकट बुकिंग सुविधा, स्लीपर और 3एसी श्रेणियों में आरक्षित कोटा का निर्धारण, महत्त्वपूर्ण पीआरएस स्थानों पर अलग आरक्षण काउंटर निर्धारित करना, स्टेशनों पर एसटीडी/आईएसडी पीसीओ बूथों के आवंटन में 25 प्रतिशत कोटा, व्हीलचेयर की व्यवस्था और बैटरी चालित वाहन 'यात्री मित्र' सेवा को शुरू करना, विशेष रूप से डिजाइन किए गए सवारी डिब्बे जिन्हें एसएलआरडी (दिव्यांगजन हेतु कंपार्टमेंट सहित द्वितीय श्रेणी सह लगेज एवं ब्रेक यान) और एलएसएलआरडी सवारी डिब्बों के रूप में जाना जाता है, को जोड़ना; एस्केलेटरों, लिफ्टों, रैंपों की व्यवस्था, दिव्यांगजनों हेतु उपयुक्त पेयजल के नल और शौचालय, पार्किंग स्थल से भवन तक फिसलन रहित पैदल पथ, समुचित दृश्यता वाले संकेतक, 'मे आई हेल्प यू' (क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूं) बूथ आदि जैसे विभिन्न कदम उठाए गए हैं।

भारतीय रेल द्वारा सवारी डिब्बा कारखाना (आईसीएफ) के सवारी डिब्बों में संचालित की जा रही लगभग सभी मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों में अंतिम व्यवस्थित डिब्बे (एसएलआरडी) में दिव्यांग व्यक्तियों (दिव्यांगजनों) के लिए निर्धारित पृथक् कंपार्टमेंट की सुविधा पहले ही दे दी गई है। इन सवारी डिब्बों में चौड़े प्रवेश द्वार, चौड़े बर्थ, चौड़े कंपार्टमेंट, बड़े शौचालय और बड़े दरवाजे, व्हील चेयर पार्किंग स्थल आदि हैं। शौचालय के भीतर सहारे के लिए साइड दीवारों पर अतिरिक्त ग्रैब रेल तथा उपयुक्त उचित ऊंचाई पर वॉश बेसिन और शीशा भी लगाया गया है। नए डिजाइन वाले लिंक हॉफमैन बुश (एलएचबी) सवारी डिब्बों में अंतिम एलएसएलआरडी सवारी डिब्बों में उपर्युक्त विशेषताओं के साथ डिजाइन किया गया है और विनिर्मित किया गया है। इन सवारी डिब्बों का क्रमिक रूप से प्रसार किया जा रहा है। 30 जून, 2022 तक लगभग 994 दिव्यांगजन अनुकूल सवारी डिब्बों (एलएसएलआरडी/ एलडीएसएलआर/ एलडीएसएलआरए) विनिर्मित किए जा चुके हैं। इस प्रकार के सवारी डिब्बों की परिचालनिक व्यवहार्यता और उपलब्धता के आधार पर आईसीएफ प्रकार के रेकों के साथ संचालित ट्रेनों में कम से कम एक पीडब्ल्यूडी (दिव्यांगजन) अनुकूल सवारी डिब्बा है। इसके अलावा, परिचालनिक व्यवहार्यता के आधार पर भारतीय रेल द्वारा पीडब्ल्यूडी (दिव्यांगजन) अनुकूल एलएचबी सवारी डिब्बों को भी शामिल किया गया है, जिन्हें तेजस एक्सप्रेस सहित प्रीमियम सेवाओं, जैसे राजधानी, शताब्दी, एसी एक्सप्रेस सेवाओं के अलावा एलएचबी रेकों के साथ संचालित की जाने वाली अधिकांश ट्रेनों में जोड़ा जाता है। इसके अलावा, एलएचबी वातानुकूलित इकोनॉमी सवारी डिब्बों जैसे नए डिजाइन किए गए सवारी डिब्बों को कोच के दो दरवाजों में से कम-से-कम एक चौड़े दरवाजे के साथ विनिर्मित किया जा रहा है। 30 जून, 2022 तक लगभग 348 एलडब्ल्यूएसीसीएनई सवारी डिब्बों को विनिर्मित किया गया है। ट्रेनों में पीडब्ल्यूडी (दिव्यांगजन) अनुकूल सवारी डिब्बों को शामिल करना, भारतीय रेल पर परिचालनिक व्यवहार्यता, चल स्टॉक की उपलब्धता आदि के आधार पर सतत् प्रक्रिया है।

प्रतिक्रियाओं के संबंध में भारतीय रेल को विभिन्न प्रकार के मंचों, जैसे कार्मिक एवं लोक शिकायत विभाग, जिसे सामान्यतः पीजी पोर्टल के रूप में जाना जाता है, रेल मदद, पूछताछ/शिकायत नंबर 139 के माध्यम से पीडब्ल्यूडी (दिव्यांगजन) सहित यात्रियों की सभी कोटियों से सुझाव/प्रतिक्रिया प्राप्त होती हैं। प्राप्त प्रतिक्रिया के आधार पर जहां भी आवश्यक और व्यवहार्य हो, निवारक कार्रवाई की जाती है।

वर्ष 2015 में ए1,ए और बी कोटि के रेलवे स्टेशनों को पूर्ण रूप से सुलभ स्टेशन बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। इसके पश्चात् सभी 709 ए-1, ए और बी कोटि के रेलवे स्टेशनों (पूर्ववर्ती) पर पीडब्ल्यूडी(दिव्यांगजनों) हेतु सुलभ बनाने के लिए सभी सुविधाओं, जैसे रैंपों, प्रवेश द्वार के निकट आरक्षित पार्किंग, सुलभ शौचालयों, सुलभ पेयजल सुविधाएं, सुलभ लिफ्टों, 'मे आई हेल्प यू' (क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूं) बूथों, संकेतकों आदि को मुहैया कराया गया है। रेलवे स्टेशनों पर निशक्तजन यात्रियों (दिव्यांगजन) को दी जाने वाली सुविधाओं के साथ सुधार/संवर्धन किया जाना सतत् प्रक्रिया है।

दीन दयालु योजना



दीन दयालु कोच गद्दीदार सामान रेक, द्वार क्षेत्र में अतिरिक्त हैंड होल्डर, बैग को टांगने के लिए 'जे' हुकों का प्रावधान, पोलीमराइज्ड फर्श कोटिंग वाला शौचालय, जैव-शौचालयों का प्रावधान, टॉयलेट ऑक्यूपेशन इंडिकेशन डिस्प्ले बोर्ड, मनमोहक आतंरिक एवं बाहरी रंग योजना आदि जैसे अतिरिक्त सुविधाओं सहित अनारक्षित यात्रियों के लिए सामान्य द्वितीय श्रेणी के कोच शामिल किए गए हैं। निर्मित एवं शामिल किए गए

दीन दयालु कोचों का वर्ष-वार ब्यौरा निम्नानुसार है:-

निर्माण का वर्ष		दीन दयालु कोचों की संख्या	
प्रकार	**आईसीएफ टाइप**	**एलएचबी टाइप**	**कुल**
2017-18	90	335	425
2018-19	0	600	600
2019-20	0	886	886
2020-21	0	585	585
2021-22	0	749	749

सामान्य श्रेणी के यात्रियों की यात्रा की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों में कम-से-कम दो सामान्य श्रेणी के कोचों को जोड़ा गया है। इसके अलावा, भारतीय रेल पूरी तरह से अनारक्षित लंबी दूरी की रेलगाड़ियों जैसे अंत्योदय एक्सप्रेस, जन साधारण एक्सप्रेस, जनसेवा एक्सप्रेस, जननायक एक्सप्रेस आदि का भी संचालन करती है, जो केवल सामान्य श्रेणी के एकोमोडेशन के साथ संचालित होती हैं। बहरहाल, सामान्य श्रेणी कोचों सहित सवारी डिब्बों का जोड़ना एक सतत् प्रक्रिया है और इसे विभिन्न श्रेणियों के यात्रियों के यातायात पैटर्न, परिचालनिक व्यवहार्यता, वाणिज्यिक औचित्य तथा संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखकर किया जाता है। इसके अलावा परिचालनिक व्यवहार्यता के अधीन, सामान्य श्रेणी के कोचों को भी व्यस्त मौसम, उत्सव आदि के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ से निपटने के लिए जोड़ा जाता है।

विस्टाडोम कोच

बड़ी लाइन, मीटर गेज लाइन और छोटी लाइन जैसे विभिन्न आमान के लिए विस्टाडोम कोच भारतीय रेल नेटवर्क पर प्रचालन में हैं। वर्तमान में, 23 जोड़ी ट्रेनों में 33 विस्टाडोम कोच जोड़े गए हैं। विस्टाडोम कोचों का निर्माण और इन्हें ट्रेन



क्षेत्रीय रेलवे	ट्रेन संख्या और नाम
मध्य रेल	11007/08 मुंबई-पुणे एक्सप्रेस 12051/52 मुंबई-मडगांव एक्सप्रेस 12123/23 डेक्कन क्वीन एक्सप्रेस 12125/26 मुंबई-पुणे एक्सप्रेस 12025/26 पुणे- सिकंदराबाद एक्सप्रेस
पूर्व तट रेलवे	08551/52 विशाखापट्टनम-किरंदूल एक्सप्रेस 08546/45 विशाखापट्टनम-कोरापुट एक्सप्रेस
पूर्वोत्तर सीमा रेलवे	15777/78 अलीपुरद्वार-न्यू जलपाईगुड़ी एक्सप्रेस 15887/88 गुवाहाटी- बदरपुर एक्सप्रेस 12088/87 गुवाहाटी- नाहरलगुन एक्सप्रेस 05888/87 गुवाहाटी- जोरहाट एक्सप्रेस
पश्चिम रेलवे	20947/50 अहमदाबाद- केवडिया एक्सप्रेस 52965/66 डॉ.अंबेडकर नगर-कालाकुण्ड ट्रेन 52001/02 बिलीमोरा-वघई पैसेंजर 12009/10 मुंबई-गांधीनगर एक्सप्रेस 52003/04 बिलीमोरा-वघई पैसेंजर
दक्षिण पश्चिम रेलवे	16539/40 यशवंतपुर- मंगलौर एक्सप्रेस 16515/16 यशवंतपुर- कारवार एक्सप्रेस 16575/76 यशवंतपुर- मंगलौर एक्सप्रेस 16579/80 यशवंतपुर- शिमोगा एक्सप्रेस
उत्तर रेलवे	52459/60 कालका- शिमला हिम दर्शन 52453/54 कालका- शिमला मेल 04647/48 पठानकोट- बैजनाथ-पपरौला

सेवाओं में शामिल करना प्रचालनात्मक व्यवहार्यता, ट्रेन का समय-सारणी, यातायात औचित्य और रोलिंग स्टॉक की उपलब्धता के अधीन एक सतत् प्रक्रिया है। सवारी डिब्बा कारखाना, चेन्नै में 12 एल.एच.बी. विस्टाडोम कोचों का निर्माण किया जा रहा है। रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला में कालका शिमला रेलवे के लिए 30 नैरो गेज विस्टाडोम कोच निर्माणाधीन हैं। पूर्वोत्तर सीमा रेलवे में 10 नैरो गेज कोचों को विस्टाडोम कोचों में बदलने का कार्य चल रहा है।

भारतीय रेल में लैंगिक समानता के लिए उठाए जा रहे कदम



31 मार्च, 2021 की स्थिति के अनुसार, भारतीय रेल में कार्यरत 12,52,347 कुल कर्मचारियों में से महिला कर्मचारियों की संख्या 98,540 है, जो रेलवे में 7.87% की दर से रोजगार की समग्र भागीदारी का प्रतिनिधित्व करती हैं। रे.सु.ब में, वर्ष 2018 से पहले महिला कर्मियों का प्रतिशत लगभग 3% था। वर्ष 2018 में कांस्टेबलों और उप-निरीक्षकों की रिक्तियों में से, क्रमशः लगभग 49% और लगभग 27% रिक्तियों को महिलाओं के लिए आरक्षित/अधिसूचित किया गया था, जिससे यह प्रतिशत बढ़कर 9% हो गया है। इसके अलावा निम्नलिखित कदम उठाए जा रहे हैं:

महिला उम्मीदवारों से एकत्र आवेदन शुल्क को परीक्षा में उपस्थित होने पर वापस कर दिया जाता है। विधवाओं, तलाकशुदा महिलाओं और पति से न्यायिक रूप से अलग रहने वाली, परन्तु पुनः विवाह न करने वाली महिला उम्मीदवार के मामले में अधिकतम आयु सीमा में 35 वर्ष की आयु तक की छूट दी जाती है। लेवल-1 श्रेणियों के लिए महिला उम्मीदवारों के लिए शारीरिक दक्षता परीक्षा (पीईटी) के लिए अर्हता मानकों में छूट दी जाती है। इसके अतिरिक्त, महिलाकर्मियों की सुरक्षा और कार्यस्थल पर उन्हें संरक्षित करने हेतु रेलवे द्वारा महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध और प्रतितोष) अधिनियम, 2013 अधिनियमित किया गया है और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। महिलाओं के कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न संबंधित शिकायतों के 'आंतरिक शिकायत समिति' (आईसीसी) का गठन करने के लिए जोनल रेलों/उत्पादन इकाइयों आदि को अनुदेश जारी किए गए हैं।

रेलवे स्टेशनों का सौंदर्यीकरण

रेल मंत्रालय ने भारतीय रेल में स्थित स्टेशनों के उन्नयन/सौंदर्यीकरण के लिए विभिन्न योजनाएं जैसे मॉडल, मॉडर्न एवं आदर्श स्टेशन योजनाएं बनाई हैं। वर्तमान में स्टेशनों पर चिह्नित बेहतर उन्नत यात्री सुविधाएं प्रदान करने की आवश्यकता के आधार पर 'आदर्श' स्टेशन योजना के तहत रेलवे स्टेशनों का उन्नयन/सौंदर्यीकरण किया जाता है। 'आदर्श स्टेशन योजना' के तहत 1,253 स्टेशनों को विकास हेतु चिन्हित किया गया है, जिसमें से अब तक 1,215 स्टेशनों का विकास किया जा चुका है व शेष स्टेशनों को 2022-23 तक विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है। उपरोक्त के अलावा रेलवे स्टेशनों का बड़े पैमाने पर उन्नयन के लिए एक नई योजना शुरू की गई है, जिसके तहत अब तक उन्नयन के लिए 52 स्टेशनों की पहचान की गई है।

आदर्श स्टेशन योजना के तहत स्टेशनों के सौंदर्यीकरण/उन्नयन पर होने वाले व्यय को सामान्यतः योजना शीर्ष-53 'यात्री सुविधाएं'



के तहत वित्तपोषित किया जाता है। वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान, योजना शीर्ष-53 के तहत ₹2,344.55 करोड़ आवंटित किए गए थे और वर्तमान वित्त वर्ष 2022-23 में, योजना शीर्ष-53 के तहत ₹2,700 करोड़ की राशि आवंटित की गई है। गुजरात में 'आदर्श स्टेशन योजना' के तहत 32 स्टेशनों की पहचान की गई है। इसके तहत सभी 32 स्टेशनों को विकसित किया गया है। 'आदर्श स्टेशन योजना' के तहत गुजरात राज्य में स्थित विकास के लिए चिह्नित किए गए स्टेशनों के नाम इस प्रकार हैं: अंबली रोड, बेचराजी, भक्तिनगर, भंवड़, भटारिया, दाहोद, गांधीधाम, गांधीग्राम, हिम्मतनगर, जामनगर, काडी, खंबलिया, किम, कोसांबा, लालपुरजाम, मणिनगर, नवसारी, नई भुज, ओखा, पालनपुर, उंजा, साबरमती, सिद्धपुर, उधना, ऊना, वडनगर, विजापुर, विसनगर, व्यारा, गांधीनगर राजधानी, साबरमती ब.ला. और पाटण।

गुजरात में पाँच-उधना, सूरत, सोमनाथ, साबरमती और न्यू भुज की पहचान 'स्टेशनों का बड़े पैमाने पर उन्नयन योजना के तहत की गई है।

भारतीय रेल में मानव दुर्व्यापार रोकने के प्रयास



भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची के अंतर्गत 'पुलिस' एवं 'कानून व्यवस्था', राज्यों के विषय हैं और इस प्रकार रेलों में अपराधों का निवारण, पता लगाना, पंजीकरण और जांच करना तथा कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना आदि राज्य सरकारों की जिम्मेदारी है, जिसका निर्वहन वे अपनी कानून प्रवर्तन एजेंसियों यथा राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी)/स्थानीय पुलिस के माध्यम से करते हैं। रेलवे सुरक्षा बल (रे.सु.ब.) यात्री क्षेत्र और यात्रियों को बेहतर सुरक्षा मुहैया कराने और इससे संबंधित मामलों में जीआरपी/स्थानीय पुलिस के प्रयासों में सहयोग करता है। रे.सु.ब. को मानव तस्करी के मामलों की जांच करने का अधिकार नहीं है और जब कभी रे.सु.ब. द्वारा संदिग्ध मानव तस्करी के किसी मामले का पता लगाया जाता है तो उसे जीआरपी/जिला पुलिस को सूचित किया जाता है। बचाए गए और गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों को कानून के अनुसार आगे की आवश्यक कार्रवाई करने के लिए संबंधित पुलिस को सौंप दिया जाता है।

रेलवे के संपर्क में आने वाले वे बच्चे जिनकी देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता होती है और जो मानव तस्करी के संभवत: शिकार हो सकते हैं, ऐसे बच्चों के बचाव के लिए आरपीएफ द्वारा शुरू किए गए ऑपरेशन 'नन्हे फरिश्ते' के अंतर्गत रेलवे द्वारा महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और एनसीपीसीआर (राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग) के समन्वय से जारी की गई मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के प्रावधानों के अनुसार नियमित रूप से बचाया जाता है। मानव तस्करी के खिलाफ कार्रवाई को मजबूत करने के लिए भारतीय रेल में आरपीएफ द्वारा 750 से अधिक मानव तस्करी रोधी इकाइयां (एएचटीयू) स्थापित की गई हैं। ये एएचटीयू पुलिस और सीएपीएफ (केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल) की एएचटीयू अर्थात् जिला स्तर/राज्य स्तर/अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर कार्यरत बीएसएफ और एसएसबी और खुफिया इकाइयों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य हितधारकों के साथ समन्वय करती हैं और कानून के अनुसार तस्करों पर प्रभावी कार्रवाई करती हैं।

आरपीएफ ने एसोसिएशन ऑफ वॉलियंटरी एक्शन (एवीए) जिसे 'बचपन बचाओ आंदोलन' (एक गैर सरकारी संगठन) के रूप में भी जाना जाता है, के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया है, जो बाल संरक्षण से संबंधित सभी मुद्दों और संवेदीकरण व जागरूकता अभियानों के कार्यान्वयन में आरपीएफ, जीआरपी और अन्य रेलवे कर्मचारियों के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण में सहायता कर रहा है। इसके अलावा एवीए संदिग्ध तस्करों और उनकी गतिविधियों से संबंधित खुफिया जानकारी आरपीएफ के साथ साझा करता है ताकि छापेमारी की जा सके और तस्करी किए गए बच्चों को बचाने में सहायता मिल सके।

इसके अलावा रेलवे के माध्यम से मानव तस्करी के मामलों में प्रभावी कार्रवाई करने के लिए आरपीएफ द्वारा एक अखिल भारतीय अभियान 'ऑपरेशन आहट' चलाया गया है। चालू वर्ष (जून तक) के दौरान 'ऑपरेशन आहट' के अंतर्गत रेलवे प्रणाली के माध्यम से तस्करी किए जा रहे कुल 150 बच्चों को आरपीएफ ने तस्करों के चंगुल से छुड़ाया है। इसके अलावा, ट्रेनों के माध्यम से और रेलवे परिसरों से मानव तस्करी को रोकने के लिए रेलवे द्वारा जीआरपी/जिला पुलिस के समन्वय से निम्नलिखित कदम उठाए जा रहे हैं:-

- ट्रेन मार्गरक्षण दलों और जन संपर्क क्षेत्रों में तैनात कर्मचारियों को तस्करी के संदेह वाले पीड़ितों की पहचान करने के लिए संवेदनशील बनाया गया है और प्रशिक्षित किया गया है और उन्हें बचाने के लिए तत्काल कार्रवाई की गई है।
- मानव तस्करी के खिलाफ आरपीएफ द्वारा की जाने वाली कार्य योजना का विवरण देते हुए 02 फरवरी, 2022 को एक विस्तृत सुरक्षा परिपत्र संख्या 03/2022 जारी किया गया है।
- राज्य पुलिस के प्रयासों में सहायता करने के लिए आरपीएफ के साइबर सेल को वेब/सोशल मीडिया की साइबर पेट्रोलिंग के लिए निर्देश दिए गए हैं ताकि इंटरनेट में मानव तस्करी के डिजिटल फुट प्रिंट्स/सुराग तलाशे जा सकें और रेलवे के माध्यम से 'मानव तस्करी' के खिलाफ कार्रवाई करने में सहायक सुराग इकट्ठे किए जा सकें।
- आरपीएफ प्रशिक्षण केंद्रों में संचालित सभी प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में 'मानव तस्करी' के विषय को शामिल किया गया है। साथ ही, पीड़ितों और तस्करों की पहचान करने के लिए आरपीएफ कर्मियों को संवेदनशील बनाने तथा उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए समय-समय पर विशेष संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं।
- मानव तस्करी से निपटने के लिए किए गए प्रयासों की समीक्षा के लिए समय-समय पर मानव तस्करी रोधी इकाइयों और अन्य संबंधित एजेंसियों के नोडल अधिकारियों के साथ आवधिक समीक्षा बैठकें आयोजित की जाती हैं।
- यात्रियों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए 5,882 सवारी डिब्बों और 861 रेलवे स्टेशनों पर लगे सीसीटीवी कैमरों से निगरानी रखी जाती है।

'मिशन रफ्तार' योजना

'मिशन रफ्तार' गति बढ़ाने और मालगाड़ियों की औसत गति को दोगुना करने तथा सुपरफास्ट/मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों की औसत गति को 25 किमी प्रति घंटे तक बढ़ाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक 'मिशन' है, न कि अकेले चल सकने वाली कोई 'परियोजना' 'मिशन रफ्तार' के अंतर्गत निधियों के समग्र आवंटन और उपयोग को निर्धारित नहीं किया जा सकता है।

बजट सत्र 2022 में पेश की गई सीएजी रिपोर्ट ने भारतीय रेल के ट्रेन परिचालन में समय की पाबंदी और यात्रा के समय का समग्र रूप से विश्लेषण किया है। 'मिशन रफ्तार' रिपोर्ट तैयार करने के लिए ऑडिट मानदंड के रूप में प्रयोग किए जाने वाले केवल एक दस्तावेज है। ट्रेनों की गति बढ़ाना भारतीय रेल का निरंतर प्रयास एवं सतत् प्रक्रिया है जो प्रौद्योगिकी के आधुनिकीकरण, उच्च शक्ति वाले इंजनों, आधुनिक सवारी डिब्बों और बेहतर पटरियों में रेलवे द्वारा किए गए निवेश के ईष्टतमीकरण पर निर्भर है। इस उद्देश्य के लिए भारतीय रेल अन्य बातों के साथ-साथ



हॉफमैन बुश (एलएचबी) डिब्बों, जिनमें उच्च गति क्षमता है, का उत्पादन कर रहा है। पारंपरिक डिब्बों के साथ चलने वाली यात्री ट्रेनों को मेमू सेवाओं (जिनमें अविश्वसनीय शक्ति के कारण उच्च त्वरण/अवमंदन है) में परिवर्तित कर रही है। 'मिशन रफ्तार' के एक भाग के रूप में और 2015-16 और 2021-22 की अवधि के दौरान 414 पैसेंजर ट्रेन सेवाओं को मेमू सेवाओं में परिवर्तित किया गया है।

भारतीय रेल 3,000 किमी से अधिक लंबे डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डीएफसी) का निर्माण कर रही है, जो मालगाड़ियों को 100 किमी प्रति घंटे की गति से चलाने में सक्षम बनाएगा।

मालगाड़ी की औसत गति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है:

वित्त वर्ष 2016-17 से वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान मालगाड़ियों की औसत गति 23.7 किमी/घंटा से बढ़कर 41.2 किमी/घंटा हो गई है।

मिशन रफ्तार एक 'मिशन' है न कि 'योजना/परियोजना', और ट्रेनों की औसत गति में सुधार भारतीय रेल के लिए सतत् प्रक्रिया है।

आप सबका **भारतीय रेल** के साथ अटूट रिश्ता है

भारतीय रेल के साथ आप अपने संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत, लेख आदि हिन्दी में हमें भेज सकते हैं। पसंद आने पर रचनाओं को हम रेल मंत्रालय की आधिकारिक मासिक पत्रिका

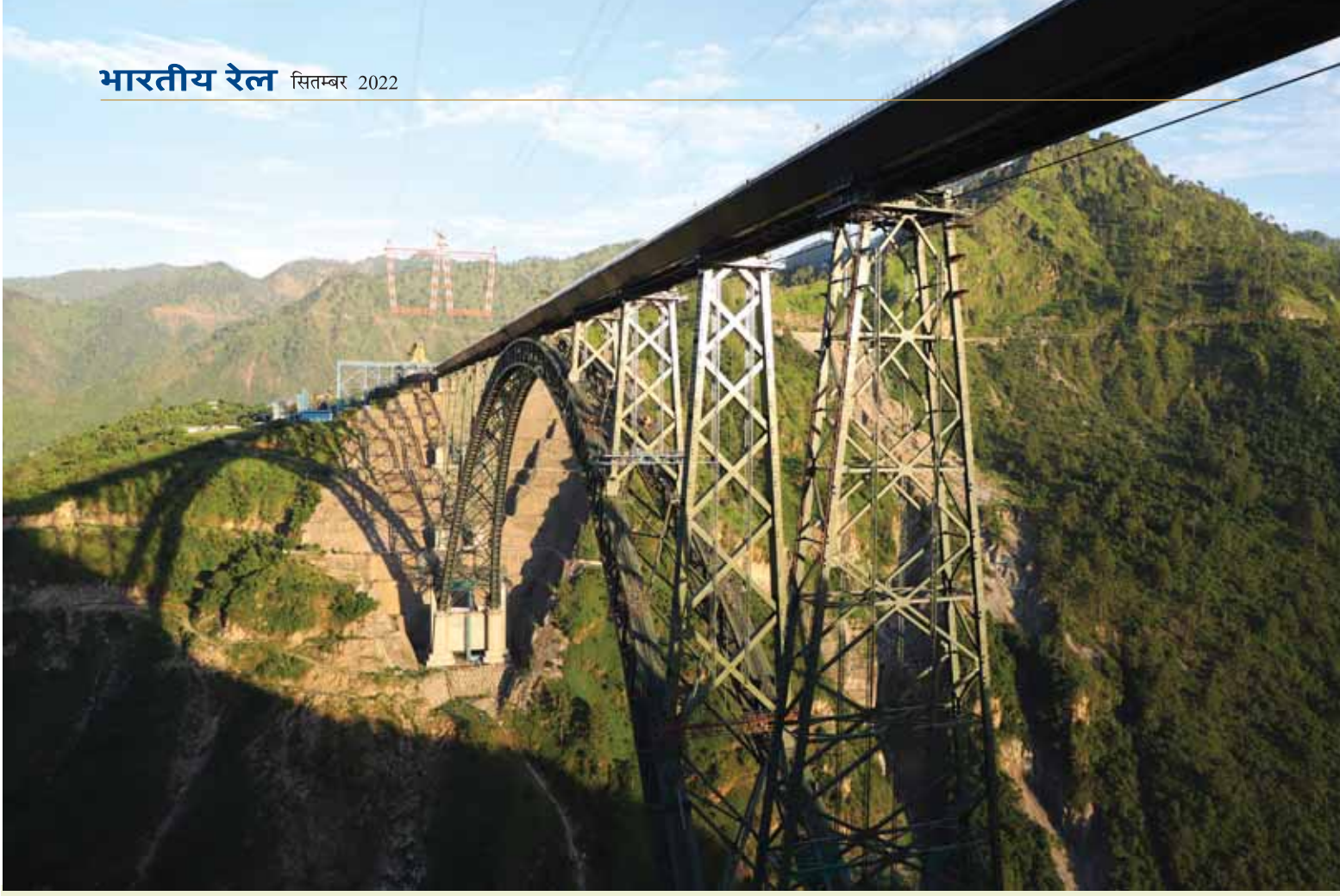
भारतीय रेल

में प्रकाशित करेंगे

ईमेल editorbhartiyarailrb@gmail.com

चयनित सामग्री लेख की जानकारी ईमेल से दी जाएगी,
प्रकाशित रचनाओं के लिए रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानदेय भी दिया जाएगा

शर्तें लागू



चिनाब ब्रिज के डेक के गोल्डन ज्वाइंट का कार्य पूर्ण

यूएसबीआरएल राष्ट्रीय परियोजना में उस समय एक और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की गयी जब चिनाब नदी के आर्क के भाग के ऊपर दोनों ओर से डेक लॉन्च करके उसे बीच से जोड़ दिया गया। समारोह का आयोजन चिनाब पुल पर हुआ। इस मौके पर यूएसबीआरएल के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री सुरिंदर माही, मुख्य इंजीनियर श्री बी.बी.एस. तोमर, केआरसीएल के मुख्य प्रबंधक निदेशक श्री संजय गुप्ता, केआरसीएल के ई.डी. श्री आर.के. हेगड़े और एएफसीओएन के निदेशक श्री आर. गिरधर उपस्थित थे।

इस ज्वाइंट को 'गोल्डन ज्वाइंट' नाम दिया गया है। प्री-फैब्रिकेटिड हिस्सों को जोड़कर और फिर दोनों सिरों से लॉन्च करके चिनाब पुल के ऊपर 785 मीटर का डेक लॉन्च करने का कार्य किया गया। गोल्डन ज्वाइंट ब्रिज डेक का अंतिम जोड़ है, जो आर्क पर डेक के दोनों हिस्सों को जोड़ता है और इसे एक निरंतर संरचना का रूप देता है। पुल के दो हिस्सों को एक जगह पर लगाने के बाद इसे एचएसएफजी बोल्ट के जरिए कसा जाएगा।

भारतीय रेल ने एक रेल लिंक के माध्यम से कश्मीर घाटी को शेष भारत से जोड़ने के लिए यह परियोजना शुरू की है। दुर्गम हिमालयी क्षेत्र में इस अभूतपूर्व निर्माण से ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक जम्मू एवं कश्मीर लोगों को हर मौसम में जोड़ने वाला परिवहन माध्यम उपलब्ध कराएगा। यह परियोजना जन-यातायात प्रणाली के रूप में गेम चेंजर होने के साथ-साथ इस क्षेत्र में व्यापार और पर्यटन के अवसर भी सृजित करेगी। दुनिया का सबसे ऊँचा रेल पुल, चिनाब पुल, जोकि एक भव्य संरचना है, भी इसी परियोजना का हिस्सा है। इसे जम्मू एवं कश्मीर के रियासी जिले में चिनाब नदी के खड्डे पर बनाया जा रहा है। 1,315 मीटर की कुल लम्बाई वाला यह आर्क पुल नदी की सतह से 359 मीटर ऊपर है।

5 अप्रैल, 2021 को क्लोजर ऑफ आर्क, जोकि स्मारकीय संरचना के निर्माण में एक प्रमुख मील का पत्थर है, को पूरा किया गया है। यह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण था कि आर्क को लगाने का कार्य जम्मू और श्रीनगर की ओर स्थित दोनों सिरों से किया गया। इसे बीच से सटीक मिलान किया जाना था।

इस मैगा स्ट्रक्चर के निर्माण का ज्यादातर कार्य समाप्ति पर है। अब शीघ्र ही गिट्टी रहित रेलपथ बिछाया जाएगा।

पुल की अनूठी विशेषताएं :-

- नदी की सतह से 359 मीटर ऊँचा होने के कारण यह दुनिया का सबसे ऊँचा रेल पुल है, जोकि पेरिस के एफिल टावर से 35 मीटर ऊँचा है।
- भारत में पहली बार आर्क में कंक्रीट से भरे ट्रस का इस्तेमाल किया जा रहा है।
- भारत में पहली बार पुल के निरीक्षण और रख-रखाव के लिए बिजली से चलने वाली कारें प्रदान की जा रही हैं।
- अत्याधुनिक इंस्ट्रूमेंटेशन के लिए एक सतत् स्वास्थ्य निगरानी और चेतावनी प्रणाली लगाई जा रही है।
- पुल के स्टिल मैम्बरों को लगाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली केबल क्रेन का स्पैन 915 मीटर का है, जोकि दुनिया का सबसे बड़ा केबल क्रेन स्पैन है।
- केबल क्रेन के एक पायलन की ऊँचाई 127 मीटर है, जोकि कुतुब मीनार से 72 मीटर ऊँची है।
- पहली बार डीआरडीओ के परामर्श से ब्लास्ट लोड के लिए पुल को डिजाइन किया गया है।
- वैल्डों के निरीक्षण के लिए चरणबद्ध सरणी अल्ट्रासोनिक टेस्टिंग मशीन।
- पहली बार भारतीय रेल पर वैल्डिड एलिमेंटों की जांच के लिए एनएबीएल से मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं।
- पुल को जोन-5 के भूकम्पीय झटकों को सहने के लिहाज से डिजाइन किया गया है।
- एस-40 फाउंडेशन पर 130.855 मीटर का सबसे ऊँचा स्टील का खम्बा कुतुब मीनार से 72 मीटर ऊँचा है।

उत्तर रेलवे ने
ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल लिंक परियोजना में एस्केप टनल टी-13 का ब्रेक-थ्रू किया



श्री आशुतोष गंगल, महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे ने बताया कि उत्तर रेलवे ने 02 अगस्त, 2022 को कटड़ा-बनिहाल रेल सेक्शन के डुग्गा और बसिंधार रेल स्टेशनों के बीच बन रही एस्केप टनल टी-13 का ब्रेक-थ्रू करके एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। टी-13 एस्केप टनल की लम्बाई 9.1 किमी और व्यास 4.6 मीटर है। घोड़े की नाल के आकार वाली इस टनल के दोनों सिरों को 2 अगस्त, 2022 को खोला गया। इस बचाव सुरंग को सभी चुनौतियों से निपटते हुए पाँच वर्ष में तैयार किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय रेल मानकों के अनुसार 3 किमी से अधिक लम्बी मुख्य सुरंग के साथ एस्केप टनल्स बनाई जाती हैं जोकि मुख्य सुरंग के समानांतर होती है और ये आकार में उससे छोटी होती हैं। इस टनल का ब्रेक-थ्रू समूचे ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल लिंक परियोजना के लिए एक बड़ी उपलब्धि साबित होगा तथा कश्मीर घाटी को समूचे भारत के साथ जोड़ने की राष्ट्रीय परियोजना को साकार करने में यह एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

इस एस्केप टनल के निर्माण के दौरान आई प्रमुख चुनौतियों में दुर्गम क्षेत्र, दूरवर्ती इलाके, अस्थिर भू-भाग और प्रतिकूल मौसम की स्थितियों के साथ-साथ सामाजिक दिक्कतें शामिल रहीं। इस टनल का ब्रेक-थ्रू समूचे ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल लिंक परियोजना के लिए एक बड़ी उपलब्धि साबित होगा।

देश की सबसे लंबी 3.5 किमी मालगाड़ी

सुपर वासुकी

का सफल परिचालन

देश की आज़ादी के अमृतकाल में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा 16 अगस्त, 2022 को देश की सबसे लंबी लोडेड मालगाड़ी का परिचालन किया गया। पांच लोडेड मालगाड़ियों को एक साथ जोड़कर इस ट्रेन का परिचालन बिलासपुर रेल मंडल के कोरबा से नागपुर रेल मंडल के राजनांदगांव तक किया गया। इस मालगाड़ी की कुल क्षमता 26,000 टन से अधिक थी। इस मालगाड़ी की कुल लंबाई 3.5 किमी के लगभग थी, जिसे 'सुपर वासुकी' नाम दिया गया।

इस ट्रेन में 295 कोयला लोडेड वैगनों को 6 जी 9 लोको जो कि डीपीडब्ल्यूसीएस तकनीक से परस्पर जुड़े हुए थे, के साथ कोरबा से राजनांदगांव तक लगभग 267 कि.मी. दूरी तक ले जाया गया। डीपीडब्ल्यूसीएस तकनीक द्वारा सभी इंजन लीडिंग इंजन से रेडियो वायरलेस सिस्टम द्वारा सिंक्रोनाइज रहते हैं यानि कि सबसे आगे के लीडिंग इंजन की कमांड का बाकी सभी इंजन स्वत: अनुसरण करते हैं।



फ्रेट ट्रेनों के परिचालन समय को कम करने, क्रू-स्टाफ की बचत एवं उपभोक्ताओं को त्वरित डिलीवरी के साथ सबसे महत्त्वपूर्ण पाथ का अधिकाधिक उपयोग करने हेतु लगातार लॉन्ग हाल मालगाड़ियों का परिचालन किया जा रहा है। इसके पूर्व भी दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा एनाकोंडा, सुपर एनाकोंडा, शेषनाग एवं वासुकी लॉन्ग हॉल ट्रेनों का परिचालन किया गया था। लॉन्ग हॉल ट्रेनों के परिचालन से न सिर्फ क्रू-स्टाफ की बचत होती है, बल्कि रेलवे ट्रैक का सही इस्तेमाल के साथ यह सराहनीय पहल प्रत्येक दृष्टिकोण से लाभकारी होती है।

3.5 किमी
भारत की सबसे लंबी भरी हुई रेलगाड़ी

6 जी9 लोको
295, वैगनों के साथ संचालित किए गए

26,000 टन
कोयला मालगाड़ी का भार

रेलवे सुरक्षा बल ने मानव तस्करी के खिलाफ देशव्यापी अभियान चलाया



आरपीएफ ने यात्रियों की सुरक्षा सम्बन्धी शिकायतों का समाधान करने की कारगर प्रणाली विकसित कर ली है, जिसके दम पर पिछले पांच वर्षों के दौरान आरपीएफ ने 2,178 लोगों को तस्करों के चंगुल से छुड़ाया। इसके साथ ही 65,000 से अधिक बच्चों और तमाम महिलाओं व पुरुषों को बचाया तथा उन्हें सुरक्षा दी। पुलिस की मानव तस्करी रोधी इकाइयों तथा अन्य इकाइयों के प्रयासों से आरपीएफ ने हाल ही में मानव तस्करी के विरुद्ध 'ऑपरेशन आहट' (एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग) नामक अभियान शुरू किया। इस पहल के अंग के रूप में आरपीएफ ने हाल में देशभर में 750 एएचटीयू की स्थापना की है, जो पुलिस, थानों में कार्यरत एएचटीयू, जिला और राज्य स्तरों पर खुफिया इकाइयों, गैर-सरकारी संगठनों और अन्य हितधारकों के साथ समन्वय करेंगी। आरपीएफ ने एसोसियेशन ऑफ वॉलंटेरी एक्शन (एवीए) नामक गैरसरकारी संगठन के साथ एक समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं, जो प्रशिक्षण के जरिये आरपीएफ की सहायता करेगा। इस संगठन को 'बचपन बचाओ आंदोलन' के नाम से भी जाना जाता है। इन प्रयासों में तेजी लाने के लिये मानव तस्करी के खिलाफ रेलवे के जरिये जुलाई 2022 में महीने भर का अभियान चलाया गया। आरपीएफ की क्षेत्रीय इकाइयों को सलाह दी गई थी कि वे राज्य पुलिस, स्थानीय कानूनी एजेंसियों और अन्य हितधारकों के साथ समन्वय बनाकर काम करें, ताकि मिली सूचनाओं पर तुरंत कार्रवाई की जा सके। विभिन्न राज्यों की पुलिस से भी आग्रह किया गया कि वे आरपीएफ के साथ संयुक्त कार्रवाई में हिस्सा लें। महीने के दौरान ऑप्रेशन-आहट में 151 नाबालिग लड़कों, 32 नाबालिग लड़कियों (कुल 183 नाबालिगों) और तीन महिलाओं को मानव तस्करों के चंगुल से छुड़ाया गया। साथ ही, 47 मानव तस्कर भी धरे गए।

रेलवे सुरक्षा बल ने ऑपरेशन यात्री सुरक्षा के अंर्तगत अखिल भारतीय अभियान संचालित किया

रेलयात्रियों की सुरक्षा में सुधार हेतु आरपीएफ ने 'ऑपरेशन यात्री सुरक्षा' कोड नाम के तहत एक अखिल भारतीय ऑपरेशन का शुभारंभ किया है। इस पहल के तहत यात्रियों को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए ट्रेन एस्कॉर्टिंग, स्टेशनों पर उपस्थिति, सीसीटीवी के माध्यम से निगरानी, सक्रिय अपराधियों पर निगरानी, अपराधियों के बारे में खुफिया जानकारी एकत्र करना और उस पर कार्रवाई, ब्लैक स्पॉट और अपराध की पहचान करने के साथ-साथ यात्रियों के खिलाफ अपराध को कम करने के लिए एक कार्रवाई योग्य रणनीति तैयार करने हेतु अपराध संभावित ट्रेनों/खंडों और अन्य स्थलों के साथ-साथ इनमें सुरक्षा बढ़ाने जैसे कई कदम उठाए जा रहे हैं।

'ऑपरेशन यात्री सुरक्षा' को गति देने के लिए आरपीएफ द्वारा जुलाई 2022 में यात्रियों को निशाना बनाने वाले अपराधियों के खिलाफ एक महीने के अखिल भारतीय अभियान का शुभारंभ किया गया था। अभियान के दौरान 365 संदिग्धों को आरपीएफ द्वारा पकड़कर जीआरपी को सौंपा गया, जिसके आधार पर यात्री अपराध यानी यात्री सामान की चोरी, ड्रगिंग, डकैती, चेन स्नैचिंग आदि के 322 मामलों की जानकारी मिली। अपराधियों के कब्जे से या इन अपराधों की जांच के दौरान यात्रियों की एक करोड़ रुपये से अधिक की चोरी की संपत्ति इनसे बरामद की गई।



आरपीएफ अपनी प्रतिक्रिया, प्रभावशीलता और पहुंच बढ़ाने और सेवा ही संकल्प के अपने उद्देश्य को साकार करने के लिए अपने कार्य क्षेत्र में इस अभियान के शुभारंभ के साथ प्रतिक्रिया में सुधार, प्रौद्योगिकी और नवाचार को बढ़ावा देकर भविष्य में भी भारतीय रेल, यात्रियों की सुरक्षा बढ़ाने के अपने प्रयासों को जारी रखेगा।

भारतीय रेल ने जुलाई 2022 में 122.14 मीट्रिक टन माल लदान कर के जुलाई माह का अब तक का सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड बनाया

- *जुलाई माह में क्रमागत माल लदान 9.3 मीट्रिक टन रहा यानी 2021 में अर्जित जुलाई के सर्वश्रेष्ठ आंकड़ों की तुलना में 8.25 प्रतिशत अधिक*
- *इसके साथ ही भारतीय रेल ने मासिक माल-लदान में लगातार 23 महीने अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया*

भारतीय रेल ने जुलाई 2022 में 122.14 मीट्रिक टन माल-लदान करके जुलाई महीने में किए जाने वाले कामकाज में अब तक का सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड कायम किया है। जुलाई माह में क्रमागत माल-लदान 9.3 मीट्रिक टन रहा यानी 2021 में अर्जित जुलाई के सर्वश्रेष्ठ आंकड़ों की तुलना में 8.25 प्रतिशत अधिक है। इसके साथ ही भारतीय रेल ने मासिक माल-लदान में लगातार 23 महीने तक अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

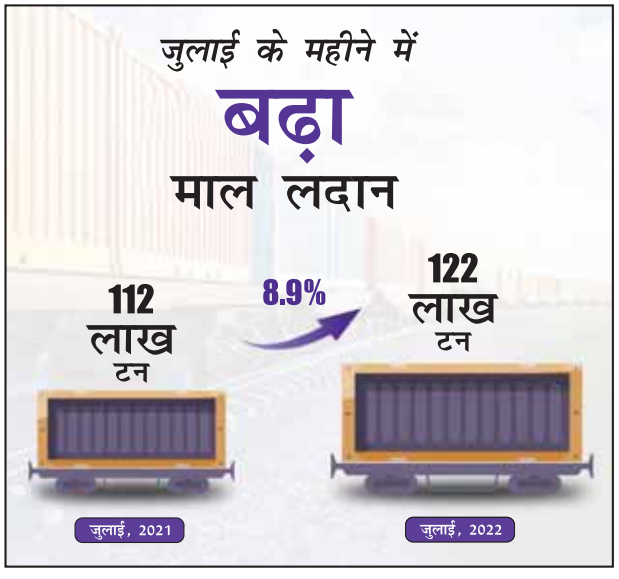


भारतीय रेल ने कोयले की 11.45 मीट्रिक टन की क्रमागत लदान की। इसके बाद 1.22 मीट्रिक टन अन्य माल, 0.56 मीट्रिक टन सीमेंट व बजरी और कंटेनर तथा पीओएल की 0.47 मीट्रिक टन माल-लदान की।

मोटर-वाहन की लदाई में बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। वित्तवर्ष 2022-23 में माल-व्यापार का यह एक अन्य उदाहरण है। वित्त वर्ष 2022-23 में 1698 रेकों में माल लादा गया, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 994 रेकों पर माल लादा गया था। इस तरह यहां 71 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

एक अप्रैल, 2022 से 31 जुलाई, 2022 तक समग्र माल-लदाई 501.53 मीट्रिक टन हुई, जबकि 2021-22 में 452.13 मीट्रिक टन माल-लदाई हुई थी, यानी इस तरह 10.92 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई।

शुद्ध टन किमी (एनटीकेएम) के हिसाब से देखा जाए, तो इस मद में जुलाई 2021 में 63.3 अरब की तुलना में जुलाई, 2022 में यह 75 अरब रहा यानी इसमें भी 19.36 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।



बिजली घरों तक कोयले की आपूर्ति को बढ़ाने के लिए रेलवे लगातार प्रयास कर रहा है। इसके लिए वह बिजली और कोयला मंत्रालय के साथ काम कर रहा है। यह जुलाई माह में माल-लदान प्रदर्शन में प्रमुख विशेषता रहा। बिजली घरों तक कोयले की लदान (घरेलू और आयातित, दोनों) जुलाई में 13.2 मीट्रिक टन बढ़ी, जबकि पिछले वर्ष बिजली घरों तक 34.74 मीट्रिक टन कोयला पहुंचाया गया था। इस तरह इसमें 38 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। समग्र रूप से देखें तो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में इस वर्ष के शुरुआती चार माह में रेलवे ने बिजली घरों तक 47.95 मीट्रिक टन से अधिक की अतिरिक्त ढुलाई की। इस तरह इसमें 32 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोत्तरी देखी गई।

माल के संदर्भ में होने वाली बढ़ोतरी को नीचे दिखाया गया है। इस सम्बंध में लगभग सभी तरह की माल लदाई में रेलवे की विकास दर इस प्रकार रही:

माल-असबाब	घट-बढ़ (एमटी)	प्रतिशत घट-बढ़
कोयला	11.54	23.45
सीमेंट और बजरी	0.56	5.10
पोओएल	0.47	12.90
कंटेनर	0.56	9.30
अन्य सामान	1.22	13.25

भारती
पत्रिका की ऑनलाइन सदस्यत

STEP 1

ऑनलाइन सदस्यता हेतु **www.irctc.co.in** पर जाएं।

इस पेज के **विज्ञापन** (Promotions) पर जाएं।

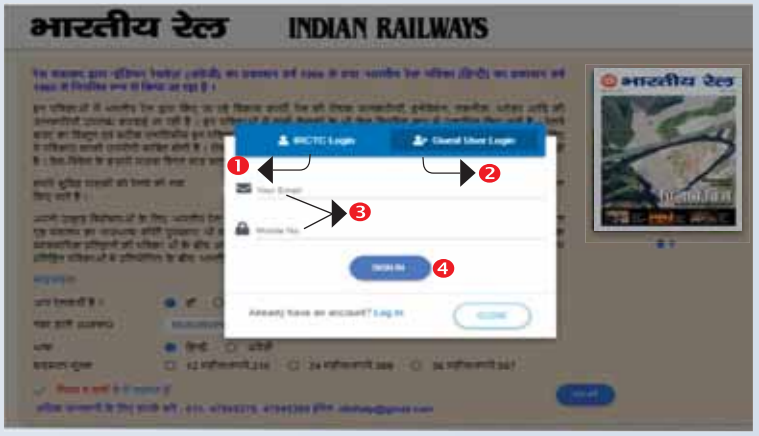
आप सीधे www.irctctourism.com/ IRBRmag/#/home/hn पर भी जा सकते हैं।



❸ **'भारतीय रेल पत्रिका'** पर क्लिक करें।

STEP 3

❶ इस बॉक्स में यदि आप के पास आईआरसीटीसी का लॉग-इन, पासवर्ड है तो उसका उपयोग करें।

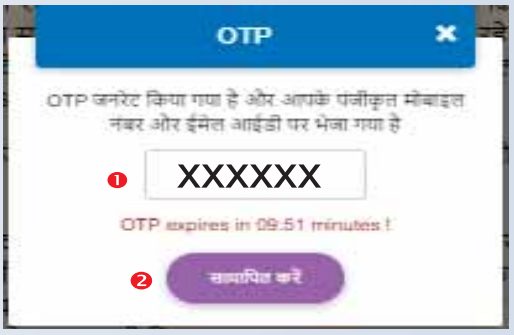


❷ लॉग-इन आईडी नहीं है तो गेस्ट लॉग-इन पर क्लिक करें।

❸ उसमें अपना ई-मेल तथा मोबाइल नंबर दर्ज करें।

❹ सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 5



❶ आपके पंजीकृत मोबाइल एवं ई-मेल पर आए ओटीपी को बॉक्स में दर्ज करें एवं

❷ सत्यापित करें

STEP 6



❶ पेमेंट मोड (कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई, वॉलेट, इंटरनेशनल कार्ड तथा आईपे) एवं

❷ पेमेंट गेट-वे का ऑप्शन पसंद करें

❸ मेक पेमेंट का बटन दबाएं

ीय रेल
ना प्राप्त करने की सरल प्रक्रिया

STEP 2

1. यदि आप रेलकर्मी हैं तो 'हां' पर या रेलकर्मी नहीं हैं तो 'नहीं' पर क्लिक करें।
2. यदी 'हां' तो बॉक्स में अपना आरयूआईडी/ आईडी/पीपीओ नंबर तथा एक आधिकारिक आईडी की स्कैन कॉपी अपलोड करें।
3. 'भारतीय रेल' पत्रिका के लिए 'हिंदी' को और 'इंडियन रेलवेज' पत्रिका के लिए 'अंग्रेजी' में क्लिक करें।
4. एक, दो या तीन यानि जितने साल की सदस्यता चाहते हैं, उस बिन्दु पर क्लिक करें।



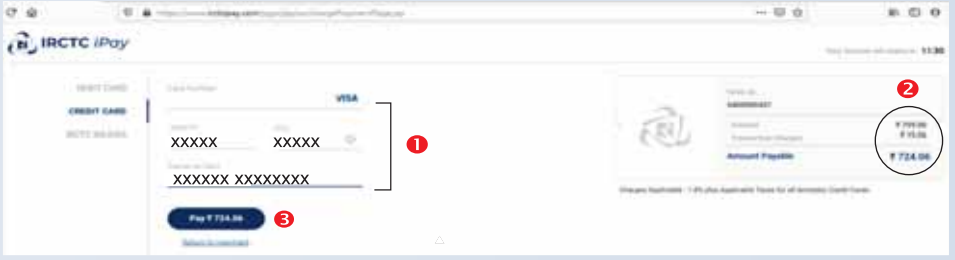
5. नियम व शर्तों पर क्लिक करें तथा उसे ध्यान से पढ़ लें। यदि सहमत हों तो बॉक्स में टिक मार्क करें।

STEP 4



1. अपना पूरा पता पिन कोड के साथ दर्ज करें
2. सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 7



1. पेमेंट मोड की डीटेल भरें
2. पेमेंट एमाउंट की जानकारी देखें।
3. संतुष्ट होने पर ही 'पे' बटन को दबाएं।
4. बैंक ओटीपी की प्रक्रिया पूर्ण होने पर पेमेंट सक्सेस फुल का मैसेज स्क्रीन पर दिखाई देगा।

कृपया ध्यान दें

- पेमेंट के समय नियमानुसार ट्रांजेक्शन शुल्क लगते हैं, कृपया पेमेंट करते समय देख लें।
- पेमेंट की प्रक्रिया पूर्ण होने पर आपको सदस्यता संबंधित जानकारी का एस.एम.एस. तथा मेल प्राप्त होगा।
- पेमेंट प्राप्त होते ही निर्धारित माह से आपको पत्रिका प्राप्त होनी शुरू हो जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 011- 47845378, 47845380 ईमेल: irbrhelp@gmail.com

कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में भारतीय



कॉमनवेल्थ गेम्स में पदक जीतने वाले भारतीय रेल के खिलाड़ियों के साथ रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव एवं रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री विनय कुमार त्रिपाठी तथा उच्च अधिकारीगण

श्री रणमत सिंह

28 जुलाई से 8 अगस्त तक चले 22वें कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत ने 22 स्वर्ण 16 रजत एवं 23 कांस्य पदक जीतकर शानदार प्रदर्शन किया।

भारतीय टीम में भारतीय रेल परिवार के 46 खिलाड़ी शामिल थे, जिनमें से 29 खिलाड़ियों ने पदक जीतकर देश तथा भारतीय रेल का नाम रौशन किया। कुश्ती में तीन स्वर्ण, एथलेटिक्स (पैदल चाल) तथा मुक्केबाजी में एक-एक रजत पदक तथा हॉकी (पुरुष) में रजत पदक (टीम) के तौर पर प्राप्त किया। कुश्ती तथा भारोत्तोलन, मुक्केबाजी तथा भाला फेंक में एक-एक कांस्य पदक प्राप्त किया। वहीं हॉकी महिला (टीम) कांस्य पदक जीता। महिला क्रिकेट टीम में भी भारतीय रेल की पाँच खिलाड़ियों ने अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन किया था।

भारत को पहला सोना दिलाया भारतीय रेल की पूर्व खिलाड़ी सैखम मीराबाई चानू ने, वह भी 49 किलो वर्ग में ऑल टाइम रिकार्ड के साथ। भारत की तरफ से रेसलिंग में भारतीय रेल के बजरंग पूनिया (पुरुष 65 किलोग्राम वर्ग), भारतीय रेल की साक्षी मलिक (महिला 62 किलोग्राम वर्ग) और दीपक पूनिया (पुरुष 86 किलोग्राम वर्ग) ने स्वर्ण पदक जीता। भारतीय महिला हाकी टीम ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए न्यूजीलैंड को हराकर कांस्य पदक जीता। उल्लेखनीय है कि इस टीम में दो तिहाई खिलाड़ी भारतीय रेल की हैं। आठवें दिन 17 स्वर्ण पदक के लिए 72 देशों के बीच मुकाबला हुआ, जिसमें से अकेले भारत ने तीन स्वर्ण

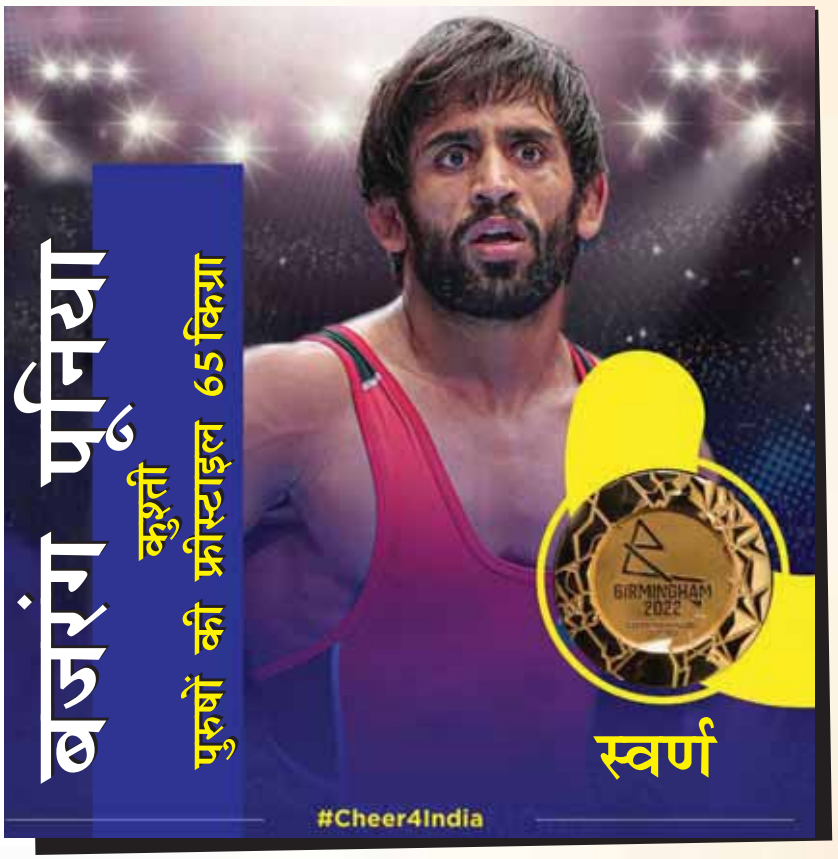
भारतीय टीम में भारतीय रेल परिवार के 46 खिलाड़ी शामिल थे, जिनमें से 29 खिलाड़ियों ने पदक जीतकर देश तथा भारतीय रेल का नाम रौशन किया।

पदकों पर कब्जा किया। पहले दिन की ही तरह आखिरी दिन भी भारत के लिए सुनहरा रहा। 8 अगस्त को भारतीय खिलाड़ियों ने 3 स्पोर्ट्स के अलग-अलग इवेंट्स में हिस्सा लिया। आखिरी दिन भारत ने चार स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य पदक जीता। इसमें सबसे ज्यादा तीन स्वर्ण बैडमिंटन में आए, वहीं एक स्वर्ण टेबल टेनिस में आया। हॉकी में रजत पदक और टेबल टेनिस में कांस्य पदक आया।

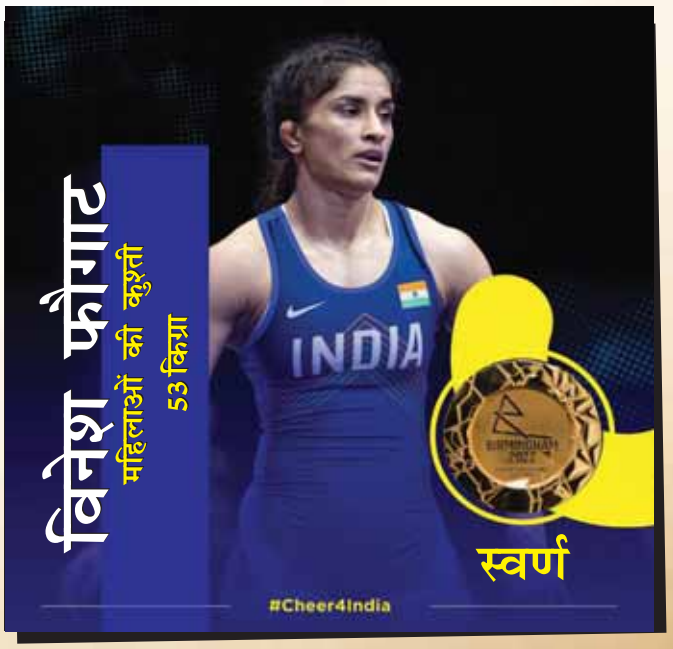
इंग्लैंड के बर्मिंघम में हुई शानदार ओपनिंग सेरेमनी में भारतीय टीम की अगुवाई ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पी.वी. सिंधु और भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान मनप्रीत सिंह ने की। संकेत सरगर ने भारोत्तोलन में रजत के साथ भारत के पदकों का खाता खोला। इसके बाद तो पदकों की बाढ़-सी आ गई। इस बार के कॉमनवेल्थ गेम्स में 72 देशों ने हिस्सा लिया। 11 दिनों तक चले खेलों का समापन भी उद्घाटन की तरह ही बेहद रंगारंग रहा, जिसमें भांगड़ा डांस की प्रस्तुति ने माहौल को जोश से भर दिया। भारत की ओर से क्लोजिंग सेरेमनी में मुक्केबाजी में स्वर्ण पदक विजेता निखत जरीन और 3 स्वर्ण एवं एक रजत पदक प्राप्त करने वाले शरत कमल ध्वजवाहक बने। 22वें कॉमनवेल्थ खेलों की समाप्ति पर 2026 में ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया में होने वाले खेलों के लिए कॉमनवेल्थ फेडरेशन का झण्डा ऑस्ट्रेलिया की आयोजन समिति को सौंपा गया। राज परिवार के सदस्य प्रिंस एड्वर्ड ने आधिकारिक रूप से खेलों की

रेल के खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन

समाप्ति की घोषणा की। पदकों के लिहाज से देखें तो 2018 में ऑस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट में हुए खेलों में भारत ने 26 स्वर्ण, 20 रजत और 20 कांस्य सहित कुल 66 पदक जीते थे, जो इस बार से बेहतर नजर आता है, लेकिन प्रदर्शन के लिहाज से ये भारत के लिए सबसे अच्छे गेम्स रहे क्योंकि भारत ने हर स्पर्धा में पिछली बार से बेहतर खेल दिखाया। कुश्ती में देश की ओर से गए सभी 12 पहलवानों ने मेडल हासिल किया, तो वेटलिफ्टिंग में देश ने पदकों की बौछार कर दी। यदि इन खेलों में शूटिंग भी शामिल होती तो भारत पदक तालिका में नंबर 3 पर होता।



स्वर्ण एक्सप्रेस





रजत एक्सप्रेस


महिला टीम
क्रिकेट
महिला टी-20
रजत


सागर
मुक्केबाजी
पुरुषों की 92+किग्रा
रजत
#Cheer4India


अमित रोहिदास
हॉकी


जरमनप्रीत सिंह
हॉकी


रजत
प्रियंका गोस्वामी
एथलेटिक्स (पैदल चाल)

कांस्य एक्सप्रेस


महिला टीम
हॉकी
कांस्य
BIRMINGHAM 2022


अन्नू रानी
भाला फेंक
महिलाओं की
व्यायाम
कांस्य
#Cheer4India


रोहित टोकस
मुक्केबाजी
पुरुषों की 67 किग्रा
कांस्य
#Cheer4India


गुरदीप सिंह
भारोत्तोलन
पुरुषों की 109+ किग्रा
कांस्य
#Cheer4India


दिव्या
कुश्ती
महिलाओं की 68 किग्रा
कांस्य
#Cheer4India

कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में भारतीय रेल के पदक विजेता खिलाड़ियों की सूची

क्र.स.	नाम	रेलवे	खेल	टीम/व्यक्तिगत	पदक
1	बजरंग पूनिया	उत्तर रेलवे	कुश्ती	व्यक्तिगत	स्वर्ण
2	विनेश फौगाट	उत्तर रेलवे	कुश्ती	व्यक्तिगत	स्वर्ण
3	साक्षी मलिक	उत्तर रेलवे	कुश्ती	व्यक्तिगत	स्वर्ण
4	दिव्या काकरान	उत्तर रेलवे	कुश्ती	व्यक्तिगत	कांस्य
5	गुरदीप सिंह	मध्य रेलवे	भारोत्तोलन	व्यक्तिगत	कांस्य
6	अमित रोहिदास	पूर्व तट रेलवे	हॉकी (पुरुष)	टीम	रजत
7	जरमनप्रीत सिंह	उत्तर रेलवे	हॉकी (पुरुष)	टीम	रजत
8	रजनी एटीमारपू	मध्य रेल	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
9	दीप ग्रेस एक्का	पूर्व तट रेलवे	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
10	गुरजीत कौर	उत्तर मध्य रेलवे	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
11	निक्की प्रधान	दक्षिण पूर्व रेलवे	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
12	निशा	उत्तर मध्य रेलवे	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
13	सुशीला चानू पी.	मध्य रेल	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
14	मोनिका	मध्य रेल	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
15	नेहा	उत्तर रेलवे	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
16	सलीमा टेटे	दक्षिण पूर्व रेलवे	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
17	वंदना कटारिया	मध्य रेल	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
18	लालरेमसियामी	रेल डिब्बा कारखाना	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
19	नवनीत कौर	पश्चिम रेलवे	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
20	संगीता कुमारी	दक्षिण पूर्व रेलवे	हॉकी (महिला)	टीम	कांस्य
21	सागर	उत्तर रेलवे	मुक्केबाजी	व्यक्तिगत	रजत
22	रोहित टोकस	उत्तर रेलवे	मुक्केबाजी	व्यक्तिगत	कांस्य
23	अन्नूरानी	पटियाला लोकोमोटिव वर्क्स	एथलेटिक्स (भाला फेंक)	व्यक्तिगत	कांस्य
24	प्रियंका	उत्तर पूर्व रेलवे	एथलेटिक्स (पैदल चाल)	व्यक्तिगत	रजत
25	राजेश्वरी गायकवाड़	पश्चिम रेलवे	क्रिकेट	टीम	रजत
26	रेनुका सिंह	उत्तर रेलवे	क्रिकेट	टीम	रजत
27	मेघना सिंह	उत्तर रेलवे	क्रिकेट	टीम	रजत
28	एस. मेघना	दक्षिण मध्य रेल	क्रिकेट	टीम	रजत
29	स्नेह राणा	उत्तर रेलवे	क्रिकेट	टीम	रजत

निम्नलिखित अधिकारियों ने खिलाड़ियों को अपने अनुभव और सहयोग से पदक जीतने में मदद की					
1	विजय शर्मा	उत्तर रेलवे	भारोत्तोलन	व्यक्तिगत	प्रशिक्षक
2	आनंदिता चक्रवर्ती	दक्षिण पूर्व रेलवे	टेबल टेनिस	व्यक्तिगत	प्रशिक्षक
3	दयाला राम	उत्तर पश्चिम रेलवे	साइकिलिंग (ट्रैक)	व्यक्तिगत	प्रशिक्षक
4	शुभदीप घोज़	पूर्वोत्तर रेलवे	क्रिकेट	टीम	प्रशिक्षक
5	आनंद कुमार	रेलवे बोर्ड	कुश्ती	व्यक्तिगत	फिजियो
6	सुजीत मान	उत्तर रेलवे	कुश्ती	व्यक्तिगत	प्रशिक्षक
7	ललित प्रसाद	उत्तर रेलवे	मुक्केबाजी	व्यक्तिगत	प्रशिक्षक
8	एस मुरली	दक्षिण रेलवे	एथलेटिक्स	टीम	प्रशिक्षक



अंडर 20 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में हमारे युवा पहलवानों ने 16 पदक जीतकर इतिहास रच दिया। इसमें से महिलाओं और पुरुषों ने 7-7 पदक जीते दो पदक ग्रीको रोमन वर्ग में प्राप्त हुए। इसमें भारतीय रेल के प्रशिक्षक (फ्रीस्टाइल) परवेश कुमार मान का विशेष योगदान रहा।

उप मुख्य अभियंता, दक्षिण मध्य रेलवे ने **तेलंगाना राज्य शूटिंग चैंपियनशिप में जीता स्वर्ण पदक**

श्री एस. के. शर्मा, उप मुख्य अभियंता, दक्षिण मध्य रेलवे ने तेलंगाना राज्य के खेल प्राधिकरण, गाचीबोवली, हैदराबाद में शूटिंग रेंज में 05 से 07 अगस्त, 2022 तक आयोजित आठवीं तेलंगाना राज्य शूटिंग प्रतियोगिताओं में लेवल 10 मीटर एयर पिस्टल शूटिंग चैंपियनशिप में छोटे बोर और शॉर्ट गन इवेंट - 2022 में स्वर्ण पदक हासिल किया है। इस वर्ष प्रतियोगिता में दो नई श्रेणियां, मास्टर्स चैंपियनशिप और सीनियर्स मास्टर चैंपियनशिप शुरू की गई हैं, जो तेलंगाना राज्य में शूटिंग खेलों के इतिहास में पहली बार शामिल की गई हैं। विभिन्न जिलों के 850 खिलाड़ियों ने 144 निशानेबाजी स्पर्धाओं में भाग लिया।



तेलंगाना राज्य से 45-50 वर्ष की आयु के कुल 20 प्रतिभागियों ने 10 मीटर एयर पिस्टल शूटिंग चैंपियनशिप के मास्टर वर्ग में भाग लिया। श्री एस. के. शर्मा ने 400 में से 355 अंक प्राप्त कर स्वर्ण पदक जीता। वे अब आगामी 65वीं राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में भाग लेने के योग्य हो गए हैं। श्री अरुण कुमार जैन, महाप्रबंधक (प्रभारी) ने श्री एस.के. शर्मा को उनके प्रदर्शन के लिए बधाई दी।

वर्ल्ड रेलवे क्रॉस कंट्री चैंपियनशिप 2022 में उत्तर मध्य रेलवे के **प्रयागराज मंडल की छवि यादव ने जीता रजत पदक**



उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज मंडल में कार्यरत छवि यादव ने वर्ल्ड रेलवे क्रॉस कंट्री चैम्पियनशिप 10 किमी में सिल्वर पदक प्राप्त किया। प्रतियोगिता में टीम ने ऑल ओवर में गोल्ड मेडल प्राप्त किया है। यह क्रॉस कंट्री चैम्पियनशिप 15 जुलाई को बर्लिन, जर्मनी में हुई थी। छवि वाणिज्य विभाग की टिकट चेकिंग शाखा में कार्यरत हैं।

इनकी इस उपलब्धि पर उत्तर मध्य रेलवे के महाप्रबंधक ने इनको बधाई और आगे की प्रतियोगिताओं के लिए शुभकामनाएं दीं तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी वो इसी प्रकार उत्तर मध्य रेलवे और राष्ट्र के लिए उपलब्धि अर्जित करती रहेंगी।

उत्तर मध्य रेलवे की कोच सुश्री रागिनी ने छवि यादव की इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

पुनर्विकसित होने वाले रेलवे स्टेशनों के प्रस्तावित डिजाइन



पुनर्विकसित किए जाने वाले कानपुर सेंट्रल रेल स्टेशन का प्रस्तावित डिजाइन



एयरपोर्ट जैसा स्टेशन तकनीक, आधुनिकता और स्थानीय संस्कृति का मिश्रण; राजस्थान में पुनर्विकसित किए जाने वाले कोटा जंक्शन रेलवे स्टेशन का प्रस्तावित डिजाइन



अपने त्रिपुरेश्वरी मंदिर के लिए प्रसिद्ध गोमती जिले के त्रिपुरा उदयपुर रेलवे स्टेशन को रेलवे द्वारा स्थानीय कला के द्वारा सुंदर ढंग से सजाया गया है।



अंतर्राष्ट्रीय मानकों के मुताबिक पुनर्विकास पुनर्विकसित किए जाने वाले प्रयागराज जंक्शन रेलवे स्टेशन के लिए प्रस्तावित डिजाइन इस स्टेशन को स्थापत्य के चमत्कार के रूप में बदल देगा, जिसका सुंदर आकर्षण होगा। इसके लिए निविदा जारी कर दी गई है।



प्रमुख स्टेशन, आधुनिक रूपांतरण नागपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन को जल्दी ही नए भारत के विजन के अनुसार पुनर्विकसित किया जाएगा। इस प्रस्तावित पुनर्विकसित की परिकल्पना यात्रियों को विश्व-स्तरीय यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए और स्टेशन के भीतर और उसके आस-पास सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए की गई है।



पुनर्विकसित किए जाने वाले विशाखापट्टनम रेलवे स्टेशन के प्रस्तावित डिजाइन में यात्रियों को सुखद अनुभव प्रदान करने के लिए बेहतर मानकों वाला बुनियादी ढांचा, अत्याधुनिक स्काईवॉक, स्मार्ट पार्किंग प्रबंधन प्रणाली सहित और भी बहुत कुछ शामिल है।

पंजाब के व्यापार और वाणिज्य केंद्र का आकर्षक उन्नयन पुनर्विकसित किए जाने वाले लुधियाना जंक्शन स्टेशन के प्रस्तावित डिजाइन की एक झलक।





रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोय

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका



भारतीय रेल

की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

विज़िट करें

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/khome/hn

क्यूआर कोड स्कैन करें

सदस्यता शुल्क

मद		ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ऑनलाइन सदस्यता शुल्क (₹)
एक प्रति (मासिक अंक)		20	-
एक प्रति (विशेषांक)		70	-
वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण)	एक वर्ष	250	263
	दो वर्ष	460	483
	तीन वर्ष	675	709
वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी)	एक वर्ष	200	210
	दो वर्ष	370	389
	तीन वर्ष	540	567
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा		1,250	1,313
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा		2,500	2,625

(वार्षिक सदस्यता शुल्क विशेषांक के साथ)

भुगतान का माध्यम

ऑनलाइन सदस्य www.irctctourism.com/RBRMag पर सदस्यता शुल्क का भुगतान कर सकते हैं।

ऑफलाइन डी.डी./चेक/म.ओ./पो.ओ./नगद देय-'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली'

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

पोस्ट..... जिला.....

राज्य ..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

रेल कर्मचारी : हाँ / नहीं वर्तमान सदस्यता (यदि हो तो) संख्या ..... तारीख .....

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001, टेलीफोन: 011-47845089, 45089 (रेलवे) **bmpr310rb@gmail.com**

आरडीएसओ ने 180 किमी प्रति घंटे की गति से डबल डेकर एसी-एलएचबी कोच का सफलतापूर्वक परीक्षण किया



आरडीएसओ यात्री कोच में सुधार के लिए लगातार प्रयास कर रहा है और इस अभियान को जारी रखते हुए आरडीएसओ के परीक्षण निदेशालय ने पश्चिम मध्य रेलवे के कोटा मंडल के नागदा-कोटा-सवाई माधोपुर सेक्शन में 120 सीटिंग क्षमता वाले एसी-डबल डेकर चेयर कार-एलएचबी कोच का ऑसिलेशन ट्रायल पूरा कर लिया है। ट्रायल्स की यह शृंखला आधुनिक एलएचबी कोचों के हाल के डिजाइन को साबित करने के लिए और कोच की स्थिरता और सवारी विशेषताओं सहित सुरक्षा मानकों का पता लगाने के लिए 120 किमी प्रति घंटे की प्रारंभिक गति से शुरू हुई जो भारतीय रेल ट्रैक पर 180 किमी प्रति घंटे तक पहुंच गई।

यह परीक्षण एलएचबी अपग्रेडेड एसी पेंट्री कार के उच्च गति परीक्षणों के साथ एक के बाद एक किया गया था, जिसके लिए आरडीएसओ परीक्षण टीम लगातार 5 सप्ताह तक फील्ड ट्रायल पर रही। डबल डेकर चेयर कार-एलएचबी कोच का परीक्षण 6 जुलाई को शुरू हुआ और 18 जुलाई को बिना किसी विराम के एक बार में पूरा हुआ। कोटा मंडल के यांत्रिक विभाग की मदद से रात में कोच की लोडिंग को समन्वित किया गया था, जिससे कि ट्रायल रन के बीच कोई ब्रेक न हो और इसे समय पर पूरा किया जा सके। लॉन्ग कन्फर्मेटरी रन (LCR) 66 किमी तक 180 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से खाली और 51 किमी तक लोडेड स्थिति में किया गया, जो 18 जुलाई 2022 को सफलतापूर्वक पूरा हुआ। विश्लेषण और अनुसंधान हेतु लॉन्ग रन के दौरान EN-12299 पद्धति के अनुसार राइड इंडेक्स असेसमेंट के लिए डाटा एकत्र करने हेतु लोंगीट्यूडनल, वर्टीकल एवं लेटरल एक्सेलेरोमीटर उपकरण लगाए गए थे। आरडीएसओ की परीक्षण टीम में संयुक्त निदेशक श्री आर. एस तिवारी उप निदेशक श्री एस. तिरु और परीक्षण निदेशालय, आरडीएसओ के अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे।

180 किमी प्रति घंटे की गति को बनाए रखना वास्तव में एक बड़ी चुनौती थी क्योंकि इस खंड में कई स्थायी और अस्थायी गति प्रतिबंध संचालित थे, जिसके परिणामस्वरूप उच्च त्वरण और ब्रेकिंग के लगातार चरण पड़ते थे इसके समाधान हेतु कोटा मंडल के यातायात विभाग के साथ एक गहन कार्य योजना तैयार की गई।

यह ट्रायल ईडी परीक्षण, आरडीएसओ, श्री रुपेश कोहली के मार्गदर्शन में और कोटा मंडल के पर्यवेक्षकों की सहायता से किया गया। परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा होने के पश्चात इस रोलिंग स्टॉक को जल्द ही 160 किमी प्रति घंटे की गति का प्रमाण-पत्र जारी कर दिया जाएगा।

मध्य रेल का स्क्रैप राजस्व ₹135.57 करोड़

अप्रैल-जुलाई, 2022 की अवधि में अब तक का सर्वाधिक



मध्य रेल ने सभी स्टेशनों, खंडों, प्रतिष्ठानों, डिपो, कारखानों, शेडों, कार्यस्थलों को सभी विभागों/मंडलों को स्क्रैप से मुक्त करने के लिए 'शून्य स्क्रैप मिशन' प्राप्त करने की दिशा में अपने अथक प्रयास जारी रखे हैं। चालू वर्ष के दौरान अप्रैल से जुलाई 2022 तक, मध्य रेल ने स्क्रैप की बिक्री से ₹135.57 करोड़ का राजस्व दर्ज किया, जो पिछले वर्ष अप्रैल से जुलाई, 2021 की इसी अवधि के दौरान हासिल किए गए ₹98.67 करोड़ के राजस्व की तुलना में 37.40 प्रतिशत अधिक है। मध्य रेल द्वारा उत्पन्न स्क्रैप बिक्री राजस्व ₹135.57 करोड़ किसी भी वर्ष में अप्रैल से जुलाई की अवधि के लिए स्क्रैप की बिक्री से उत्पन्न अब तक का सबसे अधिक राजस्व है।

श्री अनिल कुमार लाहोटी, महाप्रबंधक, मध्य रेल ने कहा कि स्क्रैप डिस्पोजल से न केवल राजस्व अर्जित होता है, बल्कि परिसर को स्वच्छ और पर्यावरण के अनुकूल रखने में भी मदद मिलती है। उन्होंने यह भी कहा कि रेलवे में विभिन्न स्थानों पर स्क्रैप सामग्री की पहचान की गई है और मध्य रेल सभी के डिस्पोजल के लिए मिशन मोड में काम करेगा।

मध्य रेल द्वारा माल लदान में

वर्ष 2022-23 के अप्रैल-जुलाई माह में 2021-22 की इसी अवधि की तुलना में 12 प्रतिशत की वृद्धि

वित्त वर्ष 2022-23 के अप्रैल-जुलाई में मध्य रेल ने 26.77 मिलियन टन माल लदान किया है, जोकि 2021-22 की इसी अवधि में 12% की वृद्धि दर्शाता है। साथ ही, किसी भी वर्ष के अप्रैल-जुलाई में अब तक का सबसे अच्छा लदान है।

मध्य रेल ने जुलाई 2022 में ₹525.3 करोड़ राजस्व अर्जित किया जोकि जुलाई 2021 की तुलना में 13.4% की वृद्धि दर्शाता है।

मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री अनिल कुमार लाहोटी ने कहा कि माल लदान में वृद्धि मध्य रेल द्वारा की गई कई पहलों के कारण हुई है, जिसमें गहन विपणन के लिए मंडलों और मुख्यालय कार्यालय में व्यवसाय विकास इकाइयों (बीडीयू) का गठन और ऑटोमोबाइल के तेज और सुरक्षित परिवहन के लिए कोचों को संशोधित करने जैसे नए विचारों को अपनाना आदि शामिल है।



मध्य रेल ने सभी वस्तुओं के माल लदान प्रदर्शन में सुधार किया है, जिससे इसे पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धिशील लदान हासिल करने में मदद मिली है।

जुलाई 2022 में कंटेनर लोडिंग में पिछले वर्ष की तुलना में 9% का सुधार हुआ। जुलाई 2021 के दौरान लोड किए गए 641 रेकों की तुलना में जुलाई 2022 में 701 रेकों लोड किए गए हैं। जुलाई 2021 के दौरान लोड किए गए 86 रेकों की तुलना में 2022 में आयरन और स्टील के 105 रेकों लोड किए गए हैं। एनटीकेएम यानी एक किमी प्रति टन तक जाने वाली माल ढुलाई होती है उसमें जुलाई 2021 की तुलना में जुलाई 2022 के महीने में 18% की वृद्धि हुई है।

महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे ने लॉन्च किया ई-निरीक्षण

वेब पोर्टल का उन्नत संस्करण 2.0

महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार ने उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय कार्यालय में आयोजित साप्ताहिक सुरक्षा एवं समय की पाबंदी हेतु समीक्षा बैठक के दौरान ई-निरीक्षण संस्करण 2.0 का शुभारंभ किया। इस बैठक में डीआरएम, प्रयागराज तथा डीआरएम, आगरा और झांसी के साथ उत्तर मध्य रेलवे के सभी प्रमुख विभागाध्यक्षों ने भाग लिया। मुख्य प्रबंधक/ आईटी अंकुर चंद्रा ने पॉवर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से ई-निरीक्षण ऑनलाइन वेब पोर्टल के बारे में जानकारी दी। इस पोर्टल को उत्तर मध्य रेलवे के सूचना प्रौद्योगिकी सेल द्वारा इन-हाउस विकसित किया गया है। यह पोर्टल मूल रूप से 01 जनवरी, 2019 को लॉन्च किया गया था। पिछले 3.5 वर्षों से अब तक, इस पोर्टल के माध्यम से 6,000 से अधिक ऑनलाइन निरीक्षण किए जा चुके हैं। इसका उद्देश्य ऑनलाइन निरीक्षण



नोट बनाना और अनुपालन निगरानी, कागज रहित कामकाज को बढ़ावा देना और अनुपालन में तेजी लाना है। इस पोर्टल के नए संस्करण में सुविधाओं में वृद्धि की गई है जिसमें अनुपालन के अद्यतन, दस्तावेज अपलोडिंग आदि जैसी विशेषताएं शामिल हैं। महाप्रबंधक ने इस पहल के बारे में बोलते हुए यह भी कहा कि यह एक उत्कृष्ट और उपयोगी पहल है और यह निर्देश भी दिया कि उत्तर मध्य रेलवे में सभी निरीक्षण केवल इस पोर्टल के माध्यम से ही किए जाने चाहिए।

महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे द्वारा

पोडानूर सिग्नल और टेलीकम्युनिकेशन कार्यशाला का निरीक्षण



श्री बी. जी. माल्या, महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे ने अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ 18 अगस्त, 2022 को सिग्नल एवं टेलीकम्युनिकेशन प्रशिक्षण केंद्र/ पोडानूर और सिग्नल एवं टेलीकम्युनिकेशन कार्यशाला/ पोडानूर का निरीक्षण किया। पोडानूर में प्रशिक्षण केंद्र के निरीक्षण के दौरान, महाप्रबंधक ने प्रशिक्षण केंद्र में आईपी आधारित सीसीटीवी प्रणाली संचालित की। यह प्रणाली सिग्नल और टेलीकॉम अनुरक्षण पर प्रशिक्षण लेने वाली महिला प्रशिक्षुओं की सुरक्षा और हिफाजत के लिए लगाई गई है। यहां श्री माल्या ने प्रशिक्षुओं से बातचीत भी की। उन्होंने इस कार्यशाला द्वारा निर्मित किए गए विभिन्न उत्पाद जैसेकि, एलईडी सिग्नल, डिजिटल आवाज घोषणा प्रणाली (डीवीएएस), एसएमएस चेतावनी प्रणाली, सीआर परीक्षण किट (फ्लेशर), टाइमर्स (60/ 120 सेकेंड्स), लक्स लेवल की जांच के लिए एलईडी सिग्नल टेस्टिंग पैनल का निरीक्षण किया।

रिकॉर्ड पांच आईएसओ प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए इस कार्यशाला को बधाई देते हुए महाप्रबंधक ने गैर-परंपरागत ऊर्जा के महत्त्व पर जोर दिया और फिर यहां 60 किलोवाट ऑन-ग्रिड सौर ऊर्जा संयंत्र को संचालित किया। यह यहां पहले से उपलब्ध 30 किलोवाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र के अतिरिक्त है, जिसके बाद इस कार्यशाला की कुल सौर ऊर्जा क्षमता 90 किलोवाट हो गई है।

दक्षिण रेलवे टिकटिंग डाटा सेंटर ने की गवर्नेंस श्रेणी में उत्कृष्टता के तहत स्कॉच पुरस्कारों में रजत रेटिंग हासिल



दक्षिणी रेलवे टिकटिंग डाटा सेंटर ने 'गवर्नेंस' की श्रेणी के तहत प्रतिष्ठित 'स्कॉच एक्सीलेंस इन गवर्नेंस अवॉर्ड्स' में रजत पुरस्कार जीता है। यह एक ऐसा पुरस्कार है जिसमें वर्ष, 2022 के लिए डिजिटल, वित्तीय और सामाजिक समावेशन में सर्वश्रेष्ठ प्रयासों को शामिल किया गया है। स्कॉच, टिकटिंग पेरिफेरल्स मैनेजमेंट सिस्टम (टीपीएमएस) एप्लीकेशन में रेलवे की दूसरी प्रविष्टि को गवर्नेंस श्रेणी में 'नवाचार' में 'ऑर्डर ऑफ मेरिट' स्कॉच प्रमाणपत्र मिला है।

दक्षिण रेलवे टिकटिंग डाटा सेंटर 3 क्षेत्रों अर्थात् दक्षिणी, दक्षिण पश्चिम और दक्षिण मध्य रेलवे में यात्री आरक्षण प्रणाली (पीआरएस), अनारक्षित टिकट प्रणाली (यूटीएस) और मोबाइल टिकटिंग प्रणाली की व्यवस्था करता है।

दक्षिण रेलवे टिकटिंग डाटा सेंटर को 01 सितंबर, 2021 को पुराने डाटा सेंटर की जगह पर संचालित किया गया था, जिसे वर्ष, 1985 में स्थापित किया गया था। इस डाटा सेंटर में सार्वजनिक और रेलवे के आंतरिक कामकाज के लिए पीआरएस, यूटीएस, मोबाइल टिकटिंग, राष्ट्रीय रेलगाड़ी पूछताछ प्रणाली और कई अन्य सेवाओं और अनुप्रयोगों के सर्वर हैं। इस डाटा सेंटर में सभी नए तकनीकी उपकरण और सुविधाएं जैसेकि निर्बाध बिजली आपूर्ति, प्रिसिजन एयर कंडीशनिंग सिस्टम और आपदा प्रबंधन प्रणाली जैसी स्वचालित अग्नि शमन प्रणाली और जलरोधक प्रणाली भी उपलब्ध हैं। आईबीएमएस (एकीकृत भवन प्रबंधन प्रणाली) सीसीटीवी कवरेज के साथ डाटा सेंटर की विभिन्न प्रणालियों की ऑनलाइन निगरानी करता है। इस डाटा सेंटर को अगले 2-3 दशकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है।

स्कॉच अवॉर्ड्स में दक्षिण रेलवे की दूसरी प्रविष्टि, टीपीएमएस (टिकटिंग पेरिफेरल्स मैनेजमेंट सिस्टम) एप्लिकेशन को गवर्नेंस क्षेत्र में नवाचार में 'ऑर्डर ऑफ मेरिट' स्कॉच प्रमाण-पत्र मिला है।

टीपीएमएस हजारों पीआरएस/यूटीएस बाह्य उपकरणों और डाटा संचार उपकरणों के जीवनचक्र प्रबंधन के लिए एक मोबाइल वेब आधारित एप्लीकेशन है। दक्षिण रेलवे में टिकट सेवाओं में सुधार के लिए रेलवे स्टेशनों पर इस एप्लिकेशन का उपयोग किया जा रहा है। टीपीएमएस एक पर्यावरण के अनुकूल, हरित पहल, कागज रहित अनुप्रयोग है जो बहुमूल्य समय बचाता है, उपकरण उपयोगिता का अनुकूलन करता है और टिकटिंग बाह्य उपकरणों के सुचारू कामकाज को सुनिश्चित करता है।

स्कॉच पुरस्कार

भारत को एक बेहतर राष्ट्र बनाने के लिए अतिरिक्त अथक प्रयास करने वाले लोगों, संस्थानों, परियोजनाओं को सम्मानित करने के लिए वर्ष, 2003 में स्कॉच पुरस्कार की स्थापना की गई थी। स्कॉच अवॉर्ड में एक कठोर प्रक्रिया शामिल होती है जो प्रस्तुत किए गए दस्तावेजीकरण, प्रस्तुतीकरण, कई स्तरों पर एक पारदर्शी मतदान प्रक्रिया को ध्यान में रखती है। स्कॉच अवॉर्ड्स के तहत, प्रविष्टियों को सर्वोत्तम शासन, समावेशी विकास, प्रौद्योगिकी और नवाचारों में उत्कृष्टता के तौर पर वर्गीकृत किया गया है।

उल्लेखनीय है कि भारतीय रेलवे के शिकायत निवारण पोर्टल 'रेल मदद' ने शासन में उत्कृष्टता की श्रेणी के तहत स्कोच पुरस्कार में स्वर्ण पदक जीता था। दक्षिण रेलवे ने वर्ष, 2021 में कोविड -19 के प्रति प्रतिक्रिया में उत्कृष्टता की श्रेणी के तहत स्कॉच अवॉर्ड्स में रजत जीता था। दक्षिण रेलवे के रेल ढंडोरा ऐप ने भी फाइनल में प्रवेश किया और उत्कृष्टता की श्रेणी के तहत स्कॉच पुरस्कारों में चौथा स्थान हासिल किया।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया राजकोट में नव स्थापित यंत्रीकृत लॉण्ड्री का उद्घाटन



रेलगाड़ियों में लिनन सेवाओं को फिर से शुरू करने के साथ पश्चिम रेलवे अपने सम्मानित ग्राहकों को ताजा और साफ लिनन और बिस्तर प्रदान करने के लिए सभी प्रयास कर रही है। इस दिशा में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक (स्वतंत्र प्रभार), श्री प्रकाश बुटानी ने 28 जुलाई, 2022 को पश्चिम रेलवे मुख्यालय चर्चगेट से वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से, राजकोट में नव स्थापित यंत्रीकृत लॉण्ड्री का उद्घाटन किया। राजकोट में इस यंत्रीकृत लॉण्ड्री को बूट (बिल्ड, ऑन, ऑपरेट एंड ट्रांसफर) मॉडल के तहत चालू किया गया है, जिसे मैसर्स थारू एंड संस को 10 साल की अवधि के लिए दिया गया है। कपड़े धोने की इन सेवाओं में धुलाई, इस्त्री, पैकेजिंग, परिवहन और राजकोट स्थित रेलगाड़ियों के एसी कोचों में लिनन का वितरण शामिल होगा। इस यंत्रीकृत लॉण्ड्री में प्रति दिन 2 टन कार्य-क्षमता के साथ 1 टन प्रति शिफ्ट कपड़े धोने की क्षमता होगी। इस लॉण्ड्री में 120 किग्रा/ राउंड की क्षमता वाले दो वॉशिंग एक्सट्रैक्टर, एक ड्राई क्लीनिंग मशीन (10 किग्रा/ राउंड की क्षमता), दो टम्बलर ड्रायर (120 किग्रा/ राउंड की क्षमता), दो फ्लैट इस्त्री मशीन (क्षमता -260 चादरें प्रति घंटा), दो थर्मिक फ्लूइड हीटर, दो एयर कंप्रेसर्स और पावर बैक-अप के लिए उपयुक्त क्षमता के एक डीजल जनरेटर लगाए गए हैं। लिनन की धुलाई की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए इस यंत्रीकृत लॉण्ड्री में एक आरओ और वॉटर सॉफ्टनर प्लांट भी लगाया गया है। पर्यावरण को अवशिष्ट जल द्वारा नुकसान पहुंचाने से बचाने के लिए इस जल को एक एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट में उपचारित किया जाता है।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ने वडनगर रेलवे स्टेशन का किया निरीक्षण

- *डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के चल रहे कार्यों की समीक्षा की*



पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक (प्रभारी) श्री प्रकाश बुटानी ने 6 अगस्त, 2022 को अहमदाबाद मंडल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान श्री बुटानी ने वडनगर स्टेशन का व्यापक निरीक्षण किया तथा डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर महेसाना के भांडू मोटी दाऊ और भांडू मोटी दाऊ-घुमासन खंड और साणंद स्टेशन पर चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान महाप्रबंधक के साथ अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री तरुण जैन, मंडल के शाखा अधिकारी, मुख्य परियोजना प्रबंधक के साथ डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित थे।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री सुमित ठाकुर के अनुसार महाप्रबंधक ने वडनगर स्टेशन पर यात्री सुविधाओं, प्रतीक्षालय, प्रदर्शनी कक्ष और रिले कक्ष के साथ स्टेशन पर उच्च स्तरीय प्लेटफॉर्म के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। बाद में उन्होंने महेसाना स्टेशन के यार्ड का निरीक्षण भी किया और प्रस्तावित कार्यों की समीक्षा की। इसके बाद श्री बुटानी ने डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के महेसाना-भांडू मोटी दाऊ और भांडू मोटी दाऊ-घुमासन खंड के रेलवे ट्रैक, विद्युतीकरण, सिग्नलिंग आदि और साणंद स्टेशन (डीएफसी लाइन) पर चल रहे निर्माण कार्यों की गहन समीक्षा की।

अंधेरी स्टेशन पर नए स्काईवॉक का संचालन

- *इसके साथ, पश्चिम रेलवे के मुंबई उपनगरीय खंड में इस वित्तीय वर्ष में 8 एफओबीस संचालित किए गए हैं।*
- *स्टेशनों पर यात्रियों के प्रवाह को सुगम बनाने के लिए और अतिक्रमण से बचने के लिए चर्चगेट और दहानु रोड के बीच कुल 141 एफओबीस तैयार किए गए हैं।*



पश्चिम रेलवे ने यात्रियों की सुविधा के लिए सफलतापूर्वक विभिन्न बुनियादी ढांचागत उन्नयन और संवर्द्धन कार्य किए हैं। इसी क्रम में यात्रियों की सुविधा के लिए अंधेरी स्टेशन पर एक नया स्काईवॉक संचालित किया गया है।

अंधेरी स्टेशन में यह नया स्काईवॉक 6 मीटर चौड़ा और 98 मीटर लंबा है और इसका संचालन 01 अगस्त, 2022 से शुरू किया गया। यह नए दक्षिणी एफओबी को पुराने दक्षिणी एफओबी के साथ जोड़ता है। यह स्काईवॉक पश्चिम की ओर से पूर्व की ओर तथा पूर्व से पश्चिम की ओर आवाजाही के लिए एक अतिरिक्त पैदल रास्ता उपलब्ध करवाकर दक्षिणी एफओबी पर भीड़-भाड़ को कम करने में मदद करेगा। इस स्काईवॉक की कुल लागत लगभग ₹4।5 करोड़ है। इसके साथ ही पश्चिम रेलवे के मुंबई उपनगरीय खंड में इस वित्तीय वर्ष, 2022-23 में 8 एफओबी और स्काईवॉक्स संचालित हो चुके हैं और इनकी कुल संख्या 141 हो गई है। इसके अलावा, इस वित्त वर्ष के अंत तक दादर, खार, नायगांव, वसई रोड और नालासोपारा स्टेशनों में पाँच नये एफओबी बनाने का लक्ष्य हासिल किया जाएगा।

पश्चिम रेलवे अपने सभी ग्राहकों और यात्रियों से अपने बहुमूल्य जीवन की परवाह करने और रेल की पटरियों को कभी भी सीधे न पार करने का अनुरोध करता है। एक से दूसरे प्लेटफॉर्म या स्थान पर जाने के लिए हमेशा एफओबी, सबवे, एस्केलेटर्स और लिफ्ट्स का इस्तेमाल करें।

स्क्रैप की बिक्री में पश्चिम रेलवे ने पार किया ₹200 करोड़ का आंकड़ा

- *भारतीय रेल का पहला क्षेत्र, जिसने वर्तमान वित्तीय वर्ष, 2022-23 में ₹200 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है।*

'मिशन जीरो स्क्रैप' के तहत पश्चिम रेलवे अपने सभी रेलवे संगठनों और इकाइयों को स्क्रैप-मुक्त बनाने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहा है। अपने प्रयास निरंतर जारी रखते हुए पश्चिम रेलवे ने एक और मील का पत्थर पार किया है और इस वित्तीय वर्ष के दौरान स्क्रैप बिक्री द्वारा ₹200 करोड़ के बड़े आंकड़े को पार करने वाला भारतीय रेलवे पर पहला क्षेत्र बनने का गौरव हासिल किया है। यह उत्कृष्ट उपलब्धि पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक (प्रभारी) श्री प्रकाश बुटानी के सक्रिय और करिश्माई नेतृत्व के साथ ही श्री अरुण मेहता, प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक, पश्चिम रेलवे और उनकी टीम द्वारा निरंतर निगरानी के कारण संभव हुई है।

'जीरो स्क्रैप मिशन' की दिशा में आगे बढ़ते हुए वर्तमान वित्तीय वर्ष के दौरान पश्चिम रेलवे ने 10 अगस्त, 2022 तक ₹200.69 करोड़ के मूल्य के स्क्रैप की बिक्री की है। यह उक्त तारीख तक हासिल किया गया अब तक का सबसे अच्छा आंकड़ा है और पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में यह 62% अधिक अर्थात् ₹123.63 करोड़ है। ₹113.67 करोड़ की राशि के आनुपातिक लक्ष्य के अनुसार, पश्चिम रेलवे ने इस वित्त वर्ष के दौरान 76 प्रतिशत अधिक राशि हासिल की है।



पश्चिम रेलवे लगातार लगभग ₹500 करोड़ का स्क्रैप बेच रहा है, जिसने अवरुद्ध धन के मुद्रीकरण, और इसके परिणामस्वरूप राजस्व सृजन में मदद की है। पिछले वित्तीय वर्ष में पश्चिम रेलवे ने ₹513.46 करोड़ का स्क्रैप बेचा था।

रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला ने मनाया अपना 38वां स्थापना दिवस

रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला ने 17 अगस्त, 2022 को अपनी स्थापना के 37 वर्ष पूरे होने पर 'स्थापना दिवस' का आयोजन किया। मुख्य कार्यक्रम आर.सी. एफ. के वारिस शाह हॉल में हुआ, जिसकी अध्यक्षता आर.सी.एफ. के महाप्रबन्धक श्री अशेष अग्रवाल ने की। इस अवसर पर आर.सी.एफ. महिला कल्याण संगठन की अध्यक्ष श्रीमती सुरभि अग्रवाल विशिष्ट मेहमान के रूप में उपस्थित थीं।



इस कार्यक्रम में कई प्रभावशाली सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का मंचन हुआ। इस अवसर पर आर.सी.एफ. के महाप्रबंधक श्री अशेष अग्रवाल ने कहा कि तक आर.सी. एफ. ने 40,000 से अधिक रेल डिब्बों का निर्माण किया है। पिछले साढ़े तीन दशकों में आर.सी.एफ. कपूरथला भारतीय रेल में रोलिंग स्टॉक को अपग्रेड करने में सबसे आगे रहा है और इसने बड़ी संख्या में नवीन उत्पाद, जैसे एसी-3 टियर, शताब्दी, राजधानी, तेजस, डबल डैकर, एलएचबी पार्सल वैन, एसी-3 टियर इकोनॉमी इत्यादि राष्ट्र को दिए हैं, जिससे रेल यात्रा और सुविधापूर्ण बनी है। पिछले वित्तीय वर्ष में 1,862 डिब्बों का अब तक का सर्वश्रेष्ठ वार्षिक उत्पादन किया तथा IRIS सिल्वर सर्टिफिकेशन भी हासिल किया। आर.सी. एफ. की ऐतिहासिक यात्रा , उपलब्धियों आदि पर कर्मचारियों के लिए एक क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इसके अलावा आर.सी.एफ. के हेरिटेज पार्क में आर.सी.एफ. के इतिहास, साल दर साल की प्रगति और उत्पादन क्षमता को दर्शाती एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

आरडीएसओ में वेंडर मीट का आयोजन



अनुसंधान अभिकल्प और मानक संगठन (आरडीएसओ) ने 13 जुलाई, 2022 को लखनऊ में एक वेंडर मीट का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य भारतीय रेल के लिए विक्रेता आधार को नई अवधारणा और आरडीएसओ द्वारा 'मेक इन इंडिया' नीति के लिए की गई पहल के साथ व्यवसाय करने में आसानी को बढ़ावा देना था। श्री संजीव भूटानी ने विक्रेता पंजीकरण प्रक्रिया की समीक्षा की और आरडीएसओ के अधिकारियों के साथ विक्रेता आधार का विस्तार करने के लिए विभिन्न विचारों के बारे में चर्चा की, विशेष रूप से व्यापार को आसान बनाने में वृद्धि एवं विनिर्देशों को संशोधित करने और यदि आवश्यक हो तो प्रतिबंधात्मक शर्तों को दूर करने के लिए उनका मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि अधिक स्रोतों को आकर्षित करने के लिए निरीक्षण कॉलों को प्राथमिकता के आधार पर लिया जाना चाहिए। इस अवसर पर श्री एस के जैन, एडीजी/आरडीएसओ, श्री. जेपी पांडे, डीजी (स्पेशल) वेंडर, श्री गोपाल कुमार पीईडी/आरएस, श्री राजीव कुमार, ईडी स्टोर्स और आरडीएसओ के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

म्यांमार के उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मंडल द्वारा बनारस रेल इंजन कारखाने का दौरा

श्री आंग म्याइंग, परिवहन एवं संचार उप मंत्री, म्यांमार सरकार के नेतृत्व में सात सदस्यीय उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल ने बरेका में लोको निर्माण की सुविधाओं एवं क्षमताओं का जायजा लेने के लिए दिनांक 12 अगस्त, 2022 को बनारस रेल इंजन कारखाना का दौरा किया। सुश्री अंजली गोयल, महाप्रबंधक, बरेका ने वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में श्री आंग म्याइंग, उप मंत्री, म्यांमार, श्री टीन मांग थाँग/महाप्रबंधक(तकनीकी एवं प्रशासन)/डीएमडी, श्री विन मीन ऑ/उप महाप्रबंधक (सिविल विभाग,एमआर), श्री मिंट नेंग/उप महाप्रबन्धक (यांत्रिक विभाग), श्री टुन टुन ऑ/उप महाप्रबंधक(विद्युत विभाग) के साथ बैठक की।

महाप्रबंधक, बरेका ने प्रतिनिधि मण्डल को आश्वस्त किया कि भारतीय रेल, म्यांमार के विद्युतीकरण से सम्बन्धित ऊर्जा स्रोत योजना, ट्रांसफॉर्मर एवं रोलिंग स्टॉक सहित सभी प्रकार के तकनीकी सहयोग के लिए सदैव तत्पर है। बरेका के पास स्टीप ग्रेडिएंट एवं शार्प कर्व के अनुकूल मीटर गेज विद्युत लोको का डिजाइन भी है। बैठक के दौरान बरेका द्वारा निर्मित एवं निर्यात किए गए लोको का विवरण दिया गया तथा वर्तमान में मिले निर्यात आदेश का भी उल्लेख किया गया। साथ ही, यह भी बताया गया कि बरेका ही एकमात्र ऐसा उत्पादन इकाई है जो ब्रॉड गेज, मीटर गेज, केप गेज एवं स्टैंडर्ड गेज सभी प्रकार के लोको बनाने में सक्षम है। म्यांमार ने बरेका से वर्ष 2017-18 में 18 मीटर गेज लोको खरीदा था। प्रतिनिधि मण्डल ने इन लोको के कार्य निष्पादन की प्रशंसा की। उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल ने लोको अस्सेंबली शॉप, इंजन टेस्ट शॉप, न्यू ब्लॉक शॉप, सहित विभिन्न शापों का दौरा किया। कारखाने में घूमने के दौरान प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य विद्युत एवं डीजल लोको निर्माण के विभिन्न चरणों से अवगत हुए।



रेल पर्यटन व साहित्य को साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा विगत 60 सालों से भी अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं

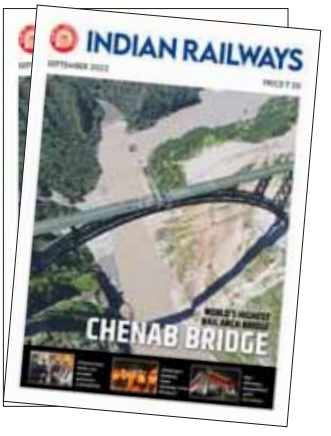


भारतीय रेल
(हिन्दी)

की सदस्यता अब
ऑनलाइन
भी उपलब्ध

विज़िट करें

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home



Indian Railways
(English)

शर्तें एवं दरें लागू

मिशन रेल कर्मयोगी

शिष्टता अमृत प्रकल्प

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर। असक्तो ह्याचरन कर्म परमाप्नोति पुरुषः॥

श्रीमती चंद्रलेखा मुखर्जी
महानिदेशक, आईआरआईटीएम, लखनऊ

'अपने कर्म के फल में आसक्त न होकर अपना कर्तव्य करो, क्योंकि बिना आसक्ति के कर्म करने से ही तुम ईश्वर को प्राप्त कर सकोगे।'

यही कर्मयोग के दर्शन का सार है और भारत सरकार के 'मिशन कर्मयोगी' की प्रेरणा है। 'मिशन कर्मयोगी', या नेशनल प्रोग्राम फॉर सिविल सर्विस कैपेसिटी बिल्डिंग

(एनपीसीएससीबी) की संकल्पना सरकारी कर्मचारियों के काम करने के तरीके में बदलाव लाने की महती परियोजना के रूप में की गई है।

सरकारी कर्मचारी देश के नागरिकों की सेवा करने के अपने मूल उद्देश्य को छोड़कर नियमों के व्यवहार में उलझ जाते हैं। एनपीसीएससीबी का उद्देश्य इस यथास्थिति को बदलना और नियम आधारित कार्यप्रणाली से भूमिका आधारित कार्य प्रणाली की ओर ले जाना है।

'मिशन कर्मयोगी' ने भारतीय रेल की कार्य संस्कृति में इस परिवर्तन की शुरुआत को चिन्हित किया। इस मिशन के तहत प्रत्येक रेलवे कर्मचारी को स्वयं की क्रमबद्ध आवश्यकताओं को समझने, उनकी पूर्ति और अपने काम को न केवल जीविका बल्कि आत्म-प्राप्ति और आंतरिक विकास के साधन के रूप में देखना शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

'मिशन कर्मयोगी' को सितम्बर, 2020 में भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया था। क्षमता निर्माण आयोग (सीबीसी) ने पांच पायलट मंत्रालयों में से एक रेल मंत्रालय को इस मिशन के तहत अग्रिम श्रेणी के रेलवे कर्मचारियों के लिए नागरिक केंद्रित प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने के लिए चिन्हित किया।

भारतीय रेल परिवहन प्रबंधन संस्थान (IRITM), लखनऊ जो भारतीय रेल यातायात सेवा अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए एक केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान है, को रेलवे बोर्ड द्वारा चिन्हित पाँच अग्रिम श्रेणी के रेलवे कर्मचारियों (स्टेशन मास्टर, बुकिंग क्लर्क, पार्सल क्लर्क, गुड्स क्लर्क और ट्रैवलिंग टिकट इंस्पेक्टर) को नागरिक केंद्रित प्रशिक्षण देने और संचालित करने के लिए नामित किया गया।

परिरूप

भारतीय रेल में 'मिशन कर्मयोगी' का नाम 'शिष्टता अमृत' रखा गया है, जिसका उद्देश्य रेलवे कर्मचारियों के अन्दर ग्राहकों के साथ अपने व्यवहार में 'शिष्टता' या 'विनम्रता' के गुण को सुदृढ़ करना है। परियोजना के तहत, भारतीय रेल परिवहन प्रबंधन संस्थान को अपने नॉलेज पार्टनर, मेसर्स इल्यूमिन नॉलेज रिसोर्सेज प्राइवेट लिमिटेड की सहायता से भारतीय रेल के लगभग एक लाख अग्रिम श्रेणी स्टाफ को नागरिक केंद्रित व्यवहार और मानसिकता अपनाने के लिए प्रशिक्षित करने का काम सौंपा गया।



आईआरआईटीएम में मास्टर ट्रेनर्स (वाणिज्यिक स्टाफ) का प्रशिक्षण



पुणे मंडल, मध्य रेल

इस परियोजना को 'ट्रेन द ट्रेनर' मॉडल के तहत डिजाइन किया गया था, जिसमें नॉलेज पार्टनर को भारतीय रेल परिवहन प्रबंधन संस्थान में 1,000 मास्टर ट्रेनर्स को प्रशिक्षित करने का कार्य दिया गया। इन मास्टर ट्रेनर्स के द्वारा शेष 99,000 फील्ड स्टाफ को उनके संबंधित मडंलो में प्रशिक्षित करने की व्यवस्था रखी गई।

तद्नुसार, भारतीय रेल परिवहन प्रबंधन संस्थान में प्रत्येक मास्टर ट्रेनर को पाँच दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया, जिसके बाद उनका मूल्यांकन, ग्रेडिंग और प्रमाणन किया गया।

मास्टर ट्रेनर्स ने नॉलेज पार्टनर द्वारा प्रदान की गई तकनीकी सहायता के साथ भारतीय रेल के सभी मंडलों में फील्ड प्रशिक्षुओं को दो दिनों की कार्यशाला में प्रशिक्षित किया। फील्ड के प्रशिक्षुओं का भी मूल्यांकन किया गया और उनके प्रशिक्षण के पूरा होने पर प्रमाणित किया गया।

आई टी प्लेटफॉर्म, PedgogTM की मदद से प्रशिक्षुओं का वास्तविक समय आधारित मूल्यांकन, मिशन 'रेल कर्मयोगी' प्रशिक्षण कार्यक्रम की सबसे महत्त्वपूर्ण व विशिष्ट विशेषता थी। प्रौद्योगिकी के गहन उपयोग ने न केवल मानकीकृत और गुणवत्तापूर्ण सामग्री सुनिश्चित की, बल्कि फील्ड में परियोजना के विस्तार को भी संभव बनाया। PedgogTM एक लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम के रूप में कार्य करता है। PedgogTM प्लेटफॉर्म ने मास्टर ट्रेनर्स द्वारा कहीं से भी पाठ्यक्रम सामग्री का उपयोग करना और फील्ड में कक्षाएं चलाना संभव किया। प्लेटफॉर्म के ऐप इंटरफेस ने क्षेत्रीय प्रशिक्षुओं को अपने स्मार्टफोन पर ऐप डाउनलोड करके अपने प्रशिक्षण मॉड्यूल पूर्ण करने और अपने प्रमाण-पत्र प्राप्त करने में सक्षम बनाया।

प्रशिक्षण के दौरान वास्तविक समय आधारित ऑनलाइन आकलन होने के कारण प्रशिक्षण में भागीदारी की झूठी रिपोर्टिंग की कोई संभावना नहीं रही।

इस प्रशिक्षण की पाठ्यक्रम संरचना आठ मॉड्यूलस पर आधारित थी, जिसकी सामग्री को नॉलेज पार्टनर ने भारतीय रेल के कर्मचारियों जोकि फील्ड में कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं, के द्वारा प्रदान किए गए महत्त्वपूर्ण इनपुट के आधार पर डिजाइन किया। इस उद्देश्य के लिए ऑपरेटिंग और वाणिज्यिक, दोनों विभागों के फील्ड स्टाफ के साथ फोकस्ड ग्रुप डिस्कशन (FGDs) और विशेषज्ञ पैनल आयोजित किए गए। इनसे मिले इनपुट्स का विश्लेषण कर इन्हें सार्थक और व्यावहारिक लिखित और वीडियो सामग्री के रूप में विकसित किया गया। परिणामस्वरूम, जो प्रशिक्षण सामग्री बनी, वह हमारे अग्रिम श्रेणी कर्मचारियों द्वारा अपने दिन-प्रतिदिन के कामकाज में सामना किए जाने वाले फ्लैश प्वाइंट और दुविधाओं में निहित थी और ऑपरेटिंग और वाणिज्यिक कर्मचारियों की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप थी। नॉलेज पार्टनर द्वारा कक्षा के व्याख्यानों की रिकॉर्डिंग को PedgogTM प्लेटफॉर्म पर भी अपलोड किया गया ताकि मास्टर ट्रेनर्स आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम को फिर से देख सकें।

'मिशन रेल कर्मयोगी' की पाठ्यक्रम सामग्री को iGoT पर भी ऑनबोर्ड किया गया है, जिससे कि यह उन सभी के लिए उपलब्ध हो सके, जो ग्राहक केन्द्रीयता में प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं।

समाप्ति

28 फरवरी, 2022 से आरम्भ होकर 'मिशन रेल कर्मयोगी' के अंतर्गत भारतीय रेल में कुल 1,157 मास्टर ट्रेनर्स को प्रशिक्षित किया गया है। ये मास्टर ट्रेनर्स भारतीय रेल के 68 मडंलो, कोलकाता मेट्रो और 12 ZRTI से हैं।

रेलवे बोर्ड द्वारा दी गई 180 दिनों की समय सीमा के भीतर, 14 जुलाई, 2022 तक, कुल 89,316 अग्रिम श्रेणी फील्ड स्टाफ का प्रशिक्षण पूर्ण किया गया। सभी 68 रेलवे मंडलों से भारतीय रेल परिवहन प्रबंधन संस्थान (IRITM) में पूर्णता रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है। इस प्रकार, भारतीय रेल ने कुल 90,473 फ्रंटलाइन स्टाफ (1,157 मास्टर ट्रेनर + 89,316 फील्ड ट्रेनी) को रेल कर्मयोगियों के रूप में प्रशिक्षित किया है।

प्रत्येक मण्डल ने कुछ शेष कर्मचारियों की सूचना दी, जिन्हें लंबी बीमारी, बच्चे की देखभाल, मातृत्व, विशेष सीएल, प्रतिनियुक्ति आदि के चलते उनकी अनुपलब्धता के कारण प्रशिक्षित नहीं किया जा सका। शेष कर्मचारियों और भविष्य में



हुबली मण्डल, दक्षिण पश्चिम रेलवे

अग्रिमश्रेणी में नए भर्ती कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए भारतीय रेल परिवहन प्रबंधन संस्थान (IRITM) और 12 ZRTI दोनों में मास्टर ट्रेनर्स का एक पूल बनाया गया है। 'मिशन रेल कर्मयोगी' प्रशिक्षण कार्यक्रम, जो 28 फरवरी, 2022 को शुरू हुआ था, अंततः 14 जुलाई, 2022 को सफलतापूर्वक समाप्त किया गया।

फील्ड में 'मिशन रेल कर्मयोगी'-

'शिष्टता अमृत' के निष्पादन के दौरान, फील्ड प्रशिक्षण सम्बन्धी विश्लेषण PedgogTM प्लेटफॉर्म द्वारा उपलब्ध कराए गए, जिसमें न केवल फील्ड प्रशिक्षण की प्रगति-रिपोर्ट शामिल थी बल्कि मास्टर ट्रेनर्स द्वारा फील्ड स्टाफ को दिए गए प्रशिक्षण की गुणवत्ता (स्तर ए/बी/सी) भी शामिल थी। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिली कि प्रदान किए गए निर्देश की गुणवत्ता से कोई समझौता किए बिना मिशन लक्ष्य समय पर प्राप्त हो सके।

कर्मयोगी क्षण

'मिशन रेल कर्मयोगी' की गति को बनाए रखने और कर्मयोगी अनुभवों को साझा करने हेतु एक मंच प्रदान करने के लिए, IRITM द्वारा 06 जून, 2022 को एक 'कर्मयोगी मोमेंट्स' व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया। अपने कर्मयोगी क्षणों को एक दूसरे और भारतीय रेल परिवहन प्रबंधन संस्थान के साथ साझा करने के लिए सभी सुपर ट्रेनर्स को इस व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ा गया। यह व्हाट्सएप ग्रुप रेल कर्मयोगियों द्वारा क्षेत्र में किए गए सभी अच्छे कार्यों का रिकॉर्ड रखने में मदद करता है। इस व्हाट्सएप ग्रुप में प्राप्त प्रोत्साहन और मान्यता भी फील्ड स्टाफ को हर बार बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करती है।



झांसी मण्डल, उत्तर मध्य रेलवे

मूलभूत सिद्धांत

कर्मयोगी होना क्या है

एक सच्चा कर्मयोगी वह व्यक्ति होता है जो बिना किसी भौतिक लाभ की अपेक्षा के और समाज के बृहद् लाभ के लिए निस्वार्थ रूप से अपना कर्तव्य करता है। 'मिशन कर्मयोगी' का उद्देश्य सरकारी सेवकों में देश के नागरिकों के लिए नि:स्वार्थ सेवा की भावना को जीवंत करते हुए उन्हें कर्मयोगियों में बदलना है। 'शिष्टता अमृत' परियोजना के तहत रेलकर्मियों को दिया जाने वाला प्रशिक्षण कुछ मूल अवधारणाओं पर आधारित है, जिनमें से एक 'सेवा-भाव' है यानी दूसरों की नि:स्वार्थ सेवा की भावना। प्रशिक्षुओं को ग्राहकों के साथ अपने व्यवहार में 'सेवा-भाव' विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, लेकिन एक यात्री टिकट निरीक्षक में 'सेवा-भाव' क्यों हो, जब ट्रेन की अत्यधिक देरी के लिए उसे यात्रियों का दुर्व्यवहार झेलना पड़ता हो, या जहां वह एक प्रतीक्षा सूची के यात्री को आउट ऑफ टर्न सीट प्रदान करके अतिरिक्त पैसा कमा सकता हो।

वास्तव में, संवाद में मानवीय तत्व को कम करके और मशीनीकरण को बढ़ाकर, जैसे टीटीई द्वारा हैण्ड हेल्ड उपकरणों के उपयोग से, सेवा वितरण में सुधार किया जा सकता है।

ऐसा करना सूचना को सुलभ और लेन-देन को पारदर्शी बनाकर भ्रष्टाचार को रोकेगा। लेकिन मानवीय तत्व को कभी समाप्त नहीं किया जा सकता है। यदि रेलवे में ग्राहक-संपर्क सुधार करना है तो 'सेवा-भाव' का गुण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रशिक्षण में, प्रशिक्षुओं को इस विचार से अवगत कराया जाता है कि नागरिकों / ग्राहकों की नि:स्वार्थ सेवा आंतरिक संतुष्टि अर्थात 'आंतरिक फल' का स्रोत है, जो अपने कार्य को अच्छी तरह से करने से उत्पन्न होता है। अपने कार्य को अच्छी तरह से करने के तीन मूल तत्व हैं:-

दी गई बाधाओं के तहत सर्वोत्तम संभव सेवा प्रदान करना, हर समय पेशेवर होना और नागरिकों के साथ सभी संवाद में मानवीय स्पर्श रखना। ऊपर दिए गए उदाहरण में टीटीई एक सच्चा कर्मयोगी होगा, यदि वह उत्तेजित यात्री को ट्रेन की देरी के कारण के बारे में सटीक जानकारी दे सके, सही स्रोत से कारण का पता लगाकर पेशेवर रूप से ऐसा करे और पूरी प्रक्रिया के दौरान अपना संतुलन बनाए रखे। परिस्थितिजन्य बाधाओं में यह सबसे अच्छी प्रतिक्रिया होगी। यात्री को उसकी अन्य जरूरतों, जैसेकि भोजन / पानी में मदद करना इस पूरी परिस्थिति को मानवीय स्पर्श दे सकता है, जिसे तीसरी और अंतिम प्रतिक्रिया के रूप में जोड़ा जा सकता है।

इन जैसे 'कर्मयोगी क्षणों' से प्राप्त 'आंतरिक फल' प्रशिक्षु के 'तृप्ति के वृक्ष' को सुशोभित करते हैं। अपने कार्य को अच्छी तरह से करने से उत्पन्न होने वाला 'व्यक्तिगत विकास', ग्राहकों सहित दूसरों के द्वारा अपने काम की मान्यता से उत्पन्न आत्म-सम्मान की भावना और 'योगदान की खुशी' से प्राप्त आंतरिक प्रेरणा, ये सभी अपने कार्य से प्राप्त होने वाले 'आंतरिक फल' हैं। नौकरी का पारिश्रमिक, कार्यकाल की सुरक्षा आदि बुनियादी जरूरतें 'बाहरी फल' हैं, जिन्हें एक कर्मचारी को प्रेरित करने के लिए पूरा किया जाना चाहिए, परन्तु 'आंतरिक फल' प्रशिक्षु / कर्मचारी की उच्चतम जरूरतों को पूरा करते हैं और उसे विपरीत परिस्थितियों में भी काम करने के लिए प्रेरित करते हैं।

'मास्लो' और 'एल्डरफेर' जैसे संगठनात्मक व्यवहार के सिद्धांतकारों ने तर्क दिया है कि किसी भी संगठन के कर्मचारियों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों में काम करने वालों की प्रेरणा के लिए उच्च क्रम की जरूरतों की पूर्ति महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए 'मिशन रेल कर्मयोगी' भारतीय रेल संगठन के भीतर कर्मचारी प्रेरणा को बढ़ावा देने के लिए बड़े पैमाने पर नागरिक केन्द्रीयता पर ध्यान पुनर्केंद्रित करने का प्रयास है।

प्रेरित कर्मचारी एक संगठन में नागरिक विश्वास का निर्माण करते हैं। जहाँ भारतीय रेल राष्ट्र की जीवन रेखा के रूप में सार्वजनिक कल्पना में प्रतिष्ठित है, 'मिशन रेल कर्मयोगी' प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रत्येक रेलवे कर्मचारी के पेशेवर और सेवा अभिविन्यास को और मजबूत करके तथा मानवीय स्पर्श देकर रेलवे में नागरिक विश्वास को बढ़ावा देना है। .

निष्कर्ष

'मिशन रेल कर्मयोगी' उन सभी के लिए एक रोमांचक यात्रा रही है जो इसके क्रियान्वयन से जुड़े रहे हैं। मिशन के तहत प्रशिक्षित किए गए फील्ड स्टाफ के प्रशंसा पत्र रेलवे की कार्य संस्कृति में एक आमूलचूल बदलाव लाने में इस मिशन के महत्त्व के बारे में बताते हैं–

''मेरी वर्किंग पर इस प्रोग्राम का बहुत फर्क पड़ेगा क्यूंकि मैं अब पैसेंजर को आंतरिक रूप से जानकर उसकी कही और अनकही बातों के बारे में सोचूंगी.. ये जो बात आई है, मुझे बहुत इफेक्ट किया इसने.. और जो वो (पैसेंजर) नहीं कह पाता, मैं उस चीज को भी समझने की कोशिश करूंगी।''

श्रीमती निधि, उपसीआईटी, फील्ड प्रशिक्षु, दिल्ली मंडल

''इन क्लासेज को करने के बाद ऐसा महसूस हो रहा है जैसे हनुमान जी का उनका बल याद दिलाया गया था। वह अपना बल भूल गए थे.. वैसे ही कर्मयोगी बनाने का हमारे अदंर जज़्बा पैदा किया एकसी क्लासेज कराके.. मुझे बहुत अच्छा लगा। रेलवेज ऐसी ही और क्लासेज कराए जिससे कि हम कर्मचारी लोग जाग्रत हो सकें और अपने संस्थान के लिए अच्दी और बेहतर सुविधाएं यात्रियों को दे सकें।''

-श्री दीपक शुक्ला, टीएचई, फील्ड ट्रेनी, दिल्ली मडंल

इस तरह के कई और प्रशंसा-पत्र हैं जो कार्यक्रम के सकारात्मक प्रभाव के बारे में तो बताते ही हैं, साथ ही हमें इस मिशन को पूरी ऊर्जा और दृढ़ संकल्प के साथ निष्पादित करने का विश्वास भी प्रदान करते हैं। यह कार्यक्रम संगठनात्मक गौरव को बढ़ाने और इस देश के नागरिकों की देखभाल करने वाले और दृढ़ साथी के रूप में भारतीय रेल की साख को मजबूत करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

सशस्त्र सीमा बल

श्री मनीष बाजपेई
वरिष्ठ पत्रकार, दूरदर्शन समाचार



एक वाकया साल 2021 दिसम्बर का है जब मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले में एक खेतिहर मजदूर की 27 वर्षीय बेटी सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) में नियुक्ति के बाद जब पहली दफा वर्दी में अपने पैतृक गांव पहुंची तब ग्रामीणों ने ढोल की थाप पर उसका जोरदार स्वागत किया। संध्या भिलाला के लिए यह गर्व और खुशी का क्षण था। ऐसी कई कहानियां देश के कई हिस्सों में बिखरी मिलेंगी, लेकिन इनके पीछे का जो भाव है, वह है सशस्त्र सीमा बल में महिलाओं की भागीदारी को लेकर। दरअसल 'आत्मनिर्भर महिला' का जिक्र किया जाए या फिर 'आत्मनिर्भर भारत' का, भारत-नेपाल सीमा का या भारत-भूटान सीमा का, देश की आन्तरिक सुरक्षा का या फिर बाढ़ राहत हो या नक्सली क्षेत्रों में मोर्चा लेने का लक्ष्य हो ...इन सब समस्याओं से जूझता है देश का सशस्त्र सीमा बल और इस बल में कई ऐसे सूत्र हैं, जिसके जरिए सशस्त्र सीमा बल 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के सूत्र को चरितार्थ करता है।

सशस्त्र सीमा बल के अस्तित्व में आने की कहानी बहुत रोचक है और इसकी पृष्ठभूमि से ही इसकी उपयोगिता की भूमिका समझ में आने लगेगी, दरअसल जब साल 1962 में भारत-चीन का युद्ध हुआ और भारत की पराजय होने के बाद ये साफ हो चला था कि हमारी हिमालयी सीमा असुरक्षित है तब वहां एक ऐसे संगठन की जरूरत महसूस की गई जो इस जरूरत को पूरा कर सके। साल 1963 में इस क्षेत्र के लिए स्पेशल सिक्योरिटी बॉडी की स्थापना की गई, जिसको बदलते कालखंड में साल 1970 में 'स्पेशल सर्विस ब्यूरो' नाम दिया गया। सशस्त्र सीमा दल की शुरुआत ही जिस संकल्पना के साथ हुई, वह अन्य अर्धसैनिक बलों से बिलकुल जुदा थी। बल में साहस के साथ साथ सौम्यता के भाव का भी मिश्रण है। बल में बहादुरी के साथ मानवता का भाव भी परिलक्षित होता है और इसके अतिरिक्त जब बल का आगाज स्पेशल सर्विस ब्यूरो से हुआ तब से ही एक ही लक्ष्य था जिसमें सरहदी आबादी का भरोसा जीत कर उनमें राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करना और राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल करना। सन 2001 के बाद स्पेशल सर्विस ब्यूरो ने एक नए दौर में प्रवेश किया। 2003 में इसे सशस्त्र सीमा बल के रूप में एक नई पहचान मिली और सीमा रक्षक के रूप में भूमिकाएं निबद्ध हुईं। एसएसबी की कार्य कुशलता का सम्मान करते हुए साल 2004 में तत्कालीन उप प्रधानमंत्री श्रीमान लालकृष्ण आडवाणी जी के द्वारा प्रेसिडेंट कलर से सम्मानित किया गया। आज सशस्त्र सीमा बल भारत नेपाल, भारत भूटान की संवेदनशील और खुली हुई सीमाओं और चुनौतीपूर्ण जगहों पर दिन-रात अपनी भूमिका को निभाते हुए काम कर रहा है। इसके अतिरिक्त आंतरिक सुरक्षा, उग्रवाद विरोधी अभियान, आपदा राहत, वन्यजीव और मानव तस्करी को रोकने में अपना योगदान दे रही है। इन मुश्किल कामों को बखूबी अंजाम देने के लिए सशस्त्र सीमा बल लगातार अपनी क्षमता में वृद्धि कर रहा है। वर्तमान में 18 सेक्टर मुख्यालयो के अधीन लगभग 69 सशक्त बटालियनों में लगभग 78,000 समर्पित अधिकारी और जवान तैनात हैं,

जिनमें तकरीबन 1,400 महिलाएं भी शामिल हैं। दरअसल 1,751 किलोमीटर लंबी भारत-नेपाल सीमा और 699 किमी भारत-भूटान सीमा की निगरानी करना कोई आसान काम नहीं है क्योंकि खुली हुई सीमाओं पर राष्ट्र विरोधी तत्वों को पहचानना बेहद जटिल कार्य है। इसके बाद साल दर साल एसएसबी ने अपनी तत्परता से बड़ी संख्या में अपराधियों और तस्करों को गिरफ्तार करने के अलावा करोड़ों रुपए का प्रतिबंधित और अवैध सामान भी जब्त किया है, इनमें प्रतिबंधित नशीले पदार्थों, वन्यजीव और पुरातात्विक महत्त्व की चीजें भी शामिल हैं। सीमा पर मानव तस्करी के विरुद्ध भी मुहिम लगातार चल रही है। विषम परिस्थितियों में भी अपने फर्ज को अंजाम देने की भूमिका को समझते हुए एसएसबी को नक्सल विरोधी अभियान चलाने का जिम्मा सौंपा गया है। बिहार, छत्तीसगढ़ और झारखंड के वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में सशस्त्र सीमा बल ने सटीक और अचूक कार्रवाई करते हुए नक्सलियों के हौसले पस्त किए हैं। अब तक सैकड़ों नक्सलियों की गिरफ्तारी और भारी मात्रा में विस्फोटक और हथियार बरामद किए हैं। कश्मीर में भी आतंकवादी घटनाओं को रोकने में सहयोग करने के लिए एसएसबी को आमंत्रित किया गया। देश में आंतरिक सुरक्षा और कानून व्यवस्था बनाए रखने में भी बल का अमूल्य योगदान है। यूं तो जरूरत पड़ने पर बल के जवान किसी भी सेवा के लिए हर पल तैयार रहते हैं, लेकिन प्राकृतिक और अन्य आपदाओं में सशस्त्र सीमा बल के जवान संकटग्रस्त लोगों के लिए सदैव फरिश्ता बनकर आए हैं। 29 जुलाई 2017 को 18 बचाव और राहत दलों की एक साथ शुरूआत की गई। इस दल के लोग अत्यंत दक्ष होने के साथ-साथ आधुनिकतम राहत उपकरणों से लैस किए गए हैं। सशस्त्र सीमा बल एक बहुआयामी फोर्स बनकर उभरी है, जो उत्तरदायित्वों के निर्वाहन के लिए स्वस्थ शरीर, तेज मस्तिष्क क्षमता और उच्च कोटि की निर्णय क्षमता की मांग करती है। इस मांग को पूरा करते हैं एसएसबी के 12 ट्रेनिंग सेंटर जो जवानों और अधिकारियों को इस मांग के लिए तैयार करते हैं। ऑफिसर्स ट्रेनिंग के लिए एसएसबी अकादमी भोपाल, काउंटर इनसर्जेंसी और जंगल वार फेयर स्कूल, ग्वालदम के अतिरिक्त श्रीनगर और गोरखपुर स्थित ट्रेनिंग सेंटर उच्च स्तर का प्रशिक्षण देने में अपनी महारत रखते है वहीं अलवर का डॉग ट्रेनिंग सेंटर डाग स्क्वॉड की जरूरत को पूरा करता है। प्रशिक्षण यदि बल की आवश्यकता है तो आधुनिकीकरण भी बल की प्राथमिकताओं में शामिल है और इसलिए निरंतर रुप से सशस्त्र सीमा बल आधुनिकतम तकनीकों से अपने आप को सुसज्जित कर रहा है। बख्तरबंद सैनिक वाहन और बुलेटप्रूफ वाहन से सुसज्जित सशस्त्र सीमा बल की पहली पंक्ति मजबूत हुई है। एक तरफ एसएसबी के जांबाज जवान अपने कर्तव्य को पूरा करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते तो वहीं दूसरी तरफ एसएसबी मुख्यालय यह सुनिश्चित करता है कि देश सेवा में लगे जवानों और कार्मिकों के कल्याण में कोई कमी न रह जाए। सुदूर सीमा पर तैनात जवानों की सुविधाओं के लिए विकसित एसएसबी वेलफेयर एक ऐसा ही कदम है, जिसके अन्तर्गत एसएसबी कर्मियों और उनके परिवारों के कौशल विकास के लिए छह कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र स्थापना की गई जो इसी दिशा में एक बेहतरीन कदम है।

आज एसएसबी की भूमिका भले ही बदल चुकी हो, लेकिन सीमावर्ती इलाकों में आज भी इसकी विश्वसनीयता जनता के बल के रूप में ही है। बल कार्मिकों की नियुक्ति में खिलाड़ियों को तरजीह दिए जाने के नतीजे सामने आने लगे हैं। एसएसबी के खिलाड़ियों ने देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी तिरंगे का मान बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त सशस्त्र सीमा बल के ऐसे जवानों की लम्बी फेहरिस्त भी है, जिन्होंने वतन के खातिर अपना सर्वस्व दे दिया और शहीद हो गए। जांबाजी एसएसबी की परंपरा का हिस्सा है। बल को मिले अनेक वीरता चक्र और सम्मान इसके साक्षी हैं। सशस्त्र सीमा बल की यह कीर्ति गाथा निस्संदेह आने वाले दिनों में देश प्रेम और वीरता की अनूठी कथाएं लिखने को तैयार हैं और 'एक भारत को श्रेष्ठ भारत' बनाने में अपनी भूमिका निर्वाहन अपेक्षाओं से कहीं ज्यादा करने को तत्पर है..फिजाओं में ये पक्तियां लगातार सशस्त्र सीमा बल का यशगान करती रहेंगी.....

सिर्फ सुरक्षा दुश्मन से नहीं है लक्ष्य हमारा, धर्म हमारा है सेवा प्रेम और भाई चारा

देश की खातिर मर मिटने का है संकल्प अटल, हम हैं सशस्त्र सीमा बल



माथे पर बिंदी

सुश्री विनीता आर्या



प्रिया पूरे दो साल बाद अपने देश आ रही थी। इतने साल बाद घर आने की खुशी अलग ही होती है। पढ़ाई पूरी होने के बाद विदेश में ही नौकरी लग गई थी प्रिया की और वो वहाँ पर ही सेटल हो गई थी। घरवालों से मिलने की जल्दी तो थी ही प्रिया को, उससे भी ज्यादा जल्दी थी सीमा से मिलने की। बड़ी पक्की सहेलियाँ थीं दोनों। बचपन से ही एक-दूसरे के साथ खेलकर बड़ी हुई थीं। एक ही स्कूल, एक ही कॉलेज, एक दिन भी एक-दूसरे से मिले बगैर बात करे बिना नहीं रह पातीं, ''हम तो शादी भी ऐसे ही घर में करेंगी, जिस घर में दो भाई हों'', ऐसा कहतीं, लेकिन हमेशा ऐसा होता तो नहीं। शादियाँ तो संजोग से होती हैं न। सीमा की शादी उसी शहर में रहने वाले विकास से हो गई और प्रिया चली गई विदेश।

बचपन से ही तरह-तरह की बिंदियाँ लगाने का शौक था सीमा को। जब भी बाजार जाती, खूब सारी बिंदियाँ उठा लाती। आंटी से खूब डांट पड़ती, ''क्या करोगी इतनी सारी बिंदी का? पूरा घर भर दोगी'' मगर वो नहीं सुनती। स्वभाव से एकदम जिद्दी, हमेशा अपने ही मन की करती। हालाँकि रंग-बिरंगी बिंदियाँ उसके दमकते चेहरे की सुंदरता पर और चार चाँद लगा देती थीं। सीमा हमेशा बोलती, ''देखना प्रिया, जब मेरी शादी होगी तो शादी के बाद कितनी तरह-तरह की बिंदी लगाऊँगी'' और मैं हँस पड़ती ''हाँ, शादी तो एक तेरी ही होगी। हमारी थोड़ी न। हम थोड़ी न बिंदी लगाएंगे!'' बस, इसी नोंक-झोंक के बीच सीमा की शादी भी तय हो गई। सबसे सुंदर दुल्हन लग रही थी सीमा अपनी शादी में। लाल जोड़ा, माथे पर बिंदी, हाथों में चूड़ियाँ। दुल्हन के लिबास में एक अलग-सा ही नूर था उसके चेहरे पर। बड़ी ही सज रही थी। आखिरी बार तभी देखा था उसे। अतीत के पन्नों में पूरी तरह डूबी हुई प्रिया अपनी दोस्ती के उन जीवंत पलों को याद कर बहुत उत्साहित महसूस कर रही थी। अब पूरे दो साल बाद देखूँगी सीमा को। अब तो और भी सुंदर दिखने लगी होगी, एकदम सजी-धजी किसी अप्सरा की तरह। मुझे यूँ अचानक देखकर तो चौंक ही जायेगी। यही सब सोचते-सोचते कब एयरपोर्ट आ गया, पता ही नहीं चला प्रिया को। सबसे पहले बाजार जाकर सीमा के लिए लाल रंग की साड़ी और बिंदियाँ खरीदीं। बिंदी देखकर सीमा बहुत खुश हो जाएगी। घर पहुँचते ही सबसे मिलकर बोली, ''मैं सीमा से मिलने जा रही हूँ, बहुत दिन हो गए हैं। कितने समय से बात भी नहीं हुई उससे।'' ''बाद में मिल लेना, थोड़ा आराम तो करे ले, अभी-अभी आई है। ठीक से बात भी नहीं हुई'' माँ ने कहा, ''नहीं माँ, बस थोड़ी ही देर में आ जाऊँगी'' ''अरे! पर सुन तो'' थोड़ी देर में कहकर प्रिया निकल गई। सीमा के घर पहुँचकर दरवाजे की घंटी बजाई तो सीमा की सास ने दरवाजा खोला, ''नमस्ते आंटी, सीमा है? मैं उसकी बचपन की दोस्त प्रिया।'' ''आओ अंदर आओ। तुम बैठो, मैं अभी बुलाती हूँ सीमा को। सीमा, तुम्हारी सहेली आई है। नीचे आ जाओ''। मन ही मन सोचने लगी कि आते ही कितनी डांट लगाएगी मुझे और पता नहीं जीजू क्या कहेंगे? कैसे मिजाज होंगे उनके? सीढ़ियों से सीमा को नीचे के हॉल में आते हुए देखा तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ।'' पैरों तले जमीन खिसक गई। सफेद साड़ी, न माथे पर बिंदी, न हाथों में चूड़ियाँ, सूनी मांग। बस, मुझे देख आकर रोते हुए गले लग गयी और ''बोली बहुत देर लगा दी आने में। कहाँ थी तुम जब मुझे तुम्हारी सबसे ज्यादा जरूरत थी तुम क्यों नहीं थी? प्रिया क्या तुम्हें कभी अपनी सहेली की याद नहीं आई? जिंदगी ने जो इतना बड़ा गम मुझे दिया, वो मैं किसके साथ बाँटती? तुम्हारी कमी हर पल खलती रही। तुम मेरे साथ क्यों नहीं थी प्रिया? शादी के छह महीने के बाद ही विकास की एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। बहुत खुश थी मैं उनके साथ मानो मेरी ख्वाहिशों को पंख लग गए हों। वो मेरी छोटी से छोटी जरूरत का खयाल रखते। तुझे पता है, वो भी मेरे लिए रंग-बिरंगी बिंदियाँ लाया करते थे क्योंकि वो जानते थे कि मुझे कितनी खुशी मिलती है बिंदी लगाने से, पर ये क्या हो गया प्रिया? अभी तो हमने अपने नए जीवन की शुरुआत ही ठीक से नहीं की थी और ये दुःखों का पहाड़ मेरे ऊपर टूट गया। मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ प्रिया? मैंने किसी का क्या बिगाड़ा था? मुझे किस बात की सजा मिली है?''

''मुझे माफ कर दो, सीमा। मुझे इन सबके बारे में कुछ भी नहीं पता था। सोचा था, घर आकर दोनों मिलकर खूब घूमेंगे, खूब शॉपिंग करेंगे, जीजू के कान पकड़कर पूछूँगी कि कहीं वो मेरी प्यारी सहेली को परेशान तो नहीं करते हैं, लेकिन यहाँ आकर तुम्हें इस रूप में देखूँगी सपने में भी नहीं सोचा था।'' ''किस्मत का लिखा कौन टाल सकता है प्रिया? पर अब तुम आ गयी हो तो थोड़ा दुःख तो हल्का होगा। ''अच्छा! सीमा, अब से मैं रोज तुम्हारे पास आऊँगी, हम खूब बातें करेंगे।'' जाते हुए प्रिया ने कहा ''ये लाल साड़ी और बिंदियाँ लाई थी तुम्हारे लिए?'' ''अब ये मेरे लिये नहीं हैं तुम वापस ले जाओ'' ''लेकिन बिंदी, वो तो तुम्हें पसंद

थी न'' ''हाँ पसंद थी, पर अब समाज मुझे इसे लगाने की इजाजत नहीं देता।'' प्रिया चुपचाप वापस आ गई। सीमा से मिलने के बाद प्रिया के मन में एक अजीब-सी बेचैनी बनी रही। घर आकर माँ से पूछा-''माँ क्या पति के इस दुनिया से चले जाने पर पत्नी की जिंदगी बिलकुल बेरंग हो जाती है, इतनी कि वो अपनी सबसे प्यारी चीज को भी त्याग देती है'' ''हाँ, यही रीत है, दुनिया की'' माँ ने कहा लेकिन ये कैसी रीत है ''प्रिया सोचने लगी। अब प्रिया रोज सीमा के घर जाती। प्रिया से अपने मन की बात करके सीमा के दिल का बोझ थोड़ा हल्का जरूर होता, मगर फिर भी उसके होंठों पर फीकी-सी मुस्कान और आँखों से छलके आँसू उसके दर्द को बयां कर ही देते। प्रिया हर दिन सीमा से मिल कर दुखी मन से घर वापस लौटती क्योंकि अब सीमा वो पहले वाली सीमा रही ही नहीं थी जो हर बात पर जोर-जोर से खिलखिलाने वाली, मौज-मस्ती वाली और हमेशा अपने मन की करने वाली थी। अब जो सीमा सामने थी वो तो जिंदगी जीना भूल ही गई थी।

बातों-बातों में एक दिन प्रिया ने पूछा ''सीमा, तुम अपने मायके क्यों नहीं चली जाती हो? ऐसी बेरंग जिंदगी से तो बेहतर ही होगा।'' वो भी कोशिश करके देख ली मगर तुम्हें ''तो पता ही है न, शादी के बाद लड़कियों को यही सिखाया जाता है कि ससुराल ही तुम्हारा असली घर है और आगे की जिंदगी उनके हिसाब से ही निभानी पड़ती है। वैसे भी हर माता-पिता समाज के बनाये हुए नियमों के विरुद्ध कहाँ जा पाते हैं? इसलिए ये ख्वाहिशों की कब्र में, बंधनों और नियमों में लिपटी हुई जिंदगी ही मेरी असलियत है, लेकिन कभी-कभी एक घुटन-सी महसूस होती है फिर अपनी हकीकत से समझौता कर लेती हूँ। खैर, तुम मेरी छोड़ो, कुछ अपने बारे में भी बताओ।'' ''मेरे बारे में कल बताऊँगी सीमा। अब में चलती हूँ माँ इंतजार कर रही होंगी'' कहकर प्रिया घर के लिए निकल गई।

दूसरे दिन प्रिया सीमा के घर गई और बोली ''इधर आओ सीमा'' पर्स से बिंदी निकाली और लगा दी सीमा के माथे पर, ''आईना देखो सीमा। अब तुम वही पहले वाली सीमा लग रही हो'' सीमा ने भी आईना देखा तो एक भीनी-सी मुस्कान आ गई उसके चेहरे पर। विकास के जाने के बाद तो जैसे वो आईना देखना भूल ही गयी थी, लेकिन जैसे ही सीमा की सास आई, उसके माथे पर बिंदी देख कर बुरी तरह चिल्ला पड़ी, ''ये क्या कर रही हो? विधवा को बिंदी लगा रही हो, कोई शर्म-लिहाज है कि नहीं?'' ''लेकिन आंटी बिंदी लगाने में क्या हर्ज है?'' प्रिया ने कहा। ''एक विधवा को बिंदी लगाकर पाप का भागीदार बना रही हो और पूछती हो कि क्या हर्ज है? समाज वाले देखेंगे तो क्या कहेंगे, पति को मरे ज्यादा समय भी नहीं हुआ और बीबी श्रृंगार कर के घूम रही है'' ''पर आंटी ये सब तो पुरानी बातें हो गई हैं अब इन पुरानी रूढ़ियों को कोई नहीं मानता'' प्रिया ने कहा। ''नहीं मानते होंगे, मगर हम मानते हैं। कुछ दिन विदेश में क्या रह लीं हमें सिखा रही हो, सीमा हमारे घर की बहू है। वो कैसे रहेगी, ये हम तय करेंगे तुम नहीं। वैसे भी जब से इस घर में आई है, हमारे घर की सुख-शांति छिन गई। कौन से मुहुर्त में ब्याह के लाये थे इसे। मेरे बेटे को भी खा गई, मनहूस है ये। अब ये वही करेगी जो हम कहेंगे।'' सीमा की तरफ बढ़ी और बिंदी हटा के जमीन पर फेंक दी। प्रिया ने दूसरी बिंदी निकाली और सीमा के माथे पर फिर से लगा दी। ''ऐ लड़की'' सीमा की सास बौखलाई, ''तुम हमारे घर के मामलों में न पड़ो'' सीमा इस घर की बहू है। हर औरत को समाज के बनाए गए नियमों के हिसाब से ही चलना पड़ता है। पति के मरने के बाद जैसे सारी औरतें रहती हैं बहू को भी वैसे ही रहना पड़ेगा।'' ''यही तो बात है आंटी जी। इसे आपने बहू ही समझा। अगर बेटी माना होता तो इसकी तकलीफ देख पातीं। एक औरत होकर भी एक दूसरी औरत का दर्द नहीं समझ पाई आप देखिए इसकी तरफ। एक जिंदा लाश के सिवाय अब ये और कुछ नहीं। चलो सीमा मेरे साथ, मैं तुम्हें इन दकियानूसी, रूढ़ियों में पड़कर अपना जीवन बर्बाद नहीं करने दूँगी। जहाँ पति के गुजर जाने के बाद पत्नी को जीते जी मार दिया जाता है, जहाँ पुरुषों के लिये कोई सीमा नहीं, मगर औरतों के लिये हजारों सीमाएं हैं, जहाँ पत्नी के गुजर जाने के बाद, तुरंत ही पति को दूसरी शादी के लिए प्रेरित किया जाता है उन्हें समाज की किसी भी घिसी-पिटी कुरीतियों के बंधन में नहीं बांधा जाता है वहीं पत्नी को नीरस जीवन जीने के लिये मजबूर किया जाता है। ये कौन सा समाज है जहाँ औरतों पर हो रहे जुल्मों और अत्याचारों को रीतियों और नियमों का नाम दे दिया जाता है और बेचारी औरतें इन रूढ़ियों के पैरों तले दबे-दबे अपना दम तोड़ देती हैं। ये कौन लोग हैं जो तय करते हैं कि एक औरत क्या पहनेगी, कैसे रहेगी, कैसे श्रृंगार करेगी, क्या खाएगी, कितना बोलेगी कितना हँसेगी, अरे! बाहर निकलिए इन दकियानूसी, रूढ़िवादी सोच से, जहाँ नियम बनाकर एक औरत को ही दूसरी औरत के खिलाफ खड़ा किया जाता है और उन्हें दबाया जाता है। चलो, सीमा जहाँ प्यार, स्नेह और सम्मान न मिले वहाँ से चले जाना ही बेहतर होता है।'' सीमा ने भी प्रिया का हाथ पकड़ा और चली गयी अपनी आज़ादी की ओर।

ऐसा ही तो होता आ रहा है हमारे समाज में, पुरुषों के लिये कोई नियम नहीं, वहीं औरतों के लिये हजारों नियम-कायदे। ऐसी रूढ़िवादी सोच ही औरतों को नरक-सा जीवन जीने के लिये मजबूर करती हैं। ऐसा कौन सा तूफान आ जाएगा अगर कोई सीमा पति के गुजर जाने के बाद बिंदी लगाना चाहे या फिर चूड़ियाँ पहनना चाहे। क्या पाप है और क्या पुण्य, ये कौन तय करता है? अगर एक औरत चाहे तो वो हर बंधन से मुक्त हो सकती है, बस उसके इरादे मजबूत होने चाहिए। जीवन-मरण सब ईश्वर के हाथ है। पति के जाने के बाद उसका दोष पत्नी के सिर मढ़ने के बजाय उसकी बिखरी हुई जिंदगी को प्यार और स्नेह से संवारते हुए उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए क्योंकि संसार का नियम है कि किसी के भी जाने से जिंदगी तो नहीं थमती वो तो अपनी रफ्तार से निरंतर आगे बढ़ती रहती है। माना कि कई जगहों पर अब औरतें इन कुरीतियों के विरुद्ध खुद के अस्तित्व को साबित कर रही हैं लेकिन देश के नागरिक होने के नाते हम सब का कर्तव्य बनता है कि हम ऐसी सदियों से चली आ रही रूढ़ियों को रोकें, उनका विरोध करें, औरतों की खुशियों का सम्मान करें, औरतों के सपनों को उड़ान देने के लिए उनके पंख बनें, उनके पैरों की बेड़ियाँ नहीं, उन्हें खुली हवा में सांस लेने दें क्योंकि एक स्वतंत्र और स्वस्थ मन ही स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है।



कामाख्या टेम्पल

गुवाहाटी का सुनहरा अतीत

श्री दिनकर कुमार

> 'महाराजाधिराज श्री सुरेंद्रवर्मन कृतं भगवतः वल्लभद्र स्वामीनाय इदं गुहाम।'

ये पंक्तियाँ गुवाहाटी से कुछ किमी की दूरी पर नीलांचल पहाड़ी में पाए गए एक शिलालेख से ली गई हैं। इसमें लिखा है: ''प्रसिद्ध भगवान बलभद्र की इस गुफा (मंदिर) का निर्माण महाराजाधिराज श्री सुरेंद्र वर्मन द्वारा किया गया है।''

शिलालेख 5वीं शताब्दी ईसवी पूर्व का होने का अनुमान है, जो इसे उत्तर-पूर्वी भारत में सबसे पहले पाए जाने वाले शिलालेखों में से एक बनाता है। दिलचस्प बात यह है कि यह वैष्णव पंथ के देवता बलभद्र को समर्पित एक मंदिर को संदर्भित करता है, लेकिन मंदिर का स्थान-नीलांचल हिल्स-काफी हद तक शैव परंपरा वाला स्थल था। विशेष रूप से शिलालेख ने इतिहासकारों को वर्मन राजाओं की वंश परंपरा स्थापित करने में भी मदद की (इसमें 'सुरेंद्र वर्मन' का उल्लेख है)। हममें से बाकी लोगों के लिए हालांकि, इसने कुछ और संकेत दिया-एक शहर। गुवाहाटी का अस्तित्व दर्ज मानव इतिहास

के 1,500 से अधिक वर्षों से पहले से कायम है। नीलांचल शिलालेख इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि गुवाहाटी कम-से-कम दो सहस्राब्दियों से एक बड़ी मानव बस्ती का घर रहा है। अधिकांश भारतीय इतिहासकारों की कल्पना में उत्तर-पूर्व की कल्पना शायद ही कभी की गई हो और फिर भी यह युगों से अपनी यात्रा में समय की कसौटी पर खरा उतरा है।

गुवाहाटी शहर के शुरुआती विवरण को प्रागज्योतिषपुर साम्राज्य के उल्लेख से अलग नहीं किया जा सकता है, जोकि रिकॉर्ड किए गए इतिहास की शुरुआत से बहुत पहले का होने का अनुमान है। जैसा कि किंवदंती है, प्रागज्योतिषपुर के राज्य में किरात और म्लेच्छ का निवास था, जिनको आमतौर पर मांस और शराब के आदी के रूप में दर्शाया गया था। उनके राजा घटक को शक्तिशाली राजा के रूप से वर्णित किया गया है। अंततः नरक नाम के एक राजा ने उन्हें हरा दिया और इस क्षेत्र में अपने स्वयं के द्विज (द्विज, या आर्य) लोगों को बसाया (आधुनिक गुवाहाटी से लगभग 5 किमी दक्षिण में नरकासुर गांव नामक निचली पहाड़ियों से घिरा एक स्थान है)।

किंवदंती यह भी है कि नरक के पुत्र भगदत्त, एक शक्तिशाली शासक, ने अपनी बेटी के स्वयंवर को एक बड़े जल निकाय के बीच में बने एक मंच पर आयोजित किया था। महाभारत के महान योद्धा कर्ण ने स्वयंवर जीत लिया, लेकिन उनके आग्रह पर राजकुमारी का हाथ दुर्योधन को दे दिया गया। जिस जल निकाय के बारे में कहा जाता है कि यह स्वयंवर हुआ था, उस 'दिघली पुखुरी' कहा जाता है। महाभारत की महाकाव्य कथा में भगदत्त ने अंतिम युद्ध में दुर्योधन और कौरवों के लिए लड़ाई लड़ी और बाद में उनकी एक सम्मानजनक मृत्यु हो गई।

दर्ज इतिहास में राजा भास्करवर्मन के निदानपुर प्लेट शिलालेख में राजा के पूर्वजों में नरक, उनके पुत्र भगदत्त और उनके पोते वज्रदत्त का स्पष्ट रूप से उल्लेख है जबकि प्राचीन काल में वंशावली अक्सर एक ऐतिहासिक शक्तिशाली पूर्वज के साथ संबंधों का दावा करने के लिए तैयार की जाती थी और इस तरह नीलांचल शिलालेख की वैधता एक बार फिर प्रागज्योतिषपुर के राज्य और अब गुवाहाटी के रूप में जाना जाने वाला शहर के अतीत को स्पष्ट करती है।

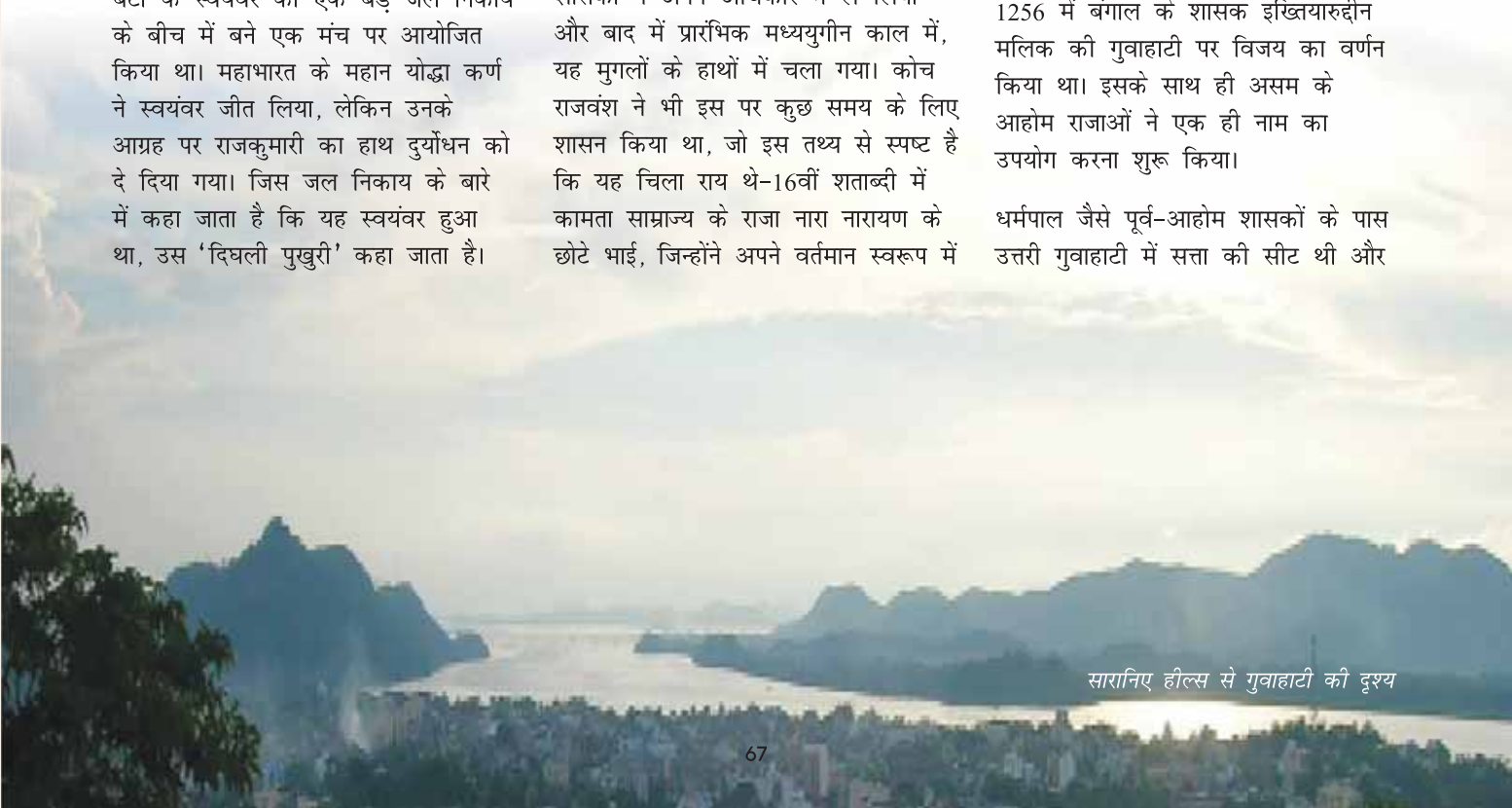
इतिहासकारों का मानना है कि राजा भास्करवर्मन की मृत्यु के बाद, पुराने गुवाहाटी को भास्करवर्मन के दुश्मनों में से एक सालस्तंभ द्वारा उजाड़ दिया गया था और यह अगले तीन सौ वर्षों तक किसी भी प्रमुख राजा का नगर नहीं रहा। शक्ति शून्य स्थिति शायद बेलतला और पांडु जैसे छोटे, लेकिन ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण राज्यों के विकास की ओर ध्यान खींचती है।

बाद के समय में गुवाहाटी को कछारी शासकों ने अपने अधिकार में ले लिया और बाद में प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में, यह मुगलों के हाथों में चला गया। कोच राजवंश ने भी इस पर कुछ समय के लिए शासन किया था, जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि यह चिला राय थे-16वीं शताब्दी में कामता साम्राज्य के राजा नारा नारायण के छोटे भाई, जिन्होंने अपने वर्तमान स्वरूप में कामाख्या मंदिर का निर्माण किया था, जिसे बाद में 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आहोम राजाओं द्वारा संरक्षित और मजबूत किया गया।

आहोम राजाओं ने अंततः सभी विरोधों को उखाड़ फेंका और गुवाहाटी में खुद को मजबूती से स्थापित किया जब, निचले असम के शासक बरफुकन ने गुवाहाटी में खुद को स्थापित किया। जब प्रशासन अंग्रेजों के हाथों में चला गया, तो उन्होंने शहर को अपने वर्तमान स्वरूप में उत्तर-पूर्व के प्रवेश द्वार के रूप में प्रस्तुत किया।

गुवाहाटी से जुड़ी कुछ शुरुआती ऐतिहासिक बहसें इसके नाम की उत्पत्ति के बारे में थीं। इसकी उत्पत्ति के बारे में इतिहासकारों ने अलग-अलग समय पर अलग-अलग व्याख्याएं दी हैं। उन्नीसवीं सदी के असम के बुद्धिजीवी गुणभीराम बरुआ का मानना था कि सभी संभावनाओं में यह नाम शहर भर में बहुतायत में पाए जाने वाले पेड़ों 'गुवा', या सुपारी से आया है जबकि प्राग्ज्योतिषपुर का नाम बदलकर गुवाहाटी कब हुआ, इसका कोई स्पष्ट रिकॉर्ड नहीं है, लेकिन बाद का पहला उल्लेख 13वीं शताब्दी के फारसी इतिहासकार मिन्हाज-ए-सिराज की एक किताब, 'तबकात-ए-नासिरी' में है, जिसने 1256 में बंगाल के शासक इख्तियारुद्दीन मलिक की गुवाहाटी पर विजय का वर्णन किया था। इसके साथ ही असम के आहोम राजाओं ने एक ही नाम का उपयोग करना शुरू किया।

धर्मपाल जैसे पूर्व-आहोम शासकों के पास उत्तरी गुवाहाटी में सत्ता की सीट थी और



सारानिए हील्स से गुवाहाटी की दृश्य

अहोम राजाओं ने इस परंपरा को जारी रखा और मुख्य रूप से ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी तट से शासन किया। हालाँकि अंग्रेजों के आगमन के साथ ध्यान नदी के दक्षिणी तट पर स्थानांतरित हो गया, जो गुवाहाटी के वर्तमान सेट-अप की उत्पत्ति है जबकि कोई उत्तर या दक्षिण गुवाहाटी की पुरातनता में तल्लीन हो सकता है। कथा में जो सुसंगत है वह ब्रह्मपुत्र ही है शहर की जीवन रेखा, जबसे यह अस्तित्व में आया है। उदाहरण के लिए, अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने कामरूप के राज्य में लौहित्य के तट पर पाए जाने वाले एक उत्पाद परलौहित्यक (चंदन) का उल्लेख किया है। ब्रह्मपुत्र को अक्सर असमिया भाषा में 'लुइत' कहा जाता है।

मध्ययुगीन काल में ब्रह्मपुत्र के तट भी कई युद्धों का स्थल थे, मुख्य रूप से पश्चिम में मुस्लिम शासकों और पूर्व के स्थापित राजाओं के बीच। कामरूप युग के स्थापत्य चमत्कारों में से एक-आधुनिक उत्तरी गुवाहाटी में सिलसाको पुल-वर्ष 1206 ईसवी में कामरूप राजा और अफगान मुहम्मद-ए-बख्तियार के बीच लड़ाई का स्थल था। हालांकि 1897 के असम भूकंप में सिलसाको पुल को नुकसान पहुंचा था।

ब्रह्मपुत्र आहोम और मुगलों के बीच लड़ाई के लिए भी रणक्षेत्र था, जिसकी परिणति 1671 में लाचित बरफुकन की शानदार जीत में हुई। नदी द्वारा किलेबंदी कर लाचित ने इटाखुली किले के साथ मुगलों को निर्णायक रूप से खदेड़ दिया। इस प्रकार ब्रह्मपुत्र हजारों वर्षों से गुवाहाटी के गढ़ की रक्षा करते हुए इतिहास की एक अगुआ के रूप में प्रवाहित है।

आहोम सत्ता की ऊंचाई पर बरफुकन के आवास को कलियाबोर से इटाखुली या सुकरेश्वर हिल में स्थानांतरित कर दिया गया। तक पहाड़ी की चोटी ब्रह्मपुत्र नदी के मनोरम दृश्य प्रस्तुत करती है, जिसमें प्रसिद्ध उमानंद या मयूर द्वीप शामिल हैं। इटाखुली के सामरिक महत्त्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब अंग्रेजों ने अपना प्रशासन स्थापित किया था, तब इटाखुली में उपायुक्त का बंगला बनाया गया था, जो आज भी खड़ा है।

मध्ययुगीन काल के दौरान अपने सामरिक महत्त्व के कारण इटाखुली ने एक सैन्य अड्डे के उद्देश्य को पूरा किया। इसलिए इस अवधि के दौरान शहर की कला और संस्कृति के विकास पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया। इस युग के दौरान आहोमों ने बड़ी संख्या में तालाब खोदे थे।

18वीं शताब्दी के अंत में जब अंग्रेजों ने पहली बार गुवाहाटी पर अधिकार किया, तो यह निराशा की स्थिति में था। लगातार बर्मी छापे और मोआमोरिया विद्रोह (1769-1805) ने आहोम साम्राज्य को बहुत कमजोर कर दिया था। गुवाहाटी शहर अब शासक की समृद्धि की सीट नहीं बल्कि गरीबी केंद्र में से एक था। सन् 1808 में गुवाहाटी से यात्रा करते हुए स्कॉटिश चिकित्सक और भूगोलवेत्ता फ्रांसिस हैमिल्टन ने टिप्पणी की कि भगदत्त का पूर्व निवास होने के बावजूद 'गौहाटी' शहर एक बहुत ही खराब जगह थी। ऐसी स्थिति थी कि एक समय पर ब्रिटिश प्रशासन ने राजधानी को तेजपुर स्थानांतरित करने के बारे में सोचा था। बंगाल प्रशासन के हस्तक्षेप के कारण इस योजना को कभी लागू नहीं किया गया था।

एक बार ब्रिटिश प्रशासन के आने के बाद गुवाहाटी ने अपना वर्तमान स्वरूप लेना शुरू कर दिया। 1824 में अंग्रेजों ने औपचारिक रूप से बर्मी सेना से शहर का प्रशासन अपने हाथ में ले लिया। अंग्रेजों ने कामाख्या में नीलांचल पहाड़ियों की तलहटी में असम में अपना पहला सदर (स्टेशन) स्थापित किया। इमारतों और कार्यालयों को बाद में सुकरेश्वर और जज



फील्ड क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया गया, जिसके अवशेष अभी भी खड़े हैं।

1853 में गुवाहाटी को एक नगरपालिका क्षेत्र घोषित किया गया था। एक हजार साल का शहर एक बार फिर आधुनिक परिभाषा के अनुसार 'शहर' बन गया। फिर भी उस समय केवल नामकरण से शहर की भौतिक स्थितियों में ज्यादा सुधार नहीं हुआ। सभी मौसम वाली सड़कें नहीं थीं और लगभग सभी घर बांस-फूस से बने थे। बाढ़ एक आवर्ती समस्या थी और शहर की सड़कों के कुछ हिस्से शाम के बाद बाघों के घर बन जाते थे।

1853 में जब एक विनाशकारी आग ने शहर के बड़े हिस्से को जला दिया, तो निवासियों ने बेहतर आवास सुविधाओं के लिए सरकार से याचिका दायर की। सरकार ने स्थानीय आबादी की मांगों को स्वीकार करते हुए वर्तमान बांग्लादेश से ईंटों की खरीद शुरू की। गुवाहाटी में पहली जली हुई ईंट की फैक्ट्री दुर्गा सरोवर क्षेत्र में स्थापित की गई थी। इसके आसपास इटा पुरा पुखुरी नामक एक तालाब लंबे समय से मौजूद था।

1874 में वायसरॉय लॉर्ड नॉर्थब्रूक के सम्मान में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर सुकरेश्वर घाट पर नॉर्थब्रूक गेट बनाया गया था। किंग्स कॉलेज लंदन में चौपल की तर्ज पर डिजाइन किए गए इस आयताकार ढांचे में 12 मेहराब थे। यह ग्रेनाइट और चूना-पत्थर से बनाया गया था और डिजाइन में सरल था जबकि गेट के मेहराब में गॉथिक तत्व हैं, स्पियर्स भारतीय मंदिरों से प्रेरित हैं, जो इसे इंडो-गॉथिक वास्तुकला के बेहतरीन उदाहरणों में से एक बनाते हैं। अगले कुछ दशकों में प्रशासन ने सड़कों की स्थापना की। शहर के निवासियों के लिए पानी की सुविधा और स्ट्रीट लाइट का इंतजाम किया गया।

जालिम सिंह ने 1828 में शहर में पहला थोक जनरल स्टोर खोला। बिजुली सिनेमाघर सिनेमा को गुवाहाटी लेकर आया। शेख ब्रदर्स ने 1885 में अपनी बेकरी की स्थापना की और असम के दिग्गज नेता देशभक्त तरुण राम फुकन ने 20वीं सदी की शुरुआत में गुवाहाटी की पहली साइकिल खरीदी। जिस दिन फुकन को साइकिल मिली, दो टायरों पर इस अनूठी मशीन को देखने के लिए पूरा शहर उमड़ पड़ा। जैसे ही उन्होंने पैडल मारना शुरू किया, तालियों की गड़गड़ाहट हुई। फुकन संयोग से गुवाहाटी में कार रखने वाले पहले व्यक्ति भी थे।

1899 तक पहली बार गुवाहाटी की नगरपालिका सीमाओं का वर्णन किया गया था। गुवाहाटी की लंबाई-चौड़ाई उलुबारी, रेहाबारी, चांदमारी, राजगढ़, भंगागढ़, खारघुली, शांतिपुर और भूतनाथ से बनी है। 1901 तक यह 14,244 लोगों का शहर था, जो 4.5 वर्ग किमी के कुल क्षेत्रफल में निवास करता था।

आज, लगभग 120 साल बाद 15 लाख से अधिक की आबादी के साथ गुवाहाटी 216 वर्ग किमी में फैला हुआ है। गुवाहाटी अब देश के सबसे तेजी से बढ़ते शहरों में से एक है और केंद्र सरकार की एक्ट ईस्ट नीति के लिए एक खिड़की है। आधुनिक गति और विकास ने इस शहर का चेहरा पूरी तरह से बदल दिया है और इसे एक नए उभरते भारत का प्रतीक बना दिया है-बेचैन और ऊर्जावान। फिर भी, आसपास की पहाड़ियों और लाल नदी की गहराई में हजारों साल पुरानी कहानियां हैं।



लाचित बरफुकन एवं उनके परिवार के सदस्य

सूचना

'भारतीय रेल' पत्रिका में लेखक के नाम के साथ प्रकाशित हुए लेख (फोटोग्राफ के साथ) लेखक द्वारा उपलब्ध करवाए जाते हैं। भविष्य में लेख तथा फोटोग्राफ्स से संबंधित कॉपी राइट्स के उल्लंघन तथा अन्य किसी भी प्रकार के विवाद के लिए लेखक संपूर्ण रूप से जिम्मेदार होगा। रेल मंत्रालय या संपादकीय टीम किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगी। *- संपादक*

दो आँखें बारह हाथ

जिसकी सफलता से ज्यादा असफलता का डर था

श्री अजय कुमार शर्मा

दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित वी. शांताराम अपने समय के प्रतिष्ठित और लोकप्रिय निर्देशक रहे हैं। अपने मित्रों के साथ मिलकर बनाई 'प्रभात फिल्म कंपनी' के लिए उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण फिल्मों का निर्देशन किया। 1942 में 'प्रभात फिल्म कंपनी' छोड़ कर उन्होंने अपनी स्वयं की 'राजकमल कला मंदिर' नामक फिल्म निर्माण कंपनी बनाई और कई यादगार फिल्मों का निर्माण किया। फिल्म 'दो आंखें बारह हाथ' बनाने का खयाल उन्हें उस सच्ची घटना से आया जिसे उनको प्रख्यात मराठी लेखक और गीतकार जी. डी. माडगूलकर ने सुनाई थी। यह सत्य घटना औंध राज्य में घटित हुई थी। वहां के राजा ने एक आयरिश मनोवैज्ञानिक की सहायता से बस्ती से दूर एक सुनसान जगह में एक खुली जेल बनवाई थी। यहाँ न बैरक थे न पहरेदार थे। उस खुली जेल में कुछ खूनी और शातिर अपराधियों को रखकर सुधारने का प्रयास किया गया था। इस अनूठे प्रयोग के दौरान वहीं की एक ग्वालिन के कारण प्रयोग में बाधा पहुँचने की आशंका पैदा हो गई थी, परंतु उस राजा ने अपना यह प्रयोग सफलतापूर्वक पूरा करके ही दम लिया। इस सत्य घटना से शांताराम भी बहुत प्रभावित हुए थे। उन्हें लगा इस पर एक अनोखी और अच्छी फिल्म बनाई जा सकेगी, लेकिन जब शांताराम जी ने माडगूलकर जी से इस बारे में पूछा तो उनका दो टूक जवाब था कि यह कहानी बहुत छोटी-सी है। इस कहानी पर एक छोटी-सी किताब तो लिखी जा सकती है, फिल्म नहीं बन सकती। तब भी शांताराम जी ने माडगूलकर को इस घटना पर कथा-पटकथा तैयार करने को कह दिया। उस मुलाकात के चार महीने बाद माडगूलकर को 'राजकमल' आने का अवसर मिला। जब शांतारामजी ने पटकथा के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा ''अन्ना!, बहुत कोशिश करने पर भी मैं कैदियों की उस घटना पर पटकथा नहीं लिख सका। यह घटना बहुत ही छोटी है।'' लेकिन शांताराम जी ने तो मानो भीष्म प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे खुली जेल की इस कहानी पर जरूर फिल्म बनाएंगे।

रात को लेटते ही शांताराम फिर उसी कहानी के बारे में सोचने लगे। माडगूलकर सृजनशील लेखक हैं, फिर भी उस कहानी पर पटकथा नहीं लिख पा रहे, ऐसा क्यों? तभी उन्हें लगा, ऐसा शायद इसलिए हो रहा है कि कहानी को पटकथा और संवादों के साथ ही प्रभावशाली दृश्य संयोजन और निर्देशकीय प्रतिभा की भी जरूरत है। यह समझते ही बात बन गई और पूरी फिल्म का खाका तैयार हो गया। अगले दिन उन्होंने माडगुलकर को पुणे के पते पर तार देकर तुरंत आने के लिए कह दिया। तार पाने के दो दिन बाद माडगूलकर 'राजकमल' में हाजिर हुए। तब शांतारामजी ने उन्हें कथा की रूपरेखा , कुछ नए प्रसंग और कुछ नए पात्रों की रचना के बारे में विस्तारपूर्वक उन्हें सुनाकर उनकी राय मांगी तो उनके मुंह से निकल पड़ा ''वाह... अन्ना... बहुत सुंदर!''

''अब आप इस आधार पर पटकथा संवाद लिखकर जल्द ही दे दें'' शांताराम जी ने कहा। किसी भी नई फिल्म की कथा पटकथा तैयार हो जाने के बाद 'राजकमल' में काम करने वाले प्रमुख कलाकारों,





तकनीशियनों, सहायकों आदि को एक साथ बुलाकर स्क्रिप्ट का वाचन किया जाता था और उनकी निष्पक्ष राय मांगी जाती थी, लेकिन इस पटकथा वाचन के बाद किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। सब चुपचाप उठकर बाहर चले गए। ''अन्ना... कल जिस पटकथा का वाचन किया गया, उस पर आप फिल्म नहीं बनाएँ, ऐसा हम सभी चाहते हैं। यह पटकथा बहुत रूखी और नीरस है। हमारा अनुमान है कि फिल्म सुरंग की तरह यह फिल्म भी बॉक्स ऑफिस पर असफल होगी।'' 'राजकमल' के मैनेजर वासुनाना देसाई, अभिनेता उल्हास सहित सभी के ऐसे विचार थे।

अपने कर्मियों का यह स्पष्ट मत सुनकर भी शांताराम बापू ने बुरा नहीं माना। इस सलाह के पीछे कोई निजी स्वार्थ नहीं है, यह बात वे जानते थे। लेकिन औध के राजा द्वारा किया गया वह अनोखा प्रयोग और उसके माध्यम से दिए गए मानवता के संदेश से वे बहुत प्रभावित थे। उन्होंने फिल्म बनाने का पक्का निश्चय कर लिया था और अब उन्हें कोई पीछे नहीं हटा सकता था। उन्हें इस फिल्म की सफलता या असफलता की चिंता नहीं थी। कलर फिल्मों के समय में विषय की संवेदना को समझते हुए इसे ब्लैक एंड व्हाइट में बनाने का निर्णय भी काफी साहसिक था। एक जेलर, छह कैदी और ग्वालिन की जगह खिलौने बेचने वाली युवती को लेकर फिल्म बनानी शुरू की गई। खुली जेल की शूटिंग के लिए वी शांताराम ने कोल्हापुर से 10-12 किलोमीटर दूर कस्बा बावड़ा के रास्ते में एक उजड़ा मैदान चुना था। उस मैदान में खुली जेल और एक पुराने से बंगले का सेट लगाया गया था। यहां पूरे दो महीने तक शूटिंग चली। पोस्ट प्रोडक्शन के बाद फिल्म का प्रीमियर 27 सितंबर 1957 को बंबई के ऑपेरा हाउस में हुआ। किसी ने भी शांताराम जी को बधाई नहीं दी। समाचार पत्रों के समीक्षा कॉलमों ने भी फिल्म की प्रशंसा कम आलोचना ही अधिक की।

चलते-चलते

जब फिल्म प्रदर्शित हुई तब दर्शकों की खास प्रतिक्रिया नहीं मिली, लेकिन फिल्म का गंभीर विषय और सादगी ही धीरे-धीरे आकर्षण का कारण बन गई फिल्म की लोकप्रियता दिन-ब-दिन बढ़ती गई और यह फिल्म ऑपेरा हाउस थिएटर में 65 सप्ताह तक चली। उस समय के मुंबई के पुलिस आयुक्त श्री प्रभु सिंह ने सभी कर्मचारियों को सलाह दी थी कि कम से कम एक बार यह फिल्म अवश्य देखें। सुनते हैं, व्यावसायिक सफलता ही अर्जित नहीं की बल्कि अनेक महत्त्वपूर्ण पुरस्कार भी जीते। उस वर्ष का संस्कृत हिंदी फिल्म और सर्वश्रेष्ठ भारतीय दोनों ही राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। बर्लिन फिल्म महोत्सव में भी फिल्म को 'सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म' का पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। 1958 में अंतरराष्ट्रीय कैथोलिक ब्यूरो ने पोप के माध्यम से मानवता का संदेश देती फिल्मों के लिए एक विशेष पुरस्कार की घोषणा करवाई थी, जिसका पहला पुरस्कार इसी फिल्म को मिला। ख्याति प्राप्त अमेरिकी निर्देशक फ्रैंक कैप्रा ने इस फिल्म को एक एपिक फिल्म की संज्ञा दी थी।



आपको यह **अंक कैसा लगा**
हमें जरूर बताएं

ई-मेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें ▶ **संपादक,** भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001

अपना ज्ञान टटोलें

1 **राष्ट्रीय रेल संग्रहालय कहां स्थित है?**

(क) नई दिल्ली (ख) मुंबई (ग) जयपुर (घ) अहमदाबाद

2 **वर्तमान अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी रेलवे बोर्ड का नाम क्या है?**

(क) श्री विनोद कुमार यादव (ख) श्री संजय कुमार मोहंती (ग) श्री अश्विनी लोहानी (घ) श्री विनय कुमार त्रिपाठी

3 **अगर ट्रेन अनुसूचित प्रस्थान समय से 3 घंटे से ज्यादा देर से चल रही है तो यात्रा शुरू करने से पूर्व टिकट कैंसिल करवाने पर पूरा रिफंड मिल जाता है।**

(क) आधी रकम वापस होती है (ख) कथन झूठ है (ग) कथन सही है (घ) 30 प्रतिशत काटकर शेष रकम वापस होती है

4 **भारत की पहली विद्युत ट्रेन 1925 में विक्टोरिया टर्मिनस से ..... के लिए चली थी।**

(क) कुर्ला (ख) दादर (ग) परेल (घ) सीएसटी

5 **कोविड महामारी के दौरान भारतीय रेल द्वारा मेडिकल ऑक्सीजन ढोने वाली मालगाड़ी का नाम क्या था?**

(क) शताब्दी एक्सप्रेस (ख) एयर एक्सप्रेस (ग) राजधानी एक्सप्रेस (घ) आक्सीजन एक्सप्रेस

6 **आनंद विहार को पटना से जोड़ने वाली उस ट्रेन का नाम बताइए जो पूरी तरह से 3एसी इकोनॉमी कोच से युक्त है?**

(क) गोरखपुर–कोचूवेली एक्स. (ख) गति शक्ति एक्स. (ग) लोकमान्य तिलक एक्स. (ट.)–वाराणसी (घ) लोकमान्य तिलक (ट.)–फैजाबाद एक्स.

7 **भारत में सर्वाधिक ऊंचाई पर स्थित रेलवे स्टेशन का नाम क्या है?**

(क) वेगामाव रेलवे स्टेशन (ख) घूम (ग) वेरीनाग रेलवे स्टेशन (घ) शिमला रेलवे स्टेशन

8 **भारतीय रेल द्वारा हाल ही में किस गीत का नया स्वरूप लॉन्च किया गया?**

(क) मिले सुर मेरा तुम्हारा (ख) जन गण मन (ग) वन्दे मातरम (घ) ऐ मेरे वतन

9 **भारतीय रेल की उस महिला भारोत्तोलक खिलाड़ी का नाम बताइए, जिसने टोक्यो ओलंपिक 2020 में भारत के लिए रजत पदक जीता?**

(क) साक्षी मलिक (ख) विनेश फोगट (ग) मीराबाई चानू (घ) कमल प्रीत कौर

10 **पश्चिम रेलवे का मुख्यालय कहां स्थित है?**

(क) सीएसएमटी, मुंबई (ख) वडोदरा, गुजरात (ग) सूरत, गुजरात (घ) चर्चगेट, मुंबई

1. (ङ) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ङ) 5. (घ) 6. (ङ) 7. (घ) 8. (ङ) 9. (ग) 10. (घ)

सही उत्तर

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपना विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुंच बनाएं

विज्ञापन दरें

(विज्ञापन चार कलर में) नीचे दी गई दरों के साथ 5 प्रतिशत की जीएसटी/आइजीएसटी प्राप्य होगी

विवरण	विशेष दर (वार्षिक अंक) (₹)	सामान्य अंक (मासिक दरें)	
		सामान्य दरें (₹)	अनुबंधित दरें (₹)
बैक कवर	13,300	11,400	10,450
सेकेण्ड कवर	12,350	10,450	9,500
थर्ड कवर	11,400	9,500	8,550
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति, जैसे टेक्स्ट के बाद में)	9,500	8,550	7,600
पूरा पृष्ठ	8,550	7,600	6,650
आधा पृष्ठ	6,650	5,130	4,180
सेंटर स्प्रेड	17,000	15,000	13,300
सेंटर स्प्रेड (दो पेज इकट्ठे) (स्पेशल पोजीशन)	18,500	16,500	14,700

* तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथवा बारी-बारी देने पर अनुबंधित दरें लागू।

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार
28 X 20.5 सेमी

छपाई क्षेत्र
23 X 16.5 सेमी

भुगतान का माध्यम

'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली' के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा नकद राशि रूम नं. 310, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001 में जमा की जा सकती है

विज्ञापन सामग्री

ई-मेल, आर्टपुल, सीडी

पत्रिका का प्रसार

समग्र देश में

संपर्क करें :

व्यापार प्रबंधक
310, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,
टेलिफोन : 011-233822531, 23303665, 23304456

SMRT1

Single phase relay test system

Smart choice for railway relay testing





KEY FEATURES!

- 75Amps high current capacity for testing instantaneous trip elements and high current COMTRADE Playback applications
- With regulated output power and accuracy to test microprocessor and electro-mechanical relays
- 15Amps convertible voltage channel for testing current differential high slope characteristics
- Automated testing templates for a typical Railway testing applications
- Ability to string multiple units together with an Ethernet cable
- Manual (with STVI) and automated relay testing system

Scan QR
code to download E-catalogue or
contact us at +91 91671 90558 /
india.marketing@megger.com

Megger

FLUID CONTROLS®
ENGINEERING CONNECTIONS EVERYDAY



HIGH PERFORMANCE PRODUCTS. ON TIME. EVERY TIME.

IRIS® CERTIFIED





Fluid Controls Private Limited has over 45 years of experience in engineering connections for Rail & Metro brake piping assemblies. Certified for the International Railway Industry Standard (IRIS – ISO/TS 22163:2017), Aerospace AS9100 and ISO/IEC 17025:2017 for our laboratory, Fluid Controls offers comprehensive solutions – from design, engineering, testing and on-site installation services to the supply of high-performance connectors, isolating cocks, cleats and tube & hose assemblies.

WE HAVE
PERFORMANCE

45+ YEARS OF EXPERIENCE • IRIS & AS9100 CERTIFIED
IN-HOUSE R&D • OVER 30 MILLION CONNECTORS INSTALLED
APPROVED BY MAJOR ROLLING STOCK MANUFACTURERS

VISIT US AT INNOTRANS 2022 • BERLIN • HALL 10.2 • STALL 330

+91-22-68238000 railways@fluidcontrols.com fluidcontrols.com

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2021-22-2023
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित



TO DISCOVER OUR INNOVATION AT CORE DRIVEN BY
CONTINUOUS RESEARCH AND DESIGN EXCELLENCE,
THAT DELIVERS FUTURE READY PRODUCTS WITH ADVANCE TECHNOLOGY

VISIT US AT
InnoTrans 2022 BERLIN
HALL 22A - STAND 650



hyt
HYT ENGINEERING COMPANY PVT. LTD.
Economical Rolling Stock Maintenance

Sales Office: 17-18, Ground Floor, Hans Bhawan, Bahadur Shah Zafar Marg,
I.T.O., New Delhi - 110 002, India. Phone: + 91 11 4320 2200/01

Work: 29/10, 29/10/1, 29/10/2, D-II Block, MIDC, Chinchwad,
Pune - 411 019, India. Phone: + 91 20 6634 3900

www.hytengineering.com I info@hytengineering.com

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**